KRP-91

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ॐ

आनन्दामृतवर्षिणी ।

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजक स्वामी
आनन्दगिरिकृत ।

जिसमें

अतिसुगम अतिपवित्र अतिगुप्त सब विद्याधर्मोंमें
श्रेष्ठ प्रत्यक्षफलानुभाविक ब्रह्मतत्त्व वर्णितहै ।

जिसे

ब्रह्मनिष्ठोंके उपकारार्थ

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें
छापकर प्रकट किया ।

श्रावण संवत् १९५२.

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

श्रीः ।

आनन्दामृतवर्षिणीका-

सूचीपत्र ।



CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वेकादि और अधिकारादि चार अनुवन्ध ॥

१४ २३ जीवब्रह्मकी ऐक्यतामें छःप्रमाण प्रत्यक्षादि भेदउपासना कर्मवालों कूं समझना कि अहंब्रह्मास्मि इस महावाक्यार्थ कूं वेदों की आज्ञा से मानो वेद की आज्ञा में तकरारनहीं चाहिये ॥

२४ ९ वेदोंका तात्पर्य और परसिद्धान्त अध्यायकी समाप्तिपर्य्यन्त २५ के पृष्ठमें प्रथम अध्याय समाप्त हुआ ॥

द्वितीय अध्यायका संक्षेप ॥

२५ १२ मुक्तिके होनेमें कारण ॥

२६ ५ ब्रह्मका दोप्रकार का लक्षण तटस्थ स्वरूप ॥

२६ १३ तत्पदका दोप्रकार का अर्थ वाच्य लक्ष्य ॥

२६ १६ माया जड़ चैतन्य अज्ञान अविद्या प्रकृति ईश्वर जीव शुद्ध ब्रह्म सबल ब्रह्म इन शब्दों का निरूपण ॥

३० १ जिस प्रकार ईश्वर जगत्का कर्ता ॥

३२ ३ सूक्ष्म प्रपंच का निरूपण अर्थात् जैसे सूक्ष्म आकाशादि श्रोत्रादि ज्ञानेन्द्रिय वाक् आदि कर्मेन्द्रिय मन आदि प्राणादि की उत्पत्ति पंच कोश आवि-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जाग्रतआदिअवस्थाओंकालक्षण ॥

उपासना का प्रसंग ४९ पृष्ठ १४ पंक्ति तक अध्यारोप कहाजाता है ॥

शास्त्रयुक्त प्रत्यक्षकर तीनप्रकार का अपवाद ॥

तत्त्वंपदार्थोंकाशोधन ॥

तत्त्वं पदोंकी लक्षणा करके और सामान्याधिकरण्य विशेषण विशेष्य भाव लक्ष्य लक्षण भाव इन तीन सम्बन्ध करके जो एकता है उसका प्रसंग अध्याय की समाप्ति पर्य्यन्त है द्वितीय अध्याय तत्त्वमसि महावाक्यके अर्थमें है ६७ के पृष्ठ में यो अध्याय समाप्तहुआ ॥

तीसरे अध्यायका ६७ के पृष्ठमें प्रारम्भहुआ ७१ के पृष्ठमें समाप्त हुआ उसमें ज्ञान ज्ञानीके लक्षण निश्चय करनेमें ज्ञानी अज्ञानी का बहुत संवादहै और श्रेष्ठमध्यम

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कनिष्ठ भेद करके जीवन्मुक्तका लक्षण विदेह मुक्तिका लक्षण ज्ञान उपरति वैराग्य का हेतु आदि चार चार भेद करके फलके सहित लक्षण ज्ञानी ब्रह्मवित् का ब्रह्मविदादि भेद करके चार प्रकारका लक्षण है प्रथममुक्तिआदिका लक्षण लिखकर फिर ज्ञानकी सात भूमिका लिखकर फिर श्रुति स्मृति आदि प्रमाण पूर्वक और अनेक दृष्टान्त युक्ति शंका समाधान पूर्वक इस बात कूं सिद्ध किया है जो कनिष्ठ जीवन्मुक्त किसी हेतु से संपादन न होसके तो विदेह मुक्ति में सन्देह नहीं ॥

चौथेअध्याय का ७१ के पृष्ठमें प्रारम्भ हुआ ८२ के पृष्ठमेंसमाप्त हुआ उसमें अन्तरंग बहिरंग भेद करके बहुत ज्ञानके साधन लिखे हैं ॥

पांचवें अध्यायका ८३ के पृष्ठमें प्रारम्भ हुआ ९१ के पृष्ठमें समाप्त हुआ उसमें सतोगुण रजोगुण तमोगुण का लक्षण और यज्ञ तप सुखदान कर्मादिका सत्वादि भेदकरके तीन तीनप्रकार का भेद फलके सहित लिखाहै ॥

छठे अध्यायका ९१ के पृष्ठमें प्रारम्भ हुआ १०२ के पृष्ठमें समाप्त हुआ उसमें श्रुति स्मृति युक्ति दृष्टादि प्रमाण पूर्वक इसबातकूं सिद्ध किया है कि मुक्तिका साधन मुख्यज्ञान है कर्मादि परम्परा करके गौणहैं और

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जीव ब्रह्मकी एकता पूर्णतादि में बहुत वादी की शंकाहै सबका श्रुति स्मृति आदि प्रमाणपूर्वक समाधान किया है॥

सातवें अध्याय का १०२ के पृष्ठमें प्रारम्भहुआ ११४ के पृष्ठमें समाप्त हुआ उसमें जीवात्मा परमात्मा का लक्षण और जीव ब्रह्मकी ऐक्यता और ऐक्यता पूर्णता नित्य मुक्तादि सिद्धिमें बहुत दृष्टान्त है और जो जो वादीने शंकाकरी सबका श्रुति स्मृति आदि प्रमाणपूर्वक समाधान किया॥

आठवें अध्याय का ११४ के पृष्ठमें प्रारंभ हुआ १३३ के पृष्ठमें समाप्त हुआ उसमें अहं ब्रह्मास्मि इस अभ्यास करनेके साधन लिखे हैं और मुख्य तात्पर्य वेद शास्त्रों का किस मतमें है और क्या है और श्रुतियों का अविरोध और यो सब जो हम कहते हैं इसका भलेप्रकार शारीरक भाष्यमें निश्चय होसक्ताहै यो प्रसंग है और कर्म उपासनादि में जो मुख्य मुक्तिके साधन हैं उनका निश्चय और वेदान्त शास्त्रके मतसे मुक्ति संसार परमेश्वर जीवका जो लक्षण उसकूं दृष्टान्त इतिहास युक्ति श्रुति स्मृति आदि प्रमाण पूर्वक सिद्ध किया है और संसार मुक्ति परमेश्वर जीवका नैयायक सांख्य पूर्वक मीमांसा शास्त्रवाले औरभी बौद्धादि जैसा जैसा कहते हैं उनका मत भी किंचित संक्षेप करके लिखा है॥

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

नवें अध्यायका १३४ के पृष्ठमें प्रारम्भ हुआ १४१ के पृष्ठमें समाप्त हुआ उसमें अज्ञान का लक्षण और अज्ञान का कारण जो आसुरी सम्पत् के अवगुण उनका वर्णन और काम क्रोधादि कूं ज्ञानकी सिद्धिके लिये और पीछे ज्ञानके जीवन्मुक्ति की सिद्धिके लिये त्यागना चाहिये इस बातमें गुरु शिष्यका सम्वादहै ॥

दशवें अध्यायका १४१ के पृष्ठमें प्रारम्भ हुआ १६० के पृष्ठमें समाप्त हुआ उसमें जीवन्मुक्तिके पांच प्रयोजन और अन्तष्करणके निरोध का प्रकार और जीवन्मुक्ति के साधन लिखेहैं फिर श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराजजीकी कृपासे आनन्दामृतवर्षिणी समाप्तहै ॥



CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

आनन्दाऽमृतवर्षिणी ।

मूल ॥

श्रीसच्चिदानन्दस्वरूप जो इन्दिरेश्वर ।

टी०—श्री लक्ष्मी और शोभा और माया कूं कहते हैं तीनों करके अर्थ लगताहै सच्चिदानन्द लक्ष्मीपति शोभावान् मायाके स्वामी माया करके युक्त परंतु विशेष योंहै सच्चिदानन्द माया के स्वामी सच्चिदानन्द में तीन पद हैं सत चित् आनन्द अब यों देखना चाहिये कि तीनपद क्यों कहे इसका यों कारणहै जो केवल सत् कहते तो न्याय शास्त्रवाले आकाशकूंभी सत्कहतेहैं सो वह जड़ है इसलिये चित्भी कहा वह दुःखरूप वा आनन्द रूप है इसलिये आनन्द भी कहा और सत्ता दो प्रकार की है व्यावहारिकी पारमार्थिकी व्यावहारिक सत्ता वहहै जो देहादिमें है औरपारमार्थिकी सत्ता जो सच्चिदानन्द ब्रह्ममें है इस जगह पारमार्थिकी सत्तासे प्रयोजनहै इसीप्रकार चैतन्यता आनन्दता भी व्यावहारिकी, पारमार्थिकी भेदसे दो प्रकारकी है ॥

मू०—इन्दीवर इन्द्र मणी की सदृश जो सुन्दर रमा करके लालितहै पादपंकज जिन्हों के ऐसे जो ॥

टी०—इन्दीवर इन्द्रमणी दो विशेषण देनेका यह प्रयोजन है भक्तोंके लिये तो इन्दीवरकी सदृश कोमल और दुष्टोंके लिये इन्द्रमणीकी सदृश कठिन है ॥

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मू०-रामेश्वर और वन्दीकियेहैं इन्द्रके रिपोंके वृन्द जिन्होंने ऐसे जो सुरेश्वर और आनन्द है वीर्य्य जिन्हों का ऐसे जो परमेश्वर और मन्द मुसुकान करके आनन्द-कियेहैं लोकोंकेवृन्द जिन्होंने ऐसे जो नन्दजीके नन्दन और आत्मरूप करके चिंतवन करतेहैं जिन्होंकूं सनत्कुमार, सनातन, सनक, सनन्दन और चंद्रवंश में भक्तोंके लिये अवतारहै जिन्होंका ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र वसुदेवजीके नन्दन उन्होंको मैं वन्दन करताहूं हे अमरवर आपके गुणोंके अन्तका नहीं जाननेवाला ॥

टी०-परमेश्वरके गुण दो प्रकारके हैं प्रथम में दो भेद हैं ऐसे जैसे अज अव्यक्त अद्वैत अमरादि जो निषेध करके कहेजाते हैं दूसरे सत् चित् आनन्दादि जो प्रतिपादन करके कहेजाते हैं और दूसरेराम कृष्णादि सगुण ब्रह्मके गुण श्याम शान्ताकार करुणाकर भक्तवत्सलादि ॥

मू०-जो नर उसकी स्तुति जो आपके सदृश न हो तौ क्या आश्चर्य है क्योंकि ब्रह्मादिकी भी स्तुति आपके सदृश नहीं है और जो यों कहो यथामति स्तुति करने वाले सब निर्दोष हैं तो हेदीनार्त्तिहर। मेरा जो इस आनन्दामृतवृर्षिणीके लिखने में जो परिकर सोभी निर्दोष है हे भगवन् आपकी महिमा मन वाणीका तो विषय नहीं है और वेदभी अतद्व्यावृत्ति करके चकित हुये आपकी महिमा कूं कहते हैं सो ॥

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

टी०-अतद्व्यावृत्तिका अर्थ यों है कहेकूं आवृत्तिविशेष कहे कूं व्यावृत्ति औ अतत्के वारम्वार कहेकूं अतद्व्यावृत्ति कहतेहैं अतत्का अर्थ योंहै नहीं है तत्सो नहींहै तत ब्रह्मकूं कहते हैं तात्पर्य्य यों है श्रुतिने कहकह कर जो निषेध कियाहै सो नहीं है इसीकूं अतद्व्यावृत्ति कहते हैं शास्त्र की रीतिसे अतत् का अतद्बोला जाताहै॥

मू०-महिमा किसके स्तुति करने योग्य है और आपके कितने गुणहैं यों कौन कहसकै फिर आप किसका विषय हो सक्ते हैं परन्तु अर्वाचीन पदके अर्थात् अवर पदकें॥

टी०-जिस करके जाना जावे उसको पद कहते हैं ब्रह्मके दो पद हैं एक अवर अर्थात् उरला लगुणा दूसरा पर अर्थात् परला निर्गुण॥

मू०-विषयमें किसका मन नहीं लगताहै और किसकी वाणी यों नहीं चाहतीहै कि परमेश्वर का कीर्तन करना चाहिये परन्तु विना आत्महत्यारे के संसारमें तीन प्रकारके पुरुषहैं युक्त १ मुक्तिकी इच्छा वाले २ विषयी ३ मुक्त तो शुक सनकादि ज्ञानी जन सदा आपके गुणोंका कीर्तन करते रहते हैं मुक्तजन ब्रह्मानन्दकूं अनुभव करते हुये स्मरण करते हैं कि यों ब्रह्मानन्द परमेश्वर की कृपाहै और मुक्तिकी इच्छावालोंकूं संसार रूप रोगकी योंहीं परमेश्वर का कीर्तन करना परमऔषधि है २ और विषयी जनोंकूं आपके चरित्र विहारादि परमप्रिय लगतेहैं

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हे भक्तप्रिय बृहस्पति आदिकी जो स्तुति क्या आप कूं आश्चर्य्यहै तात्पर्य्य कुछ आश्चर्य नहीं है क्योंकि समस्त परम अमृतरूप मधुर कोमल २ वाणी सब आपही-की कहानीहैं और जो यों कही फिर तुम्हारी वाणी क्या आश्चर्य होगी हेपरमेश्वर मेरी बुद्धिमें तो यों अर्थ निश्चय कियाहै अपनी वाणीकूं आपके गुणोंका कथन करके पवित्र करताहूं प्रार्थना यों है हे कृष्णचन्द्र मेरी यों बालक-कीसी हठ जानकर आपने सर्वप्रकार क्षमाकरनी ग्रन्थके आदि मध्य अन्तमें निर्विघ्न समाप्तिके लिये और आस्तिकमार्ग प्रवृत्तिके लिये शिष्टाचारानुमित्त और श्रुति-बोधित जो तीन प्रकारका मंगल नमस्कार आशीर्वाद वस्तुनिर्देश होताहै सो यहांतक मंगलाचरण है॥

विद्वान्जनोंसे प्रार्थना यों है जो यो मेरी भाषामें लि-खाहै जो श्रुति स्मृति वेदान्त शास्त्रसे विरुद्ध हो तो अंगीकार नहीं करना और जो किसीजगह प्रकरणसंगति पुनरुक्ति आदि दोष प्रतीत होतेहों तो बनादेने और जो यों भाषा अच्छी न होवे और तात्पर्य्य वक्ताका भलेप्रकार न प्रतीत होता हो तो जैसी विद्वान् पसन्द करें वैसीही लिखदेनी और परमेश्वरके स्वरूपका जो इसके विचार-में चिंतवन करनेमें आता है इस गुण करके अंगीकार करना योग्यहै कुछ वाणीकी चतुराई तो इस में है नहीं और जो कहीं बुद्धिके भ्रमसे अन्यथा लिखागया हो

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उसको बना देना तात्पर्य सबप्रकार आपनेभी क्षमा करनी योग्यहै मेरे अभिप्रायकूं विचारना चाहिये वक्ताका इसके लिखने में क्या अभिप्राय है सो सुनो मैंही लिखेदेताहूं श्रीकृष्णचन्द्रने गीताशास्त्र में कहाहै इस गीता शास्त्रकूं जो मेरे भक्तोंकूं धारण करावेगा तो मेरे विषय परमभक्ति करके मुझकूं प्राप्त होवेगा और स्वामी विद्यारण्यभारतीतीर्थजीने पञ्चदशी में कहा है किसी उपाय करके ब्रह्मका सदा चिन्तवन करना जो एकान्तमें बैठना तो ब्रह्महीका चिन्तवन करना और जो दूसरेसे परस्पर बात करनी तो ब्रह्महीकी करनी और जो किसीकू कथन करना तो ब्रह्महीका करना यों जो एकपर होनाहै इसीकूं विद्वान् ब्रह्माऽभ्यास कहतेहैं सो मुझकूं यो उपाय ब्रह्मके चिन्तवन करने का अच्छा प्रतीत होताहै ॥

मू०—पञ्चदशी वेदान्तसार तत्वानुसन्धान श्रीभगवद्गीता टीका सहित और आत्म बोधादि पोथी समीप रखकर जितनी मेरी बुद्धि थी उन्होंकूं विचार जो सीधा खुलासा अर्थ बालकों की समझमें आवे ओ अर्थ आनन्दामृतवर्षिणीमें लिखाहै बुद्धिमान से इस आनन्दामृतवर्षिणी कूं एक बेर श्रद्धा भक्ति करके और चित्तकूं एकाग्र करके कुतर्कके विना सद्गुरुसे जैसे गुरु वेदगीतामें लिखे हैं तात्पर्य वेदशास्त्रके तात्पर्य्यकूं जानने वाले और ब्रह्मनिष्ठ उन्होंसे सुनना योग्य है जो केवल वेद शास्त्रार्थ

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

के जानने वाले हैं और ब्रह्मनिष्ठ नहीं वे विज्ञान अनुभव नहीं कहसकेंगे और जो केवल ब्रह्मनिष्ठ हैं वे युक्ति दृष्टांत शंका समाधान पूर्वक नहीं कहसकेंगे इसलिये वेद शास्त्रार्थके जाननेवाले और ब्रह्मनिष्ठ गुरोंसे सुनना योग्य है जो इस में अनुष्ठान कहाहै उसकूं सुननेवालेकी इच्छा हो करो वा मतकरो तात्पर्य्य यह है जो सुनेगा तो अपने आनन्दके लिये आपही अनुष्ठान करेगा दृष्टांत कहतेहैं एक राजाथा कभी पण्डितों कूं कुछ न देताथा न कभी कथा सुनताथा किसी विद्वान्ने सब पण्डितोंसे कहा कि तुम राजासे कहो हे राजन् आप हमारी कथा सुनो धनदो वा न दो पण्डितों ने कहा महाराज वृथा अनधिकारी से कौन माथा मारे प्रयोजनके विना तो मन्दभी नहीं प्रवर्त होताहै विद्वान्ने उन्होंकूं दृष्टान्त दिया जो केलीगेहकी देहलीमें तरुण स्त्री दूध पीहुई किसी प्रकार प्राप्त होजावो फिर मैथुनकी इच्छा करो वा मतकरो अब दृष्टान्त और दार्ष्टान्त विचारो क्या वो राजा पाषाड है जो पण्डितोंकी कथा सुनकर मुक्तिके लिये धर्म दानादि नहीं करेगा और क्या वो स्त्री पत्थर है कि उसकूं ऐसी जगे अपने आनन्दके लिये कामका आविर्भाव नहीं होगा ऐसेही क्या इस ग्रंथका सुननेवाला पाषाण है जो निरतिशय आनन्दके लिये अनुष्ठान न करैगा

टी०—जिसके सिवाय और किसीजगह ब्रह्मलोकादि में आनन्द नहीं ॥

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मू०–जो अर्थ इस आनन्दामृतवर्षिणी में लिखना है उस की संगतिके लिये जहां यों लिखेंगे प्रथम ज्ञानके चार साधन हैं यहां तक उपोद्घात कथाहै सो सुनो ॥

टी०–वाञ्छित अर्थकूं मनमें रखकर प्रथम और प्रसंग कहना ॥

मू०–जो एक चैतन्य महानंद शुद्धब्रह्म नित्यमुक्त सो मायोपहित हुआ ईश्वर १ और वोही चैतन्य समष्टि सूक्ष्म उपाधि करके उपहित हिरण्यगर्भ २ और वोही चैतन्य समष्टि स्थूल उपाधि करके उपहित विराट् ३ इन तीन भावोंकूं प्राप्त होता भया और ओही चैतन्य अविद्योपहितहुआ प्राज्ञ १ और व्यष्टि सूक्ष्म उपाधि करके उपहित तैजस २ और व्यष्टि स्थूल उपाधि करके उपहित विश्व ३ इन तीन भावोंकूं नाना प्रकार का जीव होता भया फिर ईश्वरजीवोंके धर्म अर्थ काम मोक्ष के लिये सृष्टि स्थिति संहार कूं करते भये धर्मादि में मोक्ष मुख्यहै और तीनि धर्मादि गौणहैं और धर्मादि तीनके दो दो फलहैं मुख्य फल परम्परा करके तीनोंका मोक्षहै और स्वर्गादि गौणहैं धर्मकामुख्य फल मोक्षहै और स्वर्गादि गौणहैं स्वर्गादि फल जो वेदोंमें कहे हैं वे ऐसेहैं जैसे बालककी शोभाके लिये कानछेदन कराना और मोदकादि को फल कथन करदेना अभिप्राय तो उन्होंका जो है सोहै श्रुतिमाताके सदृश हित ॥

टी०–परिणाम अन्तमें सुखहो जिसके ॥

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मू०—चाहनी वालीहै जैसे किसीका पुत्र रस्ते की मृत्तिका खायाकरताथा उसकी माताने उसकूं बहुत बरजा उसने न माना हारकर माताने कहा हे पुत्र यों गंगाजीकी मृत्तिका खायाकर बहुत सुन्दरहै विचारो माताका अभिप्राय गंगाजीके मृत्तिकाके खिलाने में नहीं है रस्तेकी मृत्तिका के वर्जने में उसका अभिप्राय है ऐसेही योमूर्खजीव रस्तेकी मृत्तिका की नाईं शब्दादि विषयोंकूं इष्ट जानताहै श्रुतिने यों समझा इन विषयोंसेतो स्वर्गादिअच्छे हैं तात्पर्य्यतो श्रुतिका मुक्तिमें है इसीहेतुसे मोक्ष मुख्यहै और उपासना इसलिये है किसीका पुत्र जगह जगह वृथा फिरता था समेसिर नहीं हाथ आताथा उसके पिताने विचार कर पुत्रसे कहा कि तू इस मकानपर बैठारहाकर कुछ उसकूं लालचदेदिया तात्पर्य्य जब काम पड़ैगा यहांसेबुलालूंगा वैसेही यो मन कहीं यज्ञ दानादिके फल स्वर्गादि में कही शब्दादि विषयों में मृग तृष्णावत् भूला भागाभागा फिरताथा कभीश्रम नहींहोता था जो आत्मस्वरूपका विचार करे इसीलये श्रुतिमें एकाग्र चित्तके लिये उपासना कही है विचारदेखो एकाग्रचित्तके विना श्रवण मनन निदध्यासन ये जो मुख्य साधन मुक्तिके हैं सो नहीं होसक्तेहैं १ इसीप्रकार अर्थजो अशरफी रुपयादि करके जगत्में प्रसिद्धहोना और जगत्के सुख सम्पादन करने गौणहैं और रुपयादि खर्चकरके धर्म करना

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कथा श्रवण करना सन्तोंका संग करना तीर्थों का सेवन करना मुख्यफल उन्हों का भी परम्पराकरके मोक्षहै २ ऐसेही काम अपने सुखके लिये खाना पीना और आनन्दके लिये स्त्रीका संग और स्थान वस्त्रादिमें जो सुख बुद्धि सो गौण और भोजनादि वास्ते धर्मके और श्रवणादि के लिये शरीरकी रक्षाकरनी और स्त्रीकासंग वास्तेपुत्रकी उत्पत्तिके वोभी किसी अंशमें मुक्तिका हेतुहै इसका भी परम्परा करके मुख्य फल मोक्ष है ३ तात्पर्य्य संसारमें पुरुषार्थ मुख्य मोक्षहै वे जो अविद्योपहित जीव उन्होंमें से श्रुति स्मृति जो परमेश्वर की आज्ञा है उन्होंकूं जो करते भये उन्होंकी उपासनाके लिये जैसी उन्होंकूं मूर्त्ति परमेश्वरकी वांछित हुई वेही मायोपहित ईश्वर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य्य, शक्ति, गणेशादि मूर्त्ति कूं धारण करते भये सो मूर्त्ति कैलास वैकुण्ठादिमें और भक्तोंके हृदयमें सदा वासकरती रहती हैं वे जो विष्णु भगवान् हैं सो भक्तोंके उद्धारके लिये जो ऐसे भक्तहैं कि सदा जो परमेश्वरकी आज्ञा उसकूं करके शुद्ध किया है अन्तःकरण जिन्होंने और शम दमादि साधनों करके युक्त मोक्षकी इच्छावाले परन्तु वहुत गंभीर जो ऋग्, यजु, साम, अथर्वण वेद उनके विचारने में असमर्थ और विना विचार के ज्ञान नहींहोता है जैसे पदार्थका भानुविना प्रकाशके इसलिये उनकूं ब्रह्मतत्त्व विचारनेके लिये श्रीकृष्णचन्द्र

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अवतार लेकर चारों वेदों का अर्थ जो कि मुख्य मोक्षका साधन है अर्जुनके निमित्त करके गीताशास्त्र रचते भये और वेही विष्णु व्यासदेव अवतार लेकर भागवतादि पुराण भारतादि इतिहास रचते भये जिन्होंमें कर्म उपासना ज्ञान तीनों हैं प्रसंगसे गीताकूंभी महाभारतकें बीचमें लिखा और जो वेदान्त वेदोंका सिद्धान्त जिसकूं वेदोंका मस्तक कहते हैं उस सिद्धान्तकूं फिर सूत्रोंमें कथन करते भये तात्पर्य्य कई कई श्रुतियोंका अर्थ एक एक सूत्रमें संक्षेप करके कहा वे जो सूत्र और गीता शास्त्र उनका जो अर्थ सोभी बहुत गम्भीर और परमेश्वरका अभिप्राय परमेश्वर जाने या जिसपर उनकी कृपाहो वो जानै पीछे उनके कलियुगके जीवनने हठ करके पण्डिताईके बलसे अपने अपने मतमें व्याससूत्र और गीताजीका अर्थ बनालिया जो अभिप्राय श्रीकृष्णचन्द्र और व्यासदेव जीकाथा वह सिद्ध न हुआ ज्ञानकाण्ड जो साक्षात् मुक्तिका हेतुथा लोप होगया तब सब देवता विष्णु ब्रह्मादि जुरकर श्रीमहादेवजीके पास गये सारी व्यवस्था कही महादेव जीने कहा हम वेदमार्ग की प्रवृत्तिके लिये अवतार लेंगे आपभी सब ब्रह्मा इन्द्रादि अवतारलो फेर महादेवजी महाराज तो श्रीशंकराचार्य्य नाम करके और विष्णुजी सनन्दन नाम करके और ब्रह्माजी मण्डनमिश्र नाम करके सरस्वतीजीके सहित और इन्द्र सुधन्वा रा-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जा नाम करके तात्पर्य इसी प्रकार बहुत देवता अवतार लेतेभये क्योंकि जब ज्ञानकाण्ड का लोप होताहै तब महादेवजी अवतार लिया करते हैं और सब मतवालों से शास्त्रार्थ करके सबझूठे मतोंका खण्डन करके जो सार सिद्धान्तवेद भगवान्का है उसकूं स्थापन किया करते हैं राजाका अवतार इसलिये हुआ जो शास्त्रार्थमें झूंठी कुतर्क और हठ करेगा और शास्त्रार्थ होकर उसका मत खण्डन होजावे फिर दुराग्रहसे न माने अथवा बहुत जुरकर सामना करें तो राजा उनकूं दंडदेंगे पीछे अवतार कूं ८। ६ वर्षकी अवस्थामें श्रीशंकराचार्य्य जीने संन्यास लेकर १६वर्षकी अवस्थामें १६ भाष्यरचे १० उपनिषदूपर ११ भाष्य व्यास सूत्रोंपर एक शारीरक भाष्य विष्णुसहस्रनामभाष्य गीता सनत सुजात भाष्य नृसिंहतापिनी भाष्य तात्पर्य उपनिषदू गीतादिका अर्थ भलेप्रकार श्रुति स्मृति युक्तिदृष्टान्त प्रमाण देदेकर सिद्धकिया और जो गीता भाष्यादिके विचारनेमें असमर्थ देखे उनकेलिये आत्मबोधादि छोटे छोटे प्रकरणोंमें वोही अर्थ संक्षेपकर लिखतेभये फिर सब वादियोंकूं शस्त्रार्थमें जयकरके दिग्विजय करतेभये जो बेदोंका सार सिद्धान्तथा उसकूं प्रकट प्रचार करतेभये ऐसा ऐसा शास्त्रार्थ हुआ चालीस दिनतक मण्डन मिश्रसे चरचा रही मण्डन मिश्रकी स्त्री सरस्वतीजीका अवतार साक्षी थी उसने

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पुष्पों की माल दोनोंके गलेमें डाल दीथी कहदिया था जिसकी माला सूखेगी वोही हारेगा चालीस दिनके पीछे मण्डनमिश्रकी माला सूखगई इसीप्रकार बहुत जगह शास्त्रार्थ हुवा और चारों दिशा में महाराज गये उनके अवतक ज्यो यशीआदि मठ चारोंदिशा में विद्यमान हैं और कपाली आदिने जो सामना किया वे कुछ महाराजने मंत्रों से मारे कुछ राजाने मारे विस्तार इस कथा का तीन दिग्विजय ग्रन्थ हैं उनमें बहुत है तात्पर्य्य यों है जो अच्छे बुद्धिमान हैं उनके लिये तो शारीरक भाष्यादि बडे २ ग्रन्थ रचे और जो मन्दबुद्धि हैं उनके लिये आत्म बोधादिं छोटे छोटे प्रकरण रचकर ३२ वर्षकी अवस्थामें महाराज तो कैलास कूं जाते भये फिर जो पद्म पदादि महाराजके मुख्य शिष्यथे उन्होंनेभी बहुतग्रन्थ रचे स्वामी आनन्द गिरिजीने तो सब भाष्यादि ग्रन्थों पर टीका करी और सुरेश्वराचार्य्य महाराजने वार्तिक बनाया पीछे उनके-स्वामी शंकरानन्दभगवान और विद्यारण्यादि जीने आत्मपुराण और पंचदशी वेदान्तसारादि बहुत सहस्राणि ग्रन्थ रचे वे ग्रंथ अबतक तो परमेश्वरकी कृपासे सूर्यवत् इस लोकमें प्रकाश रहेहैं ॥

अब इससमयमें ऐसे जो परमेश्वर के भक्त कि जिनकी-गुरू परमेश्वर में श्रद्धा भक्ति और उनकी यथाशक्ति आज्ञा करनी परन्तु आत्मबोधादि प्रकरणोंके विचारने

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

में भी असमर्थ उनकूं सुखपूर्वक ब्रह्मतत्त्व विचारने के लिये और मुख्य मुंशी वंशीधर जी कायस्थ भटनागर रहनेवाले श्री गंगा यमुनाजी के मध्यमें इंद्रप्रस्थसे २२ कोश पूर्व दिशामें श्री कन्दरापुरीप्रसिद्ध सिकन्दराबादके लिये कैसेहैं वे मुन्शीसाहब कि जिन्हों रूप लक्षी विद्यातेजहुक्म और साम दाम क्षमा औदार्यादि बहुत गुणकरके युक्त पतिव्रता स्त्री फिर यो आश्चर्य कि ऐसे समयमें सत्संगी परमेश्वरमें भक्ति गंभरिादि गुण करके युक्त तात्पर्य्य ऐसे सज्जन बुद्धिमान् इस समय में होने कठिनहैं जिनकूं व्यवहारमें राज और परमार्थ में विद्वान सराहना करतेहैं उन्हों की श्रद्धा भक्ति पूर्वक प्रार्थनासे उन्होंके उपवन अन्तर्गत मकान कोठीमें ठहरकर और श्रीस्वामी आत्मागिरिजी महाराज रहनेवाले प्रथम गुजरातके जिनकूं वेदान्त शास्त्रका अर्थकरामलकवत्है उनकी सहायसे श्रीमत्परमहंसपरिब्राज स्वामी मलूकगिरिजी महाराजका अनुचर शिष्य स्वामजिकि चरण कमलोंका पूजनेवाला मैं आनंदागिरि इस आनंदाऽमृतवर्षिणीका बनानेवालास्वामीजी और श्रीकृष्णचन्द्र महाराजकी कृपासेआत्मबोधादि छोटे छोटे प्रकारणोंमें जो मैंने अर्थ सुनाहै उसमेंसे भी स्वल्प यथा माति और श्रीमद्गीताकाभी अर्थ किसी किसी जगह इसआनंदामृतवर्षिणी में लिखूंगा ॥

प्रथम ज्ञान के मुख्य चार साधन हैं उनकूं लिखतेहैं ॥

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

विवेक १ वैराग्य २ शमादि षट्क सम्पत्तिः ३ मुमुक्षुता ४ अर्थ इनका योंहै ॥

इस संसारमें नित्य अनित्य क्याहै और विचार करते करते यो निश्चय करना कि आत्मा नित्य और आत्मासे पृथक् सब अनित्यहै १ यहांके देखे सुने जो पदार्थ स्त्री चन्दनमालादि परलोक के जो सुने अमृत नन्दनवन देवांगनादि सबकू अनित्य दुःखदायी जानकर मनकी इच्छापूर्वक सबकूं त्यागदेना फिर उनमें दनिता न होनी ब्रह्मलोककूं तृणवत् जानना २ तीसरेमें ६ भेद हैं शम १ दम २ उपरति ३ तितिक्षा ४ श्रद्धा ५ समाधान ६ इनका अर्थ याहै मन आदि अन्तःकरणकी संकल्पादि वृत्तियोंकूं रोकना वेदान्तशास्त्रके श्रवण मनन निदिध्यासनके विना १ श्रोत्रादि इन्द्रियों कूं शब्दादि विषयों से रोकना देह यात्रा और श्रवणादिके विना २ यम नियमादि साधनोंसे अन्तःकरण कूं निरोध करके ॥

टी०—अहिंसा १ चोरी न करनी २ सत्य बोलना ३ ब्रह्मचर्य्य ४ अपरिग्रह अर्थात् शरिर यात्रासे सिवाय संग्रह न करना ५ इन पांचका नाम यमहै ॥

और शौच १ संतोष २ तप ३ स्वाध्याय अर्थात् प्रणव काजप ४ ईश्वर प्रणिधान अर्थात् परमेश्वरमें भक्ति ५ इन पांचका नाम नियम है ॥

मू०—सब लौकिक वैदिक कर्मों से उपराम होना ब्रह्म-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तत्त्व विचारने के लिये देहयात्रामात्र क्रिया करनी और जाग्रत्अवस्था सुषुप्तिवत् रहनी इसी का नाम उपरती है ३ श्रवणादि में जो जो दुःख सुख पड़े सबकूं सहजाना ४ जो वेदान्त शास्त्र और गुरु ज्ञानके देनेवाले कहतेहैं उन्हों में विश्वास करना कि इसी प्रकारहै ५ श्रवणादि के समय भले प्रकार चित्तकूं समाधान करना ६ तीसरे साधन के भेद होचुके चौथे साधनका यों अर्थ है मुक्तिको मुख्य पुरुषार्थ समझकर मुक्ति की नित्य इच्छा रखनी ॥

मुक्ति के ये चार साधन मुख्यहैं और सब साधनोंका इनहीमें अन्तरभावहै जोइनका भलेप्रकार अनुष्ठान करे तो और किसी साधनकी अपेक्षा नहींहै सब साधनोंका यों तत्त्वहै ॥

ग्रंथमें जो चार अनुबन्ध होतेहैं उनकूं लिखतेहैं ॥

अधिकारी १ विषय २ सम्बन्ध ३ प्रयोजन ४ इनहीं-चार साधनों करके जो सम्पन्नहो सो इस ग्रंथके पढ़ने सुनने-का अधिकारी १ जीवन ब्रह्मकी एकता इसमें विषयहै २ यो ग्रंथबोधक और ग्रंथबोध्य इन दोनोंका बोध बोध्यक भाव इसमें सम्बंधहै ३ सब शोक दुःखों की निवृत्तिऔर परमानन्दकी प्राप्ति जिसकूं मोक्ष कहतेहैं यों इसका प्रयो-जन है ४ इसमें दृष्टांत योंहै जैसे रसोईमें अन्नका भूखा तो अधिकारी १ और जो अन्नमें मधुरादि स्वादहैं सो विषय२

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

और अन्न बरतनादि का संयोग सम्बन्ध ३ भूखका दूर हो जाना प्रयोजन ४ जो कोई कहै तुमब्रह्म २ कहतेहो दिखाओ आपका ब्रह्म कहां और कैसाहै जैसे नास्तिक केवल प्रत्यक्षप्रमाणमानताहै जो बात मूर्खता कीहै सोई सुनो जैसे किसी वस्तुके सद्भावमें एक प्रत्यक्ष प्रमाणहै ऐसे और भी अनुमानादि प्रमाणहैं प्रथमतो प्रत्यक्ष प्रमाण दोप्रकारकाहै बाहर १ भीतर २ बाहर ज्ञानेन्द्रियों करके-शब्दादि विषयों का और पंचभूतोंका ज्ञान होताहै परंतु नेत्रकरके तो रूपका और पृथ्वी जल तेजकाही ज्ञान होता-है और रूपके विना शब्दादि चार विषयोंका और वायु आकाश का नेत्रसे ज्ञान नहीं होता है १ और भीतर दुःख सुख भूख शोकादि का ज्ञान अन्तःकरण करके हो-ता है और सुषुप्ति में जो अज्ञान उसका ज्ञान साक्षी चै-तन्य करके होताहै उस पूर्व पक्षी से बूझना चाहिये कि दुःख सुखादि जिसकूं होतेहैं क्या वो नेत्रसे दिखासक्ताहै और जो कहेकि दुःखादि कूं नेत्रसे कौन दिखा सके तो हम कहते हैं ब्रह्मकूं नेत्रसे कौन दिखासके और श्रीकृष्ण-चन्द्रादि जो मूर्ति हैं वे मायामय मूर्ति हैं क्योंकि जो वेद शास्त्रों का सिद्धांत है कि जोदृश्यहै सो अनित्यहै (गोगोचर जहँ लगि मन जाई । सो सब माया जानो भाई) जो उन मूर्तियों कूं कोई परमार्थसे सच्ची कहे तो वे मूर्ति अनित्त्य हैं परमेश्वर कूं वेद शास्त्र

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

नित्य कहतेहैं तात्पर्य्य परमेश्वर वास्तव अमूर्त हैं जैसे दुःखादि अन्तःकरण करके जानेजातेहैं सूक्ष्मदर्शीपुरुषों-कूं सूक्ष्मबुद्धि करके अन्तर्मुख वृत्ति करके और प्रत्य-क्षादि प्रमाण करके प्रमेय चैतन्यका अपरोक्ष होसक्ता है वेदान्त शास्त्रमें ६ प्रमाणहैं प्रत्यक्ष १ अनुमान २ उपमान ३ शाब्द ४ अर्थापत्ति ५ अनुपलब्धि ६ इनका अर्थ भाषा-में भले प्रकार लिखनेसे बहुत विस्तार होता है इसलिये नाममात्र रस्ता दिखाते हैं प्रत्यक्ष का अर्थ तो पीछे लिखा-गया अनुमान से इस प्रकार ॥

टी०--अनुमान के पांच अंगहैं पक्ष १ साध्य २ हेतु ३ व्याप्ति ४ दृष्टांत ५ इसलिये पांच बायवी अनुमान कहा जाता है जैसे पक्ष १ कियोपर्बत-साध्य २ अग्निवालाहेतु ३ धूमहोनेसे--व्याप्ति ४ जहां जहां धूम होताहै वहां निश्चय अग्निहोती है--दृष्टांत ५ जैसे रसोई के मकान में ॥

मू०--ज्ञान होता है कोई मनुष्य जंगल में चला जाता है अग्निकी इच्छा हुई देखा पर्वत में धूम उठ रहा है वो अनुमान करताहै वो पर्वत अग्निवालाहै धूम होनेसे जहां जहां धूम होताहै वहां वहां निश्चय अग्नि होताहै जैसे रसोई के मकानमें बिचार देखो अग्नि प्रत्यक्ष नहींहै पर-न्तु पर्वतमें अग्निका होना प्रमाणहै २ उपमा करके इस-प्रकार ज्ञान होताहै गवय एकपशु होताहै एक पुरुषने उसकूं कभी नहीं देखाथा नामसुनाथा उसने किसी जंग-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ली आदमीसे पूछा कि गवय कैसा होताहै जंगलीने उत्तर दिया कि गौकी सदृश होताहै कुछ एक अंतर होताहै वो पुरुष एकदिन जंगलमें गया उसने गवयकूं देखा उसगवयकूं देखकर उस बातको स्मरण किया कि गौकी सदृश होताहै निश्चय योही गवयहै बिचारदेखो गवयका जान लेना प्रमाणहै ३ शाब्दप्रमाण दो प्रकारका है वैदिक १ लौकिक २ वेदोंने जो कहा सो वैदिक प्रमाणहै जो यों शंका करे कि वेदोंने तो जीव ईश्वरका भेदभी कहाहै और अनेक श्रुति कर्म उपासनादि करके मोक्षका होना कहती हैं और बहुत श्रुति अन्नमय कोशकूं आत्मा कहतीहैं तोयो वेदोंका कहा हुआ आपके प्रमाणहै या नहीं इसका उत्तरयों है जो श्रुतिअन्नमायादि कोशकूं आत्मा कहतीहैं और जो कर्म उपासनादि करके मुक्ति का होना कहती हैं सबका अभिप्राय युक्तिसे अद्वैत ब्रह्मके बोधन करनेकाहै देहादिकूं परमार्थसे आत्मा कहना और जीव ईश्वरका भेद कहना और कवल कर्मउपासनादिसे मुक्तिका होजाना योश्रुतिका तात्पर्य नहीं है क्योंकिं फिर श्रुतिने निषेधभी किया है कि यो नहींहै२ इस वाक्य करके और बहुत सहस्राणि ऐसी ऐसी अर्थ वाली श्रुतिहैं और जो यो शंका करे कि प्रथम श्रुतिने देहादि कूं आत्मा कहा और जीव ईश्वरका भेद कहा फिर उसकूं निषेध किया प्रथमहीं एक निर्गुण ब्रह्मका उपदेश क्यों न किया इसका उत्तर योंहै जोश्रुति प्रथमहीं ब्रह्मका बोधन करती

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तो ब्रह्म कूं अतिसूक्ष्म होनेसे इस जीवकूं ब्रह्मका कभी बोध न होता इसलिये श्रुतिने क्रमसे अर्थात् प्रथम कर्म करना कहा फिर उपासना कही और प्रथम अन्नमयादिकूं आत्मा कहा फिर आनंदमयकोशकूं आत्मा कहा जब जिज्ञासुकी बुद्धि आनन्दमयादिकूं विचारते विचारते अति सूक्ष्महुई तब निर्गुण ब्रह्मका उपदेश किया अब विचारो कि श्रुति काअन्नमयकोशादि कूं जो आत्मा कहनाहै और कर्म उपासनासे मुक्ति का होना यों परमार्थ में तो सच्चा नहीं परन्तु निर्गुण बह्म कूं साक्षात् बोधन करने वाली जो बहुत श्रुतिहैं उन्हों की यह सब श्रुति उपयोगी हैं इसलिये वेदका कहा हुआ सब प्रमाण है कोई श्रुति साक्षात् और कोई कर्म उपासनादि द्वारा परम्परा करके बोधन करती हैं मूर्खलोग वेदोंके तात्पर्य कूं नहीं बिचारके एक एक देश वेदोंका सुनकर कोई देह कोई इन्द्रिय कोई विज्ञानमय कोशादि कूं आत्मा बताते हैं कोई केवल कर्मसे कोई केवल उपासनादि से मुक्तिका होना कहते हैं समस्त वेदों का तात्पर्य नहीं विचारते पूर्वपक्ष की श्रुतियों कूं प्रमाणदे दे वृथा बाद करते हैं जैसे कोई मूर्ख अच्छे वैद्य के समीप बैठा था उस समय एक पुरुष आया उसकूं बहुत चलनेसे हारपन का ज्वर था वैद्यने नाड़ी देखकर कहा कि मोहनभोग खाओ ज्वरजाता रहैगा उसकूं हारपनसे ज्वर था मोहनभोग के खाने से जाता रहा उस

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मूर्खने समझा कि विशेष करके धनवाले बीमार होते हैं उनके लिये यो औषधि बहुत सुन्दर है ऐसा निश्चय करके सब रोगियों कूं मोहनभोग बताने लगा जिसकूं हारपन का ज्वर होवे तो अच्छा होजावे शेष मरजावें ऐसे ही बहुत मूर्ख एक एक दो दो ओषधि वैद्यसे सुनकर वैद्यक करने लगे न वैद्यके तात्पर्य कूं विचारा न रोगीके रोगकूं विचारा सबकूं एकही ओषधि बताने लगे दैवयोग से कोई कोई अच्छा भी होजावे इसी प्रकार मूर्खने वेदके तात्पर्य कूं न अधिकारीकूं विचारते हैं केवल आजीविकाके लिये वैष्णव शैव शाक्तादि अपने अपने मतका उपदेश करके कहदेते हैं कि योही परमतत्त्व है औरों की असूया करदेते हैं विचारो कि जो सबकूं एक देवताका उपदेश करते हैं तो क्या सारी अवस्था में सबके एकही गुण सदा रहता है इस दृष्टान्त कूं भले प्रकार विचारो वैद्य तो सद्गुरु की जगे कि जैसे प्रथम अध्याय में लिखे हैं और वैद्यककीपोथी वेद और शास्त्रों की जगे और रोगी मुमुक्षु की जगे क्योंकि तीन प्रकार का रोगहै कफ वायु पित्त और तीनहीं रोग इस जीवकूं हैं सत्व रज तमोगुण तमोगुणीके लिये कर्म रजोगुणी के लिये उपासना सत्वगुणी के लिये ज्ञान वेदोंनें कहाहै और उस मूर्ख की जगे इस कलियुग के ऐसे गुरु कि जो बिना वेदान्त शास्त्रके पढ़ेहुए और बिना वेदशास्त्रोंका तात्पर्य जाने हुए मूर्खोंकूं चेला करते हैं उन-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कूं केवल अपनी क्षमाही से प्रयोजन है शिष्य दुःख भोगो या नरक भोगो सो शिवजीने पार्वतीजीसे कहाहै ॥

श्लोक । गुरवोबहवःसन्तिशिष्यवित्तापहारकाः ॥
दुर्लभःसद्गुरुर्देविशिष्यसन्तापहारकः ॥ १ ॥

तात्पर्य वेद भगवान् का यों है जैसे व्यवहार में मनुष्य सूक्ष्म बात कूं युक्ति करके कहते हैं ऐसे वेद भगवान् भी निर्गुण ब्रह्म कूं युक्ति करके बोधन करते हैं इस बातके स्फुट होने में मनुष्योंकी युक्तकूं लिखते हैं शारीरक भाष्यमें स्थूलारुंधतीन्याय नामकरके यों युक्तिलिखीहै कुवाँरीलड़कीकूं सौभाग्यके अर्थ अरुंधती का दर्शन कराया करते हैं प्रथम उससे कहते हैं कि यो चन्द्र अरुंधती है जब वो चन्द्रकूं जानजाती है फिर कहते हैं कि यों अरुंधती नहीं है यह सात तारे अरुंधती हैं फिर वैसेही निषेध करके कहते हैं कि यह तीन तारे हैं फिर उन तीन तारोमें से वशिष्ठजीकूं अरुंधती बताते हैं जब वो लड़की वशिष्ठजीकूं भले प्रकार जानजाती है पीछे उसकूं भी निषेध करके कहते हैं कि उस तारे के समीप जो बहुत सूक्ष्म ताराहै सो अरुंधती है जिसके भाग्य अच्छे होते उसको अरुंधती का दर्शन होजाता है अब विचारना चाहिये कि प्रथम चन्द्रादिकूं अरुंधती कहना है उनका अरुंधती के बताने में सबवाक्य उपकारीहैं इसलिये सब प्रमाण हैं जिसके माल

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वो लड़की अरुंधती को जानजाती है पीछे उसकूं यो निश्चय होजाती है कि मेरे माता पिताने जो प्रथम चन्द्रादि कूं बताया था तात्पर्य उनका अरुंधती के बोधन करनेमेंथा दार्ष्टान्तमें फिर भलेप्रकारविचारना चाहिये योंतो वैदिक प्रमाणं कहा और लौकिक व्यास वशिष्ठ आप्तकामादि पुरुषों का जो कहा है सो प्रमाण है लौकिकप्रमाणमें भी वोही अरुंधती न्यायहै इस समयमें भी आप्तकाम ब्रह्मवादी परमहंस संन्यासी विशेष करके हैं और जो इस लोक में अच्छे गुण कहे जाते हैं कि जिनकूं सब मतवाले अंगीकार करते हैं और वेद वशिष्ठादि का परमसिद्धान्त हैं और मुक्तिके मुख्य अंतरंग साधन हैं निराकांक्ष शान्ति निरहंकार सन्तोष कोमलता विवेक वैराग्य निर्वैरता अमान परोपकार क्षमा शम दमादि ऐसे ऐसे गुण और विद्या और विज्ञान विशेष करके ब्रह्मवादी संन्यासीपरमहंसोंही में पाते हैं इसलिये उनकूं आप्तकाम होनेसे उनके वाक्य प्रमाण हैं ४ किसीसे बूझा कहोजी भोजनकर आये उन्होंने कहा हम भोजन दिनमें हीं करते हैं और हृष्टपुष्ट देखते हैं अर्थसे यों ज्ञान हुआ कि रात्रीकातो इन्होंने निषेध नहीं कियाहै रात्रिकूं भोजन करते हैं विचारो यो ज्ञान सच्चाहै या नहीं इसका नाम अर्थापत्ति प्रमाण है५ किसीने कहा तुम कहतेहो इस स्थानमें घटनहीं है इसमें क्या प्रमाण है उसने उत्तर दिया घटका लाभ न होनेसे अनुपलब्धि प्र-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

माण है ६ तात्पर्य इन प्रमाणों के लिखनेका योंहै कि ब्रह्म-के सिद्धकरनेमें ऐसे ऐसे प्रमाण और अनेक युक्तिदृष्टान्त हैं प्रत्यक्ष वादि आदिकूं तो ऐसे ऐसे उत्तर देनेयोग्य हैं कि हे वादी विचार देख ब्रह्म ऐसे ऐसे प्रमाणों से देखनेमें आताहै ॥

और भेदवादी उपासनावालों और कर्मवादी आदिकूं यो उत्तर देना योग्यहै जैसे वेद की दृष्टिसे तुम सूतकी आदि और परमेश्वर कादास मानते हो ऐसेही वेदने भी कहाहै तू ब्रह्महै जो यो कहो हम अभी इसयोग्य नहीं हैं ऐसा कहें मैं ब्रह्महूं हमबूझते हैं किसी प्रतिबन्ध से तुम कूं महावाक्यार्थ अर्थात् मैं ब्रह्महूं यो अपरोक्ष न होती यो कहो वेदान्तशास्त्र का श्रवणादि और मैं ब्रह्महूं ऐसी अनेक उपासना करनी कहां निषेधहै और विचारो अभ्यास अनजान बस्तुका करतेहैं और अमद उपासना करने में छंदोग्य उपनिषदादि गीता भाष्यादि बहुत ग्रंथहैं उनमें ऐसी ऐसी उपासना करनेमें छंदोग्य उपनिषदादि गीता भाष्यादि बहुत ग्रंथहैं उनमें ऐसी ऐसी उपासना करने में ब्रह्महूं मैं ईश्वर हिरण्यगर्भ विराट हूं भले प्रकार ब्रह्म लोकादि फलक सहित लिखीहैं और भेदउपासना में बहुत जगे दोषक हेहैं और भलेप्रकार विचारोपरिपूरण कूं परिछिन्न कहना कितना बड़ाअनर्थहै वेदोंमें प्रकट लिखा है शोक कूं आत्माका जाननेबाला तरताहै १ उसी आत्मा कूं जान करकेमृत्यु कूं

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उल्लंघेगा और कोई रस्ता मुक्तिका नहींहै २ कर्मधनपुत्र करके मुक्त नहीं होता है सबका त्यागही करके मुक्त होता है ३ ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती है ४ ऐसी ऐसी अर्थ वाली बहुत श्रुति हैं फिर तुम कूं मैं ब्रह्म हूं इस अर्थ ग्रहण करने में क्या करना योग्य है वेदों का तात्पर्य्य सुनो कर्म करके तमोगुण का नाशहोताहै निद्रा, आलस्य, प्रमादादि तमोगुण का कार्य है प्रातःकाल के स्नानादि कर्म करने से उनका नाश होता है व्रतादिक करने स इन्द्रियादि का दमन होता है दानादि करनेसे पदार्थों में से आसक्ति दूरहोतीहै तीर्थादि करने से घरके लोगों से प्रीति कमहोतीहै परदेश में जाकर बुद्धिबढ़तीहै तीर्थों में महत् पुरुषों का समागम होता है उनके सत्सङ्ग करने से संसार से चित्त उपराम होता है और भी बहुत इस प्रकारके कर्म कार्य्य हैं चित्तसे विचारने योग्य है अन्तःकरण का विषयों से उपराम होना इसी कूं अन्तःकरण की शुद्धि कहते हैं उपासना से रजोगुण का नाश होताहै विक्षेप तृष्णा लोभादि रजोगुण का कार्य्य है ध्यानादि करके उनका नाश होता है ऐसे ऐसे साधनों से बड़ा जो सत्वगुण उसकूं प्रकाशमय शान्तरूप होने से कार्य्य उसका विवेक, वैराग्य, शम, दमादि हैं इन साधन सम्पन्न होकर जगत् ब्रह्म,बन्ध, मोक्ष, नित्यानित्यादिका विचार किया विचार करने से यो ज्ञान हुआ कि ये सत्वादि तीनों गुण

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

माया के हैं मायाकूं मिथ्या होने से इन गुणों का जितना का-र्य्य स्थूल सूक्ष्म है सब मिथ्या है और मैं असंग सच्चिदानन्द नित्यमुक्तहूं इसीको ज्ञान कहतेहैं योहीं ज्ञान मुक्तिकाहेतुहै और परमसिद्धांत तो वेदोंका यौ है कि यो जगत् जीव ईश्वरप्रतिबिम्बके सहित न कभी हुआ है न होगा न है एक, मन वाणी करके अगोचर, प्रत्यंगात्मा, नित्यानन्दरूप, नि-त्यमुक्तहै न किसीका नाश, न उत्पत्ति, न देहके साथ सम्बंध है न कोई सुख दुःखधर्म वाला, न श्रवण करनेवाला साधक, न मुक्ति की इच्छावाला न मुक्त है तात्पर्य जो जोहै सोहै यों श्रुतिका अर्थ है ॥ इतिप्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥ १ ॥

अथद्वितीयोध्यायः।

अब अध्यारोप अपवाद न्याय करके निष्प्रपञ्चब्रह्म जगत् का प्रपंचकरके फिर मुक्तिकूं सिद्ध करतेहैं मुक्तिमहा वाक्यार्थकेज्ञानसे होतीहै जैसे किसीकूं रज्जुमें सर्पकी भ्रांति है उसका दुःख कम्पादि लौकिक वाक्यार्थ के ज्ञानसे नाश होताहै यहां के स्त्री चन्दन मालादि और परलोकके अमृत, नन्दनवन, देवाङ्गनादि की प्राप्तिसे उसका दुःखनाश नहीं होताहै ऐसे इस जीवके तीन ताप पञ्च क्लेश यहांके और स्वर्गादिके पदार्थों की प्राप्तिसे नाश नहीं होतेहैं और न कम होतेहैं महावाक्यार्थ के ज्ञानसे नाश होतेहैं

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

महावाक्यार्थ का ज्ञान जब होताहै प्रथम पदार्थका ज्ञान होजावे कै पदोंका नाम वाक्य होताहै महावाक्य में तीन-पद हैं तत् त्वम् असि इस लिये तत् पदका अर्थ अभी आगे लिखेंगे उससे प्रथम तत्पदार्थ का लक्षण लिखतेहैं तत्पदार्थका अर्थात् ब्रह्मका लक्षण दो प्रकारका है तटस्थ १ स्वरूप २ सृष्टि स्थिति ३ लयका जो कारण अर्थात् जिससे यो जगत् हुआ है जिसमें ठहर रहाहै प्रलय समय जिसमें लय होजाता है सो ब्रह्मका तटस्थ लक्षण है और सत् चित् आनन्दादि स्वरूपलक्षण है जैसे किसी पुरुषका लक्षण श्याम गौर रँग इतनी अवस्था ऐसे नेत्रादि हैं यो उसका स्वरूप लक्षण है और जिसके बाहर कुंवा ऐसी उसकी हवेली ऐसे वस्त्र पहिररहाहै यो उसका तटस्थ लक्षण है तत्पद का अर्थ दोप्रकार का है वाच्य १ लक्ष्य २ मायोपहित जो चैतन्य सो तत्पदका वाच्यार्थ है मायो पहित का अर्थ योहै माया उपहित यो दो पदहैं योदोनों मिलके व्याकरण की रीति से मायोपहित यो एक शब्द बोलाजाताहै मायोपहित अर्थात् माया करके युक्त जैसे बि म्ब घट गतजल करके युक्त अथवा जैसे स्फटिक लालरं-गकी सन्निधीसे लालही प्रतीत होता है ऐसेही शुद्ध ब्रह्म माया की सन्निधीसे ईश्वर प्रतीत होतेहैं जैसे स्फटिक लाल रंग करके उपहित लाल स्फटिक कहा जाताहै और बिम्ब घटगत जल करके उपहित प्रतिबिम्ब कहा जाताहै

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ऐसेही मायोपहित शुद्ध चैतन्य जगत्कारण ईश्वर कहे जातेहैं उपहित का अर्थ यहां भलेप्रकार याद करलेना भलेप्रकार बुद्धिमें निश्चय करलेना आगे बहुत जगे काम पड़ैगा प्रसंग यों था मायोपहित चैतन्य तत्पदका वाच्यार्थ और मायासे युक्त चैतन्य तत्पद का लक्ष्यार्थहै जैसे प्रतिबिम्बसे बिम्ब नित्यमुक्त है और शुक्ति भ्रान्तिकाल में भी रजत नहीं हुई और जैसे स्फटिक लालरंगकी सन्निधिकाल में भी श्वेतही रहता है ऐसेही शुद्धब्रह्म मायोपहित और अविद्योपहित कालमें भी॥

टी०--अविद्या उपहित ये दोनों पद मिलकर व्याकरण की रीतिसे एकअविद्योपहित बोला जाताहै अर्थ यो हुआ अविद्याकरके उपहित॥

मू०—चैतन्य असंग शुद्धही है माया किसकूं कहते हैं सुनो जैसे शुक्तिमें रजत की भ्रान्ति ऐसे चैतन्यमें कारण सूक्ष्म स्थूल प्रपंच जड़की जो भ्रान्ति इसी का नाम माया है यो सब ब्रह्म है १ यो सब वासुदेव है २ ऐसी ऐसी अर्थ वाली बहुत श्रुतिस्मृति चैतन्यका भाव और जड़का अभाव कहती हैं चैतन्य प्रदार्थ क्याहै सुनो सत्। चित्। आनन्द। शुद्ध। बुद्ध। एक। स्वयंप्रकाश। अनन्त। नित्यमुक्त। शान्त। अखंड। अज। अमर। परिपूर्ण। निरंजन। निरवयव।असंग। अद्वय। अव्यक्त। अचिन्त्य। सर्वगत। अचल। सनातन। नित्य। आत्मा। परमात्मा।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

परमेश्वर । ब्रह्म । प्रत्यगात्मा । ये चैतन्य पदार्थ के विशेषण हैं और भी चितिज्ञान स्वरूपादि विशेषण हैं और जड़ अज्ञानसे आदि लेकर जो स्थूल पर्यन्त हैं सो सब जड हैं अज्ञानकूं प्रकृति और गुणोंकी साम्यावस्था और मूल अज्ञान भी कहतेहैं सो अज्ञान सत्व, रज, तम, इन तीन गुणोंवालाहै स्वरूप उसका अनिर्वाच्य है सत् असत् करके कुछनहीं कहाजाताहै जो सत् कहैं तो कुछ पदार्थ नहीं है और असत् कहैं तो प्रतीत होताहै जैसे भ्रान्ति समय शुक्ति में रससे अनिर्वाच्य है परंतु ज्ञानसे उस अज्ञानका अभाव होने सेवो अज्ञान भाव रूपहै जैसे लौकिक व्यवहार में प्रथम कछु भूलजावे फिर याद आजावे और जैसे बालकअवस्थामें तूला ज्ञान का भाव होता है ॥

टी०-तूला ज्ञान योहै जैसे किसी पदार्थ कूं भूलजावे उस में जो कारण और बालक अवस्था में जो अज्ञान सो तूलाऽज्ञान उसका न्यायशास्त्र और प्राकृत विद्या के पढ़ने से और लौकिक व्यवहार से नाश होजाताहै और मूलाऽज्ञान का तौ केवल ब्रह्म विद्यासे नाश होताहै ॥

मू०-विद्या पढ़करके और व्यवहारादि से उस अज्ञान का अभाव होजाताहै ऐसे अज्ञान कालमें कहता है कि मैं ब्रह्म कूं नहीं जानताहूं ज्ञानकाल में कहता है कि मैं ब्रह्मकूं जानता हूं ऐसा ऐसा अनुभव व्यवहार होनेसे निःसन्देह प्रतीत होताहै कि एक अज्ञान पदार्थ अनिर्वाच्य

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

है भाव और अभाव उसके दोनों प्रतीत होते हैं अज्ञान १ माया अविद्या का भेद २ मायोपहित सबल ब्रह्म ३ जीव ४ जीव ईश्वरका भेद५शुद्धब्रह्म ६ ये सब अनादि हैं इनकूं यो नहीं कहाजाताहै ये कबसे हैं और कबसे इनका भेद हुआहै और शुद्ध ब्रह्म कबसे मायोपहित अविद्योपहितहुये जैसे यो नहीं कहाजाताहै शरीर प्रथम हुआ या कर्म दृष्टान्तयो है बीजप्रथम हुआ या वृक्ष और जैसे स्वप्नमें जो उपवन,मंदिर,मृग मित्र, शत्रु आदिदीखतेहैं विचारो कि उपवन मन्दिरकी कौनसे सम्वत मुहुर्त में नीव रक्खी गई है और मित्रादि का कौन से सम्वत् मुहूर्त में जन्म हुआहै योहीं निश्चय करो जैसे दृष्टांत के पदार्थोंकी व्यवस्था है वैसेही दार्ष्टान्त के पदार्थोंमें शुद्धब्रह्म अनादि भी और अनित्यभीहैं और सब अनित्य हैं ज्ञानकाल में शुद्ध ब्रह्मके बिना सब नष्ट होजातेहैं वो अज्ञान माया अविद्या भेदसे दो प्रकार का है शुद्ध सत्त्व प्रधान हुआ माया मलिनसत्त्व प्रधान हुआ अविद्या कहाजाताहै रजोगण तमोगण करके जो सत्व गुण नहीं तिरोभाव होता है सो शुद्ध सत्व और रजतमोगुण करके जो सत्वगुण तिरोभाव होजाता है सो मलिन सत्त्व कहाजाता है माया अविद्याका भेद ऐसे समझो जैसे एक पुरुष क्रियाके निमित्तसे पाठक याचक कहलाता है और जैसे एक स्त्री पिताकी अपेक्षा करके कन्या पतिकी अपेक्षा करके पत्नीहै ऐसे वो अज्ञान ईश्वरकी अपेक्षा करके माया और

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जीवकी अपेक्षा करके अविद्या कहाजाताहै ऐसा भेदनहीं समझना कि अज्ञानके दोटूक होगये,अथवा उस अज्ञानकी शक्ति दो प्रकारकीहै ज्ञानशक्ति १ क्रिया शक्ति २ रजोगुण तमोगुण से नहीं दबा जो सत्वगुण सो ज्ञानशक्ति १ क्रियाशक्ति दो प्रकारकी है, आवरणशक्ति १ विक्षेप शक्ति रजसत्वगुण से नहीं दबा जो तमोगुण सो आवर्ण शक्ति और तम सत्त्वगुण से नहीं दबा जो रजोगण सो विक्षेप शक्ति वोही अज्ञान आवर्ण शक्ति प्रधान हुआ अविद्या और विक्षेप शक्ति और ज्ञान शक्ति प्रधान हुआ माया मायोपहित चैतन्य ईश्वर कहाजाता है योंही तत्पद का वाच्यार्थ है और वोही चैतन्य अविद्योपहित जीव प्राज्ञ कहाजाताहै मायोपहित ईश्वर तो माया के वश नहीं हुये इसलिये सर्वज्ञ ईश्वरादिनामकरके कहे गये और अविद्योपहित जीव अविद्या के वश होगया उस अविद्याकी विचित्रता से नाना प्रकारका होगया इसलिये अलपज्ञ कहागया जैसे कोई पुरुष शीशेके मकान में बैठा हुआ आपकूं और औरोंकूं भी देखताहै मृत्तिकाके मन्दिरमें बैठाहुआ आपही कूं देखता है कभी बहुत अन्धेरेमें अपना आपा भी नहीं देखता है माया में शुद्ध सत्व प्रधान होनेसे माया शीशेके मन्दिर की सदृश है और अविद्या में मलिन सत्त्व प्रधान होने से अविद्या मृत्तिका के मन्दिर के सदृश है माया में प्रतिबिम्ब जो चैतन्यका सो

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ईश्वर अविद्या में प्रतिबिम्बजो उसी चैतन्यका सो जीव वहां बिम्ब का भेद सूर्य बिम्ब और घट गत जल प्रतिबिम्बवत् नहीं समझना ऐसे सम जैसे आकाश का प्रतिबिम्ब जल में प्रथम दृष्टांत में भी कुछ दोष नहीं है परंतु परिछिन्न भेदसा प्रतीत होताहै सो कुछ दोष नहींहै दृष्टांत एक देश में होताहै आकाशके दृष्टांत से बिम्बका भेद और परिछिन्नता नहीं प्रतीत होतीहै इस पक्षमें जीवतो एकही है परंतु अन्तःकरण की उपाधि से बहुत प्रमाता कल्प रक्खे हैं अन्तःकरण विशिष्ट चैतन्यकूं प्रमाता कहतेहैं कोई ऐसा कहते हैं अनेक अज्ञान हैं बनवत् जो अज्ञानोंका समुदाय सो समष्टि और वृक्षवत् जो एक अज्ञान सो व्यष्टि वोही चैतन्य।अज्ञान।समष्टि।करके उपहित ईश्वर और वोही चैतन्य व्यष्टि अज्ञान करके उपहित जीव कोई ऐसा कहते हैं करणी भूत जो अज्ञान उससे उपहित चैतन्य ईश्वर और अन्तःकरण करके उपहित वेही चैतन्य जीव तात्पर्य्य कारण उपाधि वाले ईश्वर और कार्य्य उपाधि वाला जीव सबका सिद्धान्त यो है मायोपहित चैतन्य ईश्वर। अविद्योपहित चैतन्य जीव सो ईश्वर ज्ञान शक्ति करके उपहित जगत् के निमित्त कारण विक्षेपशक्ति करके उपहित उपादान कारण जैसे मकड़ी जालेके प्रति चैतन्य प्रधानता करके तो निमित्त कारण और शरीर प्रधानता करके उपादान कारणयो मकड़ी का दृष्टान्त श्रुतिने कहाहै कि जिस प्रकार मक-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ड़ी जाले कूं रचती है फिर अपनेमें लय करलेतीहै तात्पर्य परमेश्वर जगत्के कर्त्ता अभिन्न निमित्तोपादान कारण हैं अर्थात्नहीं हैं भिन्न निमित्त और उपादान कारण जिन्होंसे सो अभिन्न निमित्तोपादान कारण इस प्रकार जगत्के कारण ईश्वरहैं ऐसे नहीं हैं जैसे घटके बनाने में कुलाल भिन्न निमित्तो पादान कारण है अर्थात् भिन्नहै निमित्त और उपादान कारण जिससे सो भिन्न निमित्तोपादान कारण कुलाल तात्पर्य घटके बनाने में मृत्तिका उपादान और कुलाल दण्ड चक्रादि निमित्त है ईश्वर तो आपही उपादान और आपही निमित्त कारण है पूर्वरीतिसे भले प्रकार विचारना योग्य है निरीश्वर वादी पूर्वमीमांसकादि कूं जो यो तर्क जगत्के मोहके लिये वाचाल करावें हैं उस तर्क कूं सुनो वो लोग यों कहतेहैं ईश्वरं जो त्रिभुवन कूं रचतेहैंसो त्रिभुवनके रचने में क्या क्या चेष्टा करते हैं और रचने के समय किस प्रकारकी कायाहै जिनकी अर्थात् किसरूप हुये हुये और क्याहै उपाय और आधार जिनका और क्या उपादानहै यों तर्क उनकी अतर्क्य ईश्वर के विषय दुर्बलहै परमेश्वर की रचना में तर्क का अवसर नहीं क्योंकि परमेश्वर की माया नह घटने के योग्य पदार्थ कूं घटा सक्तीहै और मनुष्यकी रचना इन्द्रजालादिमें बुद्धि काम नहीं करती है परमेश्वर की रचनामें तो नष्ट बुद्धि तर्क करते हैं तो भी उस तर्कके खण्डनके लिये कहाहै जो ऊपर अ

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भिन्ननिमित्तोपादान कारण प्रकार वो वज्र उनके मुखमें मारना योग्यहै ॥

इस रीति से जगत् का कर्त्ता ईश्वर कूं सिद्ध किया और कारण प्रपंचका यहां तक निरूपण किया जगत्में तीनिप्रपंचहैं कारण १ सूक्ष्म २ स्थूल ३ अब सूक्ष्म प्रपंच का निरूपण करते हैं पूर्व सिद्धि किये हुये जो मायोपहित चैतन्य ईश्वर उनसे प्रथम महत् तत्त्व अहंकार की सूक्ष्म अवस्था फिर महत्तत्त्व से अहंकार अर्थात् मैं एकहूं बहुत होजाऊं फिर अहंकारसे आकाश आकाशसे वायु वायु से तेज तेजसे जल जल से पृथिवी अर्थ इन सबका ऐसा करना महत्तत्त्व करके उपाहित जो ईश्वर उनसे अहंकार हुआ तात्पर्य्य योहैं महत्तत्त्वादि सब जड़ पदार्थ हैं बिना चैतन्य रचना नहीं होसक्ती है निश्चय इसी आत्मा से आकाश हुआहै यो श्रुतिका अर्थहै माया कूं तीन गुणों वाली होने से कार्य्य भी उसका आकाशादि पंच तीन गुणों वाले हैं उन कूं अपंजी कृत सूक्ष्म भूत और तन्मात्रा भी कहते हैं इन्हीं सूक्ष्म भूतों से पंचीकृत स्थूल भूत उत्पन्न हुयेहैं और सूक्ष्म शरीर १७ लिंगवाला उत्पन्न हुवा ॥१७॥ लिंग येहैं ॥

टी०-सूक्ष्म शरीर कूं कोई १६ लिंग कोई १७ कोई १९ लिंगवाला कहतेहैं लिंगही कूं तत्त्व कहतेहैं इन्द्रियं दश प्रा-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

णपंच अन्तःकरण एक इस प्रकार १६ और इन्द्रिय प्राण १५ मन बुद्धि २ इसप्रकार १७ और इन्द्रिय प्राण १५ मन बुद्धि चित्त अहंकार ४ इसप्रकार १९ परन्तु बहुत १७ तत्त्ववाला कहतेहैं॥

मू०—शब्दादिका ज्ञान होताहै जिन इन्द्रियोंसे सो ज्ञानेन्द्रिय पंच और कर्म किया जाताहै जिन इन्द्रियों से सो कर्मेन्द्रिय पंच प्राणादि पंच मन बुद्धि २ आकाशादिके सत्वगुणके अंशसे पृथक् पृथक् पंच ज्ञानेन्द्रिय हुये सोई लिखतेहैं आकाश से श्रोत्र वायु से त्वक् तेजसे चक्षु जलसे रसना पृथिवीसे घ्राण और आकाशादि के मिलेहुये सत्वगुणके अंशसे अन्तःकरण सो वृत्ति भेदसे चार प्रकारका है संकल्प विकल्पवाला मन निश्चयवाली बुद्धि अभिमानवाला अहंकार अनुसंधान वाला चित्त और आकाशादि के रजोगुणके अंशसे पृथक् पृथक् पंच कर्मेन्द्रिय हुयेहैं आकाशसे वाक वायुसे पाणि तेजसे पाद जलसे उपस्थ पृथिवीसे वायु और आकाशादिके मिले हुये रजोगुण के अंशसे प्राण सो वृत्ति भेदसे पांच प्रकारका है, बाहरको निकलनेवाला नाशिका

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मुखमें रहने वाला प्राण १ नीचेकूं जानेवाला वायु आ-दिमें रहने वाला अपान २ सब शरीरमें फिरनेवाला सब शरीरमें रहनेवाला व्यान ३ खाये पियेकूं सब नाडियोंमें पहुँचानेवाला सारे शरीर में रहनेवाला समान ४ ऊपरकूं जानेवाला कण्ठमें रहनेवाला उदान ५ और पंच उप-प्राण हैं उनका भी इन्हीं पांचमें अंतर्भावहै, उद्गारमें जो हेतु सो नाग १ नेत्रोंके खोलने मीचनेमें जो हेतु सो कूर्म २ भूकका जो हेतु सो कृकरः ३ जम्भाई लेनेमें जो हेतु सो देवदत्त ४ सब जगह रहनेवाला धनंजय जो मुरदेकूं फुला देता है आकाशसे दो इन्द्रिय श्रोत्र और वाक्हेतु यह है श्रोत्र करके जो आकाश का सद्गुण सो ग्रहण किया जाता है और वाक्से बोला जाताहै वायुसे दो इन्द्रिय त्वक् और पाणि हेतु योंहै त्वक् करके तो वायुका जो स्पर्श गुण उसका ज्ञान होताहै और पाणिसे त्वक्की रक्षा होतीहै तेजसे दो इन्द्रिय चक्षु और पादहेतु योंहै चक्षु करके तो तेजका जो गुणरूप उसका ज्ञान होताहै और पैरके मलनेसे चक्षुकी गरमी दूर होतीहै जलसे दोइन्द्रिय रसना उपस्थ हेतु योंहै रसना करके तो जलका जो गुण रस उसका ज्ञान होताहै और तरह रहता है और उपस्थ करके जलका त्याग होताहै पृथिवीसे दो इन्द्रिय घ्राण और वायुहेतु योंहै घ्राण करके तो पृथिवीका जो गुण

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

गंध उसका ग्रहण होताहै और वायुसे गंधका त्याग होताहै, और अन्तःकरण समष्टि पांचों भूतोंके सत्वगुणके अंशसे उत्पन्न हुआहै हेतु योंहै पांचों ज्ञानेन्द्रियोंके विषोंकूं अनुभव करताहै, अन्नमय, प्राणमय. मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय, येपंचकोश कारण सूक्ष्म स्थूल शरीरों के अन्तर्भाव हैं आगे जो कहेंगे स्थूल शरीर सोतो अन्नमय कोश है सूक्ष्मशरीरमें तीन कोशहैं पंच कर्मेन्द्रिय करके सहित जो पंचप्राण सो प्राणमय कोश और पंच ज्ञानेंद्रिय करके सहित जो मन सो मनोमय कोश और पंच ज्ञानेन्द्रिय करके सहित जो बुद्धि सो विज्ञानमय कोश है मनोमय विज्ञानमय कोशमें यह भेद मनोमय कोश तो करण और विज्ञानमय कोश कर्त्ता है क्रियामें कर्त्तादि ये षट्कारक होते हैं । कर्त्ता- कर्म च करणं च संप्रदानं तथैव च । अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणिषट् ॥ और कारण शरीरमें कारणशरीर- भूता अविद्यामें जो मलिन सत्व सो प्रिय मोद प्रमोद वृत्ति- करके सहित आनन्दमय कोशहै कोई अज्ञानकूं आनन्द- मय कोश कहतेहैं जो वस्तु प्राप्त नहो और अच्छीप्रतीत हो उस समयकी वृत्तिकूं प्रिय कहतेहैं १ फिर वोही वस्तु जब अपनी होजावे उस समयमें जो आनन्द सो मोद २ उसके भोगनेमें जो आनन्द वो प्रमोद ३ जो सूक्ष्म शरीर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

समष्टि व्यष्टि भेदसे दो प्रकारका है वनवत् सूक्ष्म शरीरोंका समुदाय समष्टि वृक्षवत् पृथक् पृथक् एक एक सूक्ष्म शरीर व्यष्टि जैसे उपवन समष्टि और उसी उपवनका एक एक वृक्ष व्यष्टिसूक्ष्म समष्टि करके उपहित वोही मायोपहित चैतन्य हिरण्यगर्भ कहाजाता है और सूक्ष्म व्यष्टि करके उपहित वोही अविद्योपहित चैतन्य तैजस कहाजाताहै समष्टिव्यष्टि कूं तादात्म्य होनेसे उनकरके उपहित हिरण्यगर्भतैजसकी भी तादात्म्यताहै जैसे वन और वृक्ष करके उपहित आकाशमें कुछ भेद नहीं ऐसे हिरण्यगर्भतैजसमें भेद नहीं और भी दृष्टांत हैं जाति व्यक्ति सामान्य विशेष नगर मोहल्ला इनका बिना विचारके भेद है वास्तव भेद नहीं, जो सूक्ष्म शरीर अविद्या काम कर्म करके सहित पुर्यष्टक कहाता है सोई लिखतेहैं, ज्ञानेन्द्रिय पंच १ कर्मेन्द्रिय पंच २ चारअन्तःकरण ३ पंचप्राण ४ पंचसूक्ष्म भूत ५ अविद्या ६ काम ७ कर्म ८ अविद्याका कार्य चार प्रकारका है ब्रह्मलोकपर्यन्त जो पदार्थ हैं उनमें नित्यबुद्धि होनी १ दुःखोंमें और दुःखोंके साधनोंमें जो सुखबुद्धि २ देहादि अनात्मा पदार्थों में आत्मा बुद्धि ३ अपवित्र जो अपने और पुत्रादिके शरीर उनमें पवित्र बुद्धि ४ काम रागकूं कहतेहैं कर्म तीन प्रकारका है संचित १ आगामी २ प्रारब्ध ३ अपना किया-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हुआ कर्मफलकूं नहीं देकर जो अदृष्टरूप करके ठहर रहाहै सो सञ्चित १ इस शरीर में जो किया जाताहै सो आगामी २ स्थूल शरीरके जन्म स्थितिका जो हेतु सो प्रारब्ध ३ सञ्चितआगामी कर्मोंके फलका भोग करके वा उसका विरोध कर्मकरके वा ब्रह्मज्ञानकरके नाश होजाताहै॥

और प्रारब्ध कर्मका भोगनेसे नाश होताहै प्रारब्धसे पृथक् अविद्यादि पंच क्लेश हैं उनका ब्रह्मज्ञानसे नाश-होताहै अविद्या १ अस्मिता २ राग ३ द्वेष ४ अभिनि-वेश ५ कारण कार्यकरके अविद्या दो प्रकारकी ऊपर लिख आये हैं अहंकारकी सूक्ष्म अवस्थाकूं अस्मिता और महत्तत्व और सामान्य अहंकार भी कहते हैं राग काम को कहते हैं द्वेष क्रोधको कहते हैं अपने आप ग्रहण करके फिर उसके त्यागको न सहना इसकूं अभिनिवेश कहते हैं ब्रह्मकूं जान करके सारे क्लेशोंसे छूटजाता है या श्रुतिका अर्थहै यहां तक सूक्ष्म शरीर की उत्पत्ति लिखी अब स्थूल शरीर की उत्पत्ति लिखते हैं, पंची-कृत पंचस्थूल भूतहैं आकाशादिके तामस अंशकूं लेकर अर्थात् बुद्धिमें कल्पना करके प्रथम एक एक के दो दो टूककरे दोमेंसे एककूं पृथक् रक्खे उस दूसरेके चार चार भाग करे फिर उन चारों भागोंको अपने अपने भागको छोड़कर औरोंमें मिला देना यो पंचीकरण कह-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

लाताहै जिसका भाग जिसमें सिवाय है वोही कहनेमें आताहै जैसे मनुष्यशरीरकूं पार्थिव कहते हैं, पंचीकृत स्थूल भूतों का जो रचाहुआ स्थूल शरीर उसमें पंचीकृत स्थूलभूतहैं और अपंचीकृत भूतोंके तामस अंशका कार्य इस प्रकार है, पंचीकृत जो पृथिवी उसकी पृथिवीका कार्य अस्थि क्योंकि कठिन है जलका कार्य मांस कुतः बहजाता है और शिथिलहै तेजका कार्य नाड़ी कुतः ज्वरकी परीक्षा करती है वायुका कार्य त्वक् कुतः स्पर्श करती है आकाशका कार्य रोम कुतः काटनेसे दुःख नहीं होताहै पंचीकृत जो जल उसकी पृथिवीका कार्य शोणित कुतः पृथिवीकी सदृश रक्तहै जलका कार्य्य शुक्र कुतः श्वेतहै और उससे गर्भ होताहै जैसे जलसे सब वस्तुकी उत्पत्ति है तेजका कार्य मूत्र कुतः उष्णहै वायुका कार्य स्वेद कुतः बहुत दम चलनेसे आजाताहै और वायुसे सूख जाताहै आकाशका कार्य राल कुतः ऊपरकूं जातीहै और आकाश-भी ऊंचाहै और पंचीकृत जो तेज उसकी पृथिवीका का-र्य आलस्य कुतः आलस्यमें जड़ताहै जलका कार्य का-न्ति कुतः जलके स्पर्श स्नानादिसे सुन्दरता होती है तेजका कार्य क्षुधा कुतः अन्नकूं पचातीहै वायुका कार्य तृषा कु-तः ओष्ठ कंठ सूखजाताहै आकाशका कार्य निद्रा कुतः निद्रामें निर्विकल्प होजाताहै और पंचीकृत जो वायु

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उसकी पृथिवीका कार्य संकोचन कुतः जिस समय मनुष्य सुकड़ कर बैठे तो भारी और जड़सा होजाता है जलका कार्य चलना कुतः जल भी चलता है तेजका कार्य उठना उछलना कुतः उठने उछलनेमें ऊंचा होताहै और अग्नि भी ऊपरकूं जाताहै वायुका कार्य दौड़ना कुतः दौड़नेमें बल होताहै और वायुमें भी बल और वेगहै आकाशका कार्य पसरना कुतः आकाश भी व्यापक है और पसारनेमें भी व्यापक होताहै अर्थात् फैलता है और पंचीकृत जो आकाश उसकी पृथिवी का कार्य कटी जंहां मल रहता है कुतः गंध स्थान है जलका कार्य उदर कुतः जलका स्थानहै तेजका कार्य हृदय कुतः उष्ण रहताहै वायुका कार्य कंठ कुतः वायुका स्थानहै आकाशका कार्य शिर कुतः शब्दस्थान है और अनहद शब्द होता रहताहै और पंचीकृत आकाशका भेद दूसरे प्रकार ऐसेहैं उसकी पृथिवीका कार्य भय कुतः भयसे अन्तःकरणमें तम प्रधान होजाताहै और तम पृथिवीका भाग है जलका कार्य मोह कुतः जलके स्पर्शसे उत्पन्न होताहै जो सुंदरता उसकूं देखकर मोह होता है तेजका कार्य क्रोध कुतः क्रोधके समय हृदय भस्म होताहै वायुका कार्य काम कुतः वायुभी चंचलहै और कामभी चंचलहै आकाशका कार्य लोभ कुतः आकाशकीभी अवधि नहीं लोभकी भी अवधि नहीं ॥

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

	पृथिवी	जल	तेज	वायु	आकाश
पृथिवी	अस्थि	मांस	नाड़ी	त्वचा	रोम
जल	रक्त	वीर्य	मूत्र	स्वेद	राल
तेज	आलस्य	क्रान्ति	भूक	प्यास	निद्रा
वायु	संकोचन	चलना	उठना उछलना	दौड़ना	फहलाना
आकाश	कमरमें	पेटमें	हृदयमें	कंठमें	शिरमें
दूसरी प्रकारे आकाश	भय	मोह	क्रोध	काम	लोभ

शब्द गुण जिसमें रहताहै सो आकाश सावकाशरूप रूपरहित स्पर्शवाला वायु गर्मस्पर्शवाला तेज सो चार प्रकारकाहै अग्नि आदि स्वर्गादि विद्युदाऽऽदि जठराग्नि शीत स्पर्शवाला जल गंधवाली पृथिवी पंच भूतोंके जो लक्षण कहेहैं सो तीनों दोषोंसे रहित हैं जिस लक्षणमें अव्याप्ति अतिव्याप्ति असम्भव ये तीनदोष पाये जावें वो प्रमाणनहीं जैसे किसीने कहा गौ कपिला होतीहै इसमें अव्याप्ति दोषहै कुतः बहुत गौकपिला नहीं होतीं फिर कहा सींगवाली गो होतीहै इसमें अतिव्याप्ति दोषहै क्यों कि सींगहिरन आदिके भी होतेहैं फिर किसीने कहा एक खुरवालीगो होतीहै इसमें असम्भव दोषहै कुतः यह लक्षण

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

गौमें सम्भव नहीं होसक्ता वो लक्षण प्रमाण है जो सब दोषसे रहित हो जैसे गौका लक्षण सींग शास्ना आदिवाली गौविचारो इसमें कोई दोष नहीं आकाशमें एक गुण शब्द वायुमें दो शब्द स्पर्श तेजमें तीन शब्द स्पर्श रूप जलमें चार शब्द स्पर्श रूप रस पृथिवीमें पांच शब्द स्पर्श रूप रस गंध पंचीकृत पृथिवी आदिसे ब्रह्माण्ड हुआ ब्रह्माण्डमें चौदह लोक भूः भुवः स्वः महा, जनः तपः सत्य। ये सात ऊपर ऊपरके लोकहैं और तल। वितल। सुतल। तलातल। महातल। रसातल। पाताल। ये सात ७ नीचे नीचेके लोकहैं ब्रह्माण्डसे मनु और शतरूपा हुये ब्रह्माण्डमें जो पृथिवी उससे औषधि हुई औषधिसे अन्न माता पिताके खायेहुयेका परिणाम जो शोणित उससे स्थूल शरीर उत्पन्न हुआ शरीर चार प्रकारके हैं मनुष्यादिके शरीर जरायुज अर्थात् जरससे उत्पन्न हुये पक्षी नागादिके शरीर अण्डज अर्थात् अण्डेसे उत्पन्नहये लीक जूं जादिके शरीर स्वेदज अर्थात् पसीने से उत्पन्न हुये तृण वृक्षादि उद्भिज पृथिवीकूं भेदनकरके उत्पन्न हुये और मनुलसक सनन्दनादि शरीर इन चारों से पृथक्हैं वे मानवीसृष्टि में हैं सुनाजाताहै ये ब्रह्माजीके मनसे उत्पन्न हुये हैं यह स्थूल शरीर समष्टि व्यष्टि भेद करके दो प्रकार का है पंचीकृत् पंच महाभूत और उाकन

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कार्य्यं ब्रह्माण्डके भीतर जो पंच भूतोंका कार्य स्थूल शरीरादि का समुदाय यह सब समष्टि और पृथक् पृथक् स्थूल शरीर व्यष्टि इस थूल समष्टि करके उपहित वही मायोपहित चैतन्य विराट् कहाजाता है और स्थूल व्यष्टि करके उपाहित वही अविद्योपाहितचैतन्य विश्व कहाजाताहै समष्टिव्यष्टि कूं जाति व्यक्ति सामान्य विशेष वनवृक्षवत् तादात्म्य होनेसे उन करके उपाहित विराट् विश्वकीभी एकताहै इस जीवकी प्रसिद्ध तीन अवस्थाहैं प्रसिद्ध लिखनेसे यह अभिप्राय है कोई मरण और मूर्छा ये दो अवस्था और भी कहतेहैं परन्तु प्रसिद्ध तीन अवस्थाहैं जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति. जाग्रत्का अर्थ जाननेके लिये प्रथम इन्द्रिय और अन्तःकरण और शब्दादि विषय और बोलनादि क्रिया और संकल्पादि अन्तःकरणके धर्म और दिक् आदि देवताओंके सहित सबकूं पृथक् पृथक् लिखतेहैं यह संकेत याद रखना चाहिये एकका अंक जिसके आगे उसकूं इन्द्रिय वा अन्तःकरण जानना इसीकूं अध्यात्म कहतेहैं और दोका अंक जिसके आगे उसकूं ज्ञानेन्द्रियका विषय वा कर्मेन्द्रियकी क्रिया वा अंतःकरणका धर्म जानना इसीकूं अधिभूत कहते हैं और तीनका अंक जिसके आगे उसकूं देवता जानना इसीकूं अधिदैव कहतेहैं जिस इन्द्रिय और मनादिके आगे विषय क्रिया धर्म देवता

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

लिखेहैं उसी उस इन्द्रिय मनादि के विषय क्रिया धर्म देवता हैं शब्दादि पांचकूं विषय और बोलनादि पांचकूं क्रिया और संकल्पादि चारकूं धर्म बोलतेहैं श्रोत्राऽऽदि इन्द्रिय सूक्ष्म हैं कान नासिकादि जो स्थूल शरीरमें दीखते हैं ये उनका आश्रयहै अर्थात् उनमें रहतेहैं बहुत करके तो बहिर्मुख हैं कभी भीतरका भी कुछ ज्ञान होजाताहै श्रोत्र कानमें रहता है बहुत करके तो बाहर के शब्द कूं सुनता है कभी कान बन्द करनेसे कुछ शब्द भीतरकाभी सुना जाताहै श्रोत्र करके सुना जाता है जो शब्द सो दो प्रकारका है एक शास्त्रादिका दूसरा भेरी आदिका सो पांचों भूतोंमें रहता है २ दिक् ३ त्वक् सारे शरीरमें रहता है बहुत करके तो बाहरके शीत कोमलादि कूं विषय करताहै कभी उष्णादि वस्तुके खानेसे भीतरके स्पर्शका ज्ञान होताहै १ त्वक् करके जो स्पर्श कियाजाताहै सो स्पर्श पांच प्रकारका है शीत गर्म न शीत न गर्म कठिन कोमल शीत स्पर्श जलमें गर्म स्पर्शतेजमें न शीत न गर्म पृथिवी वायुमें कठिनकोमल पृथिवीमें और पृथिवीके कार्य वस्त्रादिमें रहते हैं २ वायु ३ चक्षु नेत्रोंमें कृष्ण तारेके अग्रभागमें रहता है बहुत करके तो बाहरके रक्त पीतादि रूपकूं देखता है कभी नेत्रके मीचनेमें भीतरका भी तम प्रतीत होताहै १ चक्षु करके जो रूप

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

देखनेमें आताहै सो सात प्रकारकाहै शुक्ल नील पीत रक्त हरित कपिश चित्र भेद करके सो पृथिवीमें तो सात प्रकारका और जलमें अभास्वर शुक्ल और तेजमें भास्वर शुक्ल रहताहै २ सूर्य ३ रसना जीभके अग्र भागमें रहता है बहुत करके तो बाहरके मधुरादि रस अनुभव करताहै कभी डकार आनेसे भीतरके रसका भी ज्ञान हो जाता है १ रसना करके जो रसका अनुभव होताहै सो ६ प्रकारका है मधुर अम्ल लवण कटु कषाय पित्त भेद करके सो पृथिवीमें तो ६ प्रकारका और जलमें केवल मधुर रहताहै२ वरुण ३ घ्राण नाकके दो स्वर उनके अग्र-भागमें दोके बीचमें रहताहै बहुत करके तो बाहरके गन्ध-कूं ग्रहण करता है कभी डकार आनेसे भीतरके गन्ध-काभी ज्ञान होजाताहै १ घ्राणकरके जो गन्धका ग्रहण किया जाता है सो दो प्रकारका है सुगन्ध दुर्गंध सो पृथि-वीमें रहता है २ पृथिवी ३ यहांतक ज्ञानेन्द्रियोंका निरू-पण किया वाक् जीभमें रहताहै १ बोलना २ अग्नि ३ पाणि हाथोंमें रहता है १ लेना देना २ इन्द्र ३ पाद चरणों में रहता है १ चलना फिरना २ विष्णु ३ उपस्थ मूत्र करनेका जो शरीर में चिह्न उसमें रहता है १ मैथुन मूत्रत्याग २ प्रजापति ३ वायु मल त्याग करनेका जो शरीरमें चिह्न उसमें रहताहै १ मलकात्याग करना २

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मृत्यु ३ यहांतक कर्मेन्द्रियोंका निरूपण किया अन्तःकरण हृदय गोलकमें रहताहै सो वृत्तिभेद करके चारप्रकारकाहै मन बुद्धि चित्त अहंकार मन १ संकल्प विकल्प मनोराज्याधि २ चन्द्र ३ बुद्धि १ पदार्थोंका निश्चय करना २ बृहस्पति ३ चित्त १ चिन्तवन करना २ क्षेत्रज्ञ ३ अहंकार १ यह मैंने किया यह मेरे करने योग्यहै २ रुद्र ३ अमान अदम्भ अहिंसा क्षमा आर्जव वैराग्य शम दम मुक्तिकी इच्छा संतोष औदार्यादि ऐसी ऐसी और भी अन्तःकरणकी सत्वगुणी वृत्ति हैं और तृष्णा दम्भ लोभ अहंकार अशम भोगोंकी इच्छा चपलता अभिमान रागादि ऐसी ऐसी औरभी बहुत अन्तःकरणकी रजोगुणीवृत्ती हैं और निद्रा आलस्य प्रमाद मोहादि अन्तःकरणकी तमोगुणी हैं अर्थात् यह सब अन्तःकरणका धर्म है जो संकल्प विकल्पवाली वृत्ति सो मनकी और निश्चयवाली बुद्धिकी और अनुसन्धानवाली चित्तकी और अभिमानवाली अहंकारकी वृत्ति, सत्वगुणी वृत्तिसे पुण्यकी उत्पत्ति होतीहै रजोगुणी वृत्तिसे पापकी उत्पत्ति होती है तमोगुणी वृत्तिसे मूर्खता बढ़तीहै वृथा अवस्था व्यतीत होतीहै उससे न कुछ इस लोकमें प्राप्ति न कुछ परलोकमें प्राप्ति है पीछे तमोगुणी वृत्ति बहुत दुःखकी हेतु है ॥

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भूत	ज्ञानेंद्रिय	विषय	ज्ञानेंद्रियों के देवता	कर्मेंद्रिय	क्रिया	कर्मेंद्रियों-के देवता
आकाश	श्रोत्र	शब्द	दिक्	वाक्	बोलना।	अग्नि
वायु	त्वक्	स्पर्श	वायु	पाणि	लेना देना।	इन्द्र
तेज	चक्षु	रूप	सूर्य्य	पद	चलना।	विष्णु
जल	रसना	रस	वरुण	उपस्थ	मैथुनादि	प्रजापति
पृथ्वी	घ्राण	गंध	पृथ्वी	गुदा	मलत्याग	मृत्यु

श्रोत्रादि इन्द्रियोंके जो देवतादिक आदि ॥

उन करके युक्त श्रोत्रादि करके जो अपने अपने विषयोंका अनुभव होना सो जाग्रत अवस्था यह जो जाग्रत अवस्था और यह स्थूल शरीर मन इन्द्रियादिका आश्रय इन दोनोंका जो अभिमानी जीव सो विश्व कहा जाताहै प्रथम भी विश्व विराट्की एकता लिख आयेहैं इसलिये भेदकी निवृत्तिके लिये विश्वकूं विराट्रूप करके देखे १ जाग्रत अवस्थामें जो भोग देनेवाले कर्म उनका उपराम हुये सन्ते और बाहर श्रोत्रादि इन्द्रियोंका उपराम हुये सन्ते जाग्रत अवस्थामें जो देखा और सुना उनहीं संस्कार करके केवल अन्तःकरण करके जो निद्रामें प्रपंचकी प्रतीत सोई स्वप्न अवस्था वोही जाग्रत अवस्थाका अभिमानी जो विश्व सोई स्वप्न अवस्था और सूक्ष्म शरीरका अभिमानी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हुआ तैजस कहाजाता है तैजस हिरण्यगर्भकी एकता है तैजसकूं हिरण्यगर्भरूप करके देखे २ जाग्रत स्वप्नमें जो भोग देनेवाले कर्म उनका उपराम हुये सन्ते स्थूल सूक्ष्म शरीरोंका जो अभिमान उसके निवृत्ति होनेसे बुद्धिका कारणात्मामें जो स्थित होना सो सुषुप्ति अवस्था मैंने न कुछ जाना सुख करके मैंने निद्राका अनुभव किया जो जाग्रतअवस्थामें जिस अवस्थाकी व्यवस्था कहती है वोही सुषुप्ति है तात्पर्य जिस अवस्थामें बुद्ध्यादि सब लय होजाते हैं वोही सुषुप्ति है वोही स्वप्न अवस्थाका अभिमानी जो तैजस जो यह सोई सुषुप्ति अवस्था और कारणशरीरका अभिमानी हुआ प्राज्ञ कहा जाता है प्राज्ञ ईश्वरकी एकता है प्राज्ञकूं ईश्वररूप करकेदेखे यहही प्राज्ञ तीनों शरीर और तीनो अवस्थाका अभिमान छोड़कर शुद्ध परमात्मा होजाताहै जो यह उपासनाकरे मैं विराट् वा हिरण्यगर्भ वा ईश्वर वा शुद्धब्रह्महूं इस उपासना करके वैसाही वैसा फल होताहै अर्थात् विराटादिकी उपासना करनेसे विराट् आदि होजाताहै ऐसी ऐसी उपासना उपनिषद आदिमें भलेप्रकार फलके सहित लिखी हैं और भी प्रणवआदि उपासनाहैं शुद्ध ब्रह्मसे लेकर पाषाण आदि मूर्त्ति पर्य्यंत उपासनाहैं जैसीअपनी सामर्थ्य जाने भेदउपासना वा अभेदउपासना वेदशास्त्रोंमें से निश्चय करके करे परमेश्वरकी जैसी उपासना करैगा वैसाही वैसा फल होवेगा मुख्य अभेद उपासना

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शुद्धब्रह्मकीहै और ईश्वर हिरण्यगर्भ विराट्की अभेद उपासना और विष्णु शिवादि राम कृष्णादिंकी भेद उपासना और नामोच्चारणादि पाषाणादिं मूर्त्तियोंकी अर्चनादि ये सब उपासना उत्तरोत्तर गौणहैं जो अभेद उपासनाशुद्ध ब्रह्मकी न होसके तो भेदउपासना श्रीकृष्णचन्द्र महाराजादिकी करनेसे ज्ञानद्वारा मुक्तिमें सन्देह नहीं है जैसे कोई सिंह किसी पुरुषकी छायाकूं देखकर दौड़ा उस छायासे पुरुषकी प्राप्ति होगई इसीप्रकार मणिप्रभासे आदि लेकर और भी बहुत दृष्टान्त हैं, अष्टावक्र जीका यह वाक्य है कि जिसकी जो मतिहै उसकी वैसेही गति होगी अर्थात् दासोऽहम् जिसकी मतिहै वो दासही है और ब्रह्माहमस्मि यह जिसकी मतिहै वो ब्रह्मही है ब्रह्मविद्ब्रह्मैव भवति इस श्रुति से इसप्रकार मायोपहित ब्रह्मका तटस्थ लक्षण निरूपण किया इसीकूं अध्यारोप कहतेहैं अब इसका अपवाद लिखते हैं अधिष्ठान में भ्रान्ता करके।

टी०–जिसमें जो वस्तु कल्पित हो जैसे रज्जुमें सर्प ॥

मू०–जो प्रतीत होना उस भ्रान्ति कूं अधिष्ठान से व्यतिरेक करके भ्रान्तिका अभाव निश्चय करना जैसे शुक्ति में रजत की भ्रान्ति प्रतीत होतीहै शुक्तिका रजत से व्यतिरेक करके यो रजत नहीं है शुक्ति है यो जो रजत का अभाव निश्चय करना इसीकूं अपवाद बाध विलापन भी कहते हैं सो बाध तीनप्रकार का है शास्त्र करके युक्ति

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करके प्रत्यक्ष करके वेद कहते हैं यो स्थूल सूक्ष्म प्रपंच नहीं है इस जगत् भ्रान्ति रूप में ब्रह्म से पृथक् कुछ नहीं है एक शुद्ध ब्रह्म है इस प्रकार शास्त्र करके प्रपंच से ब्रह्मका व्यतिरेक करके प्रपंचका अभाव निश्चय करना यो शास्त्र करके जगत्का बाधहै १ और घटसे मृत्तिकाका व्यतिरेक करके घटका अभाव निश्चय करना इसी प्रकार ब्रह्मसे-व्यतिरेक करके सारे प्रपञ्चका अभाव निश्चय करना और जो देखने में आताहै इसकूं भ्रान्ति निश्चय करके ब्रह्ममात्र निश्चय करना यो युक्ति करके जगत्का बाध है यो जगत् सब ब्रह्महै इसकूं इसप्रकार जानना चाहिये ब्रह्माण्ड में जितने पदार्थ हैं सब में पांच वस्तु हैं है भान होता है प्यारा है नाम रूप संस्कृत में अस्ति भ्रान्ति प्रियनाम रूप से ससा बोलते हैं प्रथम के तीन अंश सच्चिदानन्द ब्रह्म के हैं पदार्थ घटादि के नाश हुये भी नहीं नाश होतेहैं और नामरूप ये दो मायाके हैं माया कूं मिथ्या होनेसे यो कार्यभी उसका नामरूप दोनों अंश नाश होजाते हैं अन्वय व्यतिरेक करके ब्रह्ममात्र निश्चय किया जाता है सोई लिखते हैं जैसे एकघट पदार्थ है है भान होताहै प्याराहै ये तीन अंश उसमें ब्रह्मके हैं और नाम घट और रूपकाला लाल गोलाकारादि ये दो मायाके अंशहैं है भान होताहै प्याराहै यो ब्रह्मका-घटमें अन्वय है फिर घट फूट गया मायाके दोनों अंश-नामरूप जाते रहे घट में माया के दोनों अंशोंका व्य-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तिरेक है और ब्रह्मका फिर भी अन्वय है कैसे टूक हैं भान होतेहैं, प्यारे है, हैं भान होतेहैं, प्यारे हैं यो ब्रह्मके तीनों अंश वैसेहीहैं फिर उन टूकों का काल पाकर चूर्ण होगया मायाके जो अंश नाम रूप थे वे दोनों नाश होगये मायाके दोनों अंशोंका चूरण में व्यतिरेक है और ब्रह्म-का अन्वय है चूरण है भान होता है प्यारा है फिर वो चूरण भी काल पाकर नाश होगया नामरूप माया के दोनों अंश नाश होगये चूरणमें मायाके अंशोंका व्यतिरे-कहै और ब्रह्मका अन्वय है कैसे चूरण का आभावहै भान होताहै प्याराहै ये तीनों अंश जैसे प्रथम घटमें थे वैसेही घटके अभावमें हैं इसी प्रकार सब पदार्थोंमें अन्वय व्यति-रेक करके ब्रह्म निश्चयकरना तीनों अवस्था में भी अन्वय व्यतिरेक जाना चाहिये जाग्रत अवस्था में स्वप्न सुषुप्ति का व्यतिरेक है आत्मा का अन्वय है स्वप्न अवस्था में जाग्रत सुषुप्तिका व्यतिरेक है आत्मा का अन्वय है सुषु-प्ति अवस्थामें जाग्रत स्वप्न का व्यतिरेकहै आत्मा का अ-न्वय है तुर्या अवस्था में जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति का व्यति-रेक है आत्माका अन्वय है इसीप्रकार बुद्धिमान सब ज-गह विचार कर प्रसंग यों था युक्ति करके भी जगत् का बाधहै उसका यो क्रमहै समस्त स्थूल प्रपञ्च कूं स्थूल महाभूतोंमें मिलादे यो निश्चय करे पञ्चभूतों से पृथक् कुछ नहीं फिर स्थूल भूतों कूं और सूक्ष्म पंच भूतोंके कार्य

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इन्द्रिय मनादि कूं पंच सूक्ष्म भूतों में मिलादे फिर पृथिवी कूं जलमें जलकूं तेजमें तेजकूंवायु में वायुकूं आकाशमें आकाश कूं अहंकार में अहंकार कूं महत्तत्त्वमें महत्तत्त्व कूं अज्ञान में अज्ञान मिथ्या है जैसे शुक्ति में रजत फिर अज्ञानकूं शुद्धचैतन्य में मिलादे फिर सदा अभ्यास केवल करके योही चिंतवन करता रहै मैं शुद्धब्रह्म सच्चिदानन्द परिपूर्ण नित्यमुक्त हूं जो कभी व्यवहारदशामें प्रपंच प्रतीत होतो वैसेही अन्वय व्यतिरेक करके चैतन्य से पृथक् कुछ न जाने जैसे किसी मृगकूं रेती में यो भ्रान्ति हुई यो जल है वहां गया नेत्र सींग पैरसे भले प्रकार निश्चय किया कि यो जल नहींहै फिर मृग उसीजगह आनकर जो देखताहै तो वहां फिरभी भ्रान्ति से जल प्रतीत होताहै परन्तु फिर यो जानताहै कि यो जल नहीं है भ्रान्ति है जो पशुकी यो बुद्धि है कि उस मृगतृष्णा में फिर नहीं प्रवृत्त होताहै बुद्धिमान कि जिसने श्रुतिस्मृति युक्ति अनुभव करके ब्रह्मका निश्चय किया है वो कैसे संसार कूं सत्यजानेगा संसार का मिथ्याभ्यास भी उसकूं जबतक है कि जबतक प्रारब्ध कर्मका रचा हुआ जो शरीर नाश नहीं होता है पीछे उसके मुक्तरूप है युक्ति करके संसार का बाध योही है कि संसार कूं मिथ्या समझ लेना २ और मैं ब्रह्म हूं यो महावाक्य श्रवण करके जो हुआ अपरोक्ष ज्ञान और ब्रह्मकूं साक्षात् करके अज्ञान

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

की जो निवृत्ति सो प्रत्यक्ष बाध हैं ऐसे तीन प्रकार करके संसार का बाध करना इसकूं अपवाद कहते हैं अध्यारोप अपवाद करके तत् त्वम् पदार्थों का साधन भी हुआ है सोई दिखाते हैं मायासे लगाकर स्थूल समष्टि प्रपंच जड़ १ और उस करके उपाहित चैतन्य २ और दोनों का आधार अनुपहित चैतन्य ३ ये तीनों पृथक् हैं और इन तीनों का तप्तलोहेके पिण्डवत् एक प्रतीत होना यो तत् पदका वाच्यार्थ है और पृथक् जो अखण्डचैतन्य सो तत् पदका लक्ष्यार्थ है और अविद्यासे लगाकर स्थूल व्यष्टि प्रपंच जड़ १ और उस करके उपाहित चैतन्य २ और इन दोनोंका आधार अनुपहित अखण्ड चैतन्य३ ये तीनों पृथक् हैं और इन तीनोंका तप्तलोहेके पिण्डवत् एक प्रतीत होना यो त्वम् पदका वाच्यार्थ है और पृथक् अखंड चैतन्य त्वम् पदका लक्ष्यार्थ है इन दोनों तत् त्वम् पदका लक्ष्यार्थ कूं ग्रहण करके और वाच्यार्थ कूं मिथ्या जानकर वाच्यार्थ का त्याग करके तीन सम्बन्ध के सहित जहद जहद लक्षण करके सो यो देवदत्त है इस लौकिक वाक्यवत् तत्त्वमसि यो महावाक्य अखंडार्थ का बोधकहै तीन सम्बन्धों का अर्थ बिना कुछ शास्त्र के पढ़ेहुये भले प्रकार नहीं जाना जाता है न भले प्रकार भाषामें लिखाजाताहै इसलिये कुछ तात्पर्य लिखे देतेहैं। सामानाधिकरण्य १ विशेषण विशेष्यभाव २ लक्ष्यलक्षणभाव ३ स-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मानहै अधिकरण जिसका सो सामानाधिकरण्य जो जिसमें रहे उसकूं अधिकरण कहते हैं।किसी ने कहा सो यो देवदत्त है सो अर्थात् काशीमें तुमने हमने १६वर्षकी अवस्था गृहस्थ आश्रम में जोदेखाथा सोई यो अर्थात् अब हरिद्वार में ३० वर्षकी अवस्थामें जो दीखताहै सो यो देवदत्तहै पूर्व काशी १६ वर्षकी अवस्थादि का और हरिद्वार ३०वर्षका अवस्थादि का त्याग करके केवल देवदत्तके पिण्ड माथमें दृष्टि करके यो अर्थ बैठता है कि सो यो देवदत्तहै।कहे हुये अर्थकूं कुछ त्यागदेना कुछ रखलेना इसकूं जहद जहद लक्षण कहतेहैं सो यो देवदत्त है इस वाक्यका अर्थ जहद जहद् लक्षणा करके होसक्ताहै जैसे इस वाक्यमें जहद जहद लक्षणा है ऐसे और वाक्यों में भी किसीमें जहद लक्षणा किसीमें अजहत् लक्षणाहै तात्पर्य्य जिस वाक्य का अर्थ बुद्धिमें न बैठता हो कुछ विरुद्ध प्रतीत होता हो तो उस वाक्य का अर्थ लक्षणा शक्ति व्यंजनादि करके निश्चय करते हैं उन वाक्योंके बहुत उदाहरण लिखनेमें विस्तार होताहै इसलिये थोड़ेसे उदाहरण लिखते हैं और उनके लिखने का यहां कुछ प्रयोजन भी नहीं है जहद् लक्षणा वह है कि कहे हुये वाक्यार्थ का त्याग करके और बनाकर लक्षणा करनी जैसे किसी ने कहा गङ्गा में गांवहै वहां से दूध ले आओ उसने विचारा गङ्गाजी में गांवका होना नहीं बनता इस हेतुसे गङ्गाजीके तीरके गांवसे दूधले आया तात्पर्य क-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हने वाले का तीरमें था जहत् लक्षणा से यो अर्थ बनसक्ता है, अजहत् लक्षणा वहहै कि कहे हुये वाक्यार्थ कूं ग्रहण करके और भी कुछ अर्थ बनाकर लक्षणा करनी जैसे किसीने कहा कि दूधकी कौवन से रक्षा करते रहना उसने अजहत् लक्षण करके कौवन से भी रक्षाकरी औरों स भी रक्षाकरी क्योंकि तात्पर्य दूधकी रक्षामें था, जैसे पंकजका अर्थ यों है कि जो कीचसे उत्पन्नहो सो पंकज विचारो कीचसे बहुत वस्तु कसेरू आदि उत्पन्न होतेहैं परन्तु पंकज की शक्ति कमल में हीहै, वाक्यार्थके तात्पर्यकूं समझना यो व्यंजना है जैसे किसी स्त्रीका पुरुष विदेशकूं जाताथा स्त्रीने चलते समय प्रार्थना करी कि जहां आपका जानाहो उसी जगह मेराभी जन्महोवे अर्थात् आप के जाते ही मेरे प्राण छूट जावेंगे, प्रसंगसामान्याधिकरण्य कथासों सुनो सो और योपद इन दोनों का जैसे देवदत्त का पिण्ड अधिकरण है ऐसे तत् त्वम् इन पदोंका शुद्ध चैतन्य अधिकरण है। तत् त्वम् पदों का सामान्याधि करण्य संबन्ध है जैसे सो यो ऐसा कहो वा यो सो ऐसा कहो ऐसे तत् त्वम् ऐसा कहो वा त्वम् तत् ऐसा कहो यो तत् त्वम् पदार्थों का विशेषण विशेष्य भाव सम्बन्धहै, जैसे सो यो इन शब्दोंका और इनके अर्थोंका लक्ष्य लक्षणभाव सम्बन्धहै सो यो ये दोनों पदतो लक्षणहैं और इन लक्षणोंसे जो लखा जावे सो लक्ष्य देवदत्त का पिण्डहै ऐसे तत् त्वम् पदों का

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

और उनके अर्थोंका लक्ष्य लक्षणभावसम्बन्धहै तत् त्वम् ये पदतो लक्षण हैं और इन लक्षणों से जो लखा जावे सो लक्ष्य एक शुद्ध चैतन्यहै इस प्रकार तीन सम्बन्ध करके अखण्डार्थ का बोध होताहै जीवकी जो उपाधि अविद्या अल्पज्ञाति और ईश्वरकी उपाधि माया सर्वज्ञादि इनदोनों उपाधियों का जहद जहद् लक्षणासे त्याग करके तात्पर्य तत् त्वम् पदोंके वाच्यार्थ का त्याग करके लक्ष्यार्थ का ग्रहण करक केवल एक शुद्ध चैतन्यमें लक्षणा करनी तब तत्त्वमसि इस महावाक्य का अर्थ अखण्डार्थ निश्चय होताहै अखंडार्थ किसकूं कहतेहैं सुनो स्वगत १ जैसे वृक्षमें पत्र पुष्पादि का भेद और सजातीय २ जैसे अनार आम्रादि का भेद और विजातीय ३ जैसेवृक्ष और पाषाणादि का भेद इन तीन भेद करके जो रहित सो अखण्ड अथवा देश काल वस्तु करके परिछिन्न न हो सो अखण्ड सारे व्यापक होनेसे तो ब्रह्मदेश परिछिन्न नहीं और नित्य होनेसे काल परिच्छिन्न नहीं और सबका आत्माहोनेसे वस्तु परिच्छिन्न नहीं जो इस शरीरमें सच्चिदानन्द भान होताहै वोही ब्रह्महै और जिसकूं ब्रह्म कहतेहैं वोही सच्चिदानन्दहै जब ऐसा ज्ञान हुवा तब त्वम्पद का अर्थ जो जीव समझ रक्खा था वो उसी समय जाता रहताहै और तत् पदका अर्थ जो परोक्ष था तोभी उसी समय अपरोक्ष होजाताहै फिर इस ज्ञानसे जो होताहै सो सुनो जो प्रथम त्वम्

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पदका अर्थ जीव समझ रक्खा था सोई अपरोक्ष परमानन्द रूप करके शेष रहजाता है इस प्रकार तत्त्वमसि जो महावाक्यादि उनका अर्थ श्रवण करने से और मनन निदिध्यासन करनेसे जो हुआ अपरोक्ष ज्ञान उस ज्ञान करके अज्ञान की जो निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति इसीका नाम मोक्ष है ॥

इति श्रीद्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

कर्मकाण्डी और उपासना वाले स्वर्ग वैकुण्ठादि की प्राप्तिकूं सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य नाम करके मुक्ति कहतेहैं सो नाममात्र मुक्तिहै अनित्य होनेसे साक्षात् मुक्ति नहीं जैसे किसी पुरुषकूं कहना कि यो पुरुषसिंहहै वो पुरुष साक्षात् सिंह नहीं उसमें सिंहकेसे गुणहैं ऐसे साक्षात् मुक्तिमें जो गुण दुःखोंकी निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति ये दोनों उनमें भी थोड़े थोड़े हैं दूसरे अध्यायके अन्तमें जो मुक्ति कही है सो मुक्ति दोप्रकार की है जीवन्मुक्ति १ विदेह मुक्ति २ जीवन्मुक्ति तीन प्रकारकी है श्रेष्ठ १ मध्यम २ कनिष्ठ ३ जीवते हुये उस आनन्दकूं सदा प्राप्त रहना अर्थात् स्वभाव करके निर्विकल्प समाधि रहनी श्रेष्ठ जीवन्मुक्ति १ प्रयत्न करके बहिर्मुख अन्तः

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करण की वृत्तियों कूं निरोध करना मध्यम जीवन्मुक्ति २ यद्यपि दुःख सुखादि अन्तःकरणके धर्म होनेसे आत्माके साथ उनका सम्बन्ध नहीं है।यो विचार भीहै तोभी दुःखादि के संबंधकरके अन्तःकरणका व्याकुल होजाना यो कनिष्ठ जीवन्मुक्ति ३ देह पातके पीछे उस आनन्दकूं प्राप्त होना विदेह मुक्ति, श्रेष्ठ जीवन् मुक्तिका योनियम नहीं कि सब ज्ञानियोंकूं श्रेष्ठ जीवन्मुक्ति हो जैसे ओषाधि करनेसे रोगकी शान्ति होतीहै ऐसे प्रयत्न करनेसे श्रेष्ठ जीवन्मुक्तिभी सम्पादन होसक्ती है परंतु कुछ नियम नहीं कि औषधिकरनेसे नियम करके रोग जाता रहता है पुरुषार्थ वादी तो यों हीं कहते हैं कि प्रयत्न मुख्यहै जो श्रेष्ठ जीवन्मुक्ति किसी प्रतिबन्ध करके सम्पादन न होसके तो कुछ विदेह मुक्तिमें सन्देह नहीं इस बातकूं सिद्ध करते हैं।ज्ञानकी ७ भूमिकाहैं तीन प्रथमकी ज्ञानकी साधनभूमिका हैं इसलिये वेभी ज्ञानकी भूमिका कही जातीहैं चौथीमें अपरोक्षज्ञान होता है पिछिली तीन जीवन्मुक्ति भूमिका हैं प्रथम का लक्षण योहै शौचस्नानादि आचार गंगाजीसे आदि लेकर तीर्थोंका सेवन विष्णु शिवादिकी पाषाणादि मूर्त्तियों की पूजा अश्वमेध यज्ञसे आदि लेकर यथाशक्ति ब्राह्मण अतिथि अभ्यागतोंकूं अन्न वस्त्रादि देने ऐसे ऐसे और भी बहुत कर्म हैं यो प्रथम भूमिका १ सगुण परमेश्वर के गुणानुवाद सुनकर परमेश्वरमें अनुराग होना और परमे-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

श्वरके भक्त जो साधु ब्राह्मण उनमें प्रीति होनी और मन, वाणी, शरीर, धनसे उनका सत्कार करना जो कदाचित् साधु अपने घर चले आवें तो मनकूं आनन्द होना यो जानना हमारा बड़ा भाग्य है यो मनसे सत्कार है और वाणीसे ऐसा बोलना महाराज आपका आना बहुत सुन्दर हुआ।आप जंगम तीर्थहो हमारे पवित्र करनेके लिये आप आयेहो और शरीर से हाथ जोड़कर खड़ा होजाना। चरण सेवासे आदि लेकर टहल करनी अथवा और जगह महात्मा ठहर रहे हों वहां जाकर सेवा करनी और धनसे यथा शक्ति अन्न वस्त्रादि देने और नित्याऽनित्यवस्तुका विचारना ऐसे ऐसे कर्मोंसे आदि लेकर और भी बहुत कर्म हैं यो दूसरी भूमिका २ संसार के पदार्थोंकूं दुःखरूप अनित्य जानकर उनसे वैराग्य होना जैसा श्रीरामचन्द्र जीकूं वैराग्य हुआहै वाशिष्ठग्रन्थमें वो कथा प्रथमही वैराग्यप्रकरणमें प्रसिद्धहै और साधनचतुष्टयसंपन्न होकर वेदान्तशास्त्रका श्रवण करना यो तीसरी भूमिका ३ शुक्तिमें रजतवत् संसारकूं मिथ्या जानकर अपने निज स्वरूप का बाध होजाना कि मैं योहूं चौथी भूमिका योहि विदेह मुक्तिमें हेतुहै चौथी भूमिकावालेका लक्षण योहै कि जैसे कोई पुरुष समुद्र के तीर खड़ाहै जो जलकी तरफकूं देखताहै तो जलही जल दीखताहै और जबपर्कूं देखताहै तब मन्दिर वृक्षादिही दी-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

खतेहैं ऐसे जब वो पुरुष अपने स्वरूपका अनुसंधान करताहै तब संसारका अभाव और अपना स्वरूप साक्षात् प्रतीत होताहै और व्यवहार के समय संसारके दुःख सुख शोक मोहादि जैसे पहले थे वैसेही भुने अन्नवत् प्रतीत होतेहैं जैसे भुना अन्न भूख दूर करनेकूं समर्थहै जमनेकूं समर्थ नहीं ऐसे उस ज्ञानीकूं व्यवहार सुखदुःखादि का हेतु है परन्तु जन्मका हेतु नहीं और अज्ञानी की बराबर उसकूं दुःख सुखभी नहीं होते इस बातकूं भी अभी आगे दृष्टान्त देकर सिद्ध करैंगे चौथी भूमिकामें शरीर याती चाण्डालके घरमें या काशीमें छूटो आनन्द पूर्वक छूटो या मूर्च्छारोग होकर लोटते पोटते छूटो मुक्तिमें सन्देह नहीं वो मुक्त उसी समय होगया जिससमय उसको ज्ञान हुआ।मूर्च्छादि होनेसे ज्ञानका नाश नहीं होता।जैसे विद्याकूं स्वप्न सुषुप्ति मूर्च्छादिमें भूलभी जाताहै परन्तु कुछ अगले दिन नहीं बढ़ता ४ पांचवीं भूमिका का लक्षण योहै कि जैसे कोई पावकोश समुद्र में आधे शरीर जलमें खड़ाहो उसकूं बहुत विचारनेसे समुद्रके तीरके मन्दिर वृक्षादि देखा करते हैं वैसे उसकूं संसारका व्यवहार बहुत किसीके सुनने देखनेसे प्रतीत होताहै ५ छठीभूमिकामें गलेतक जलकी कल्पना करलेनी ६ सातवीं भूमिकामें जलमें प्रवेश होजाना सातवीं भूमिका वालेका शरीर हद बीसदिन रहता है क्योंकि भोजनादिका अभाव होजाता

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

है ७ चौथी भूमिका वालेसे लेकर सातवीं तक एकसे एक सिवाय ब्रह्मवित् कहे जाते हैं, ब्रह्मवित् ४ ब्रह्मविद्वर ५ ब्रह्मविद्वर्यान् ६ ब्रह्मविद् वरिष्ठ ७ मूर्ख योहीं कहते हैं कि जैसा हमने पांचवीं छठी सातवीं भूमिका का लक्षण लिखाहै ऐसे ज्ञानी होते हैं और चौथी भूमिकावालेमें बहुत तर्क करतेहैं उनकी पूर्व पक्षकी तर्कोंका खण्डन वेदान्तशास्त्रमें बहुत लिखा है कुछ एक लेशमात्र यहांभी लिखतेहैं। शंकाः—कि जो खावे पीवे नहीं और शरीर इन्द्रियादि करके चेष्टा न करताहो सो ज्ञानी है। उत्तरः—ज्ञान क्या हुवा रोग हुआ ऐसे तो रोगी होते हैं रोगियोंकूं भी ज्ञानी कहा चाहिये। शंकाः—जिसकूं दुःख सुख न प्रतीत होताहो तो ज्ञानीहै।उत्तर-दुःख सुखका अभाव जड़ पदार्थोंमें होताहै वे ज्ञानी हैं।शंकाः—संसार का अनुभव न होना यो ज्ञान का लक्षण है। उत्तरः—संसार तो सुषुप्ति मूर्च्छा प्रलयादिमें भी अनुभव नहीं होता वहांभी तो संसारका बाधहै। प्रश्न-फिर संसारका क्या बाध है और क्या ज्ञानका लक्षणहै। उत्तरः—संसार का यो ही बाधहै कि जो दूसरे अध्यायमें तीन प्रकार का बाध लिख आये हैं और ज्ञान का भी योही लक्षणहै कि जबतक जो शरीर प्रारब्ध कर्मका रचा हुआ नष्टनहीं होता तबतक संसारकूं मिथ्या समझना तात्पर्य्य जबतक संसारमें स्वरूपसे मर्दन नहीं होसका क्योंकि मिथ्या पदार्थकूं मिथ्या जानने से

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उसका अभाव नहींहोता जैसे बाजीगर के पदार्थ मिथ्या जाने से स्वरूप करके मर्दन नहीं होते इस प्रकार यह संसार रहता है परन्तु देहपातके पीछे स्वरूप से भी मर्दन होताहै इसमें वेद प्रमाण है अन्यथा वशिष्ठादि ब्रह्मज्ञानी थे इसमें क्या प्रमाण है। शङ्काः—ज्ञात तो होगया फिर प्रारब्ध कर्म्म का फल दुःखादि क्यों न नाश हुआ। उत्तरः—तीरने पुरुष कूं भेदन तो करदिया आगे क्यों चला और दूसरे कुम्हार ने बर्तन उतारने के लिये चाक घुमाया बरतन तो उतार लिया फिर चाक क्यों घूमता है। शङ्काः—ज्ञानने-संसार कूं स्वरूप से और प्रारब्धकर्म्म कूं क्यों न नाश किया। उत्तरः—प्रारब्धकर्म्म और यो संसार मिथ्या भास मुरदेकी नाईं कुछ ज्ञानके विरोध नहीं प्रत्युतज्ञान कूं उत्साह बढ़ाने वालेहैं जैसे किसी पुरुषकी मारी हुई हज़ारों लाशें पड़ीहों वो शूर उनको देख देख आनन्द होताहै। शङ्काः—जो ज्ञानी पूर्ववत् संसार को भोग भोक्ता रहा तो ज्ञानी अज्ञानी में क्या भेद हुआ। उत्तरः—ज्ञानी रागपूर्वक संसारके भोग नहीं भोक्ता जैसे किसीके शिरपर कोई बेगार रख दे तो क्या बेगारके उठानेमें उसको उत्साह है। शङ्काः—बेगारी कूं तो दुःख होताहै जो ज्ञानी कूं भी दुःख हुआ तो ज्ञानका क्या फल हुआ। उत्तरः—ज्ञानीका दुःख मुक्तिके आनन्द में दबा रहताहै जैसे दो बेगारी हैं एक जानताहै कि मैं दोघड़ी में छूटूंगा दूसरा नहीं जानता कि मैं

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कब छूटूंगा हे वादी। विचार देख दुःख दोनों का सम प्रतीत होता है परन्तु जानने वाले कूं थोड़ा दुःख है। नहीं जानने वाले कूं बहुत दुःख है। ऐसे ज्ञानी अज्ञानीके दुःखमें बहुत भेद है। शङ्काः—तुमतो जैसे प्रथमथे वैसेही अबभी दीखते हो ज्ञान होकर कुछ और प्रकारके न हुये । उत्तरः—जिस समय तुमकूं रज्जु में सर्पकी भ्रांति हुईथी उसकूं देखकर कम्पने लगे थे और गिरकर चोट लग गईथी फिर किसी के उपदेश और अपनी युक्तिसे रज्जुका अनुभव किया तुम कहो कि आपकी सूरत भी बदलीथी कहताहै कि मेरी सूरत तो नहीं बदली थी परन्तु अन्तःकरण की वृत्ति बदल गई थी उत्तर फिर हमारे अन्तःकरणके साक्षी क्या तुमहो जैसे भ्रांति समय तुमकूं कँपाथी पीछे निर्वृत्ति होगई सूरत न बदली ऐसे हमकूं भ्रांतिथी सो निर्वृत्ति होगई अपने अन्तःकरण के हम साक्षी हैं। शंकाः—तुम कहतेहो यो जगत् अज्ञानका कार्य्यहै वो अज्ञान तो नाश होगया कार्य्य उसका कैसे बना रहा । उत्तरः—भ्रांति समय जो तुमकूं कँपातीथी और गिरकर चोट लगीथी फिर जिस समय वो भ्रांति दूरहुई कार्य्य उस भ्रांति का वो कँपा और वो चोट उसी समय जाती रही थी शंकाः—कहता है कँपा तो दो घड़ी के पीछे और चोट दशदिनके पीछे होगई थी। उत्तरः आश्चर्य की बातहै जो घड़ीभर भ्रान्ति नहीं रही उसका कार्यतो दशदिन के पीछे गया और हमारा अज्ञान प्रार्द्ध संख्यासे भी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

परेकाथा वो नाश हुआहै उसके कार्य्यकूं कहते हो कि उसी समय क्यों न जाता रहा शरीर पातके पीछे कार्य भी नाश होजावेगा औरभी बहुत दृष्टांतहैं वृक्ष कटनेके पीछे वैसाही हरा प्रतीत होताहै और किसी वस्त्र वा पात्रमें गन्ध रक्खीहो पीछे निकालने के भी कईघड़ी गन्ध बनी रहती है और किसीकूं स्वप्नमें सिंहने झड़पाया वो जाग उठा देखता है कि सिंह नहीं परंतु कंपा दोघड़ी पीछे जाती है। शंकाः- यो जो तुम भोग भोगतेहो ये ज्ञानकूं नष्ट करदेंगे। उत्तरः--जीते हुये चूहेने बिलाईको न मारा तो मरा क्या मारेगा और जैसे कोई वज्रलगने से न मरा क्यों वो तुलीकी तीरसे मरेगा जिस कालमें अज्ञान बटा-हुआ था उस समय तो ज्ञान नाश हुआ नहीं अबतो उस अज्ञान कूं ज्ञानने नाश करदिया उसका कार्य ये अन्न भक्षणादि तुच्छ पदार्थ ज्ञान कूं क्या नष्ट करैंगे। और दूसरे जो पुरुष चोर जारकूं जानताहै वे चोर जार उसके बुरे होने का प्रयत्न नहीं करते और डरते रहतेहैं और जो प्रयत्नकरेंभी तो वो चैतन्यहैं ऐसे ज्ञानी इन भोगरूप चोरों को जानताहै और तीसरे कोई स्त्री नेत्र शरीरादि करके तो सुन्दरहो परन्तु उसकी उपस्थ इंद्रियमें गरमीका बिकारहो जो उसविकारकूं जानताहै उसकूं उस स्त्रीके हाव भाव कटाक्ष नहीं मोहते न वो स्त्री उसके सामने हावभाव कटाक्ष करतीहै ऐसे ज्ञानी इस मायारूपी स्त्रीके अवगुणोंकूं जानताहै। शंका।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जो तुम सदा "ब्रह्माऽहमऽस्मि ब्रह्माऽहमऽस्मि" ऐसा अनुसंधान नकरते रहोगे तब जो ब्रह्मज्ञान नष्ट हो जावेगा। उत्तरः-तुम "ब्राह्मणोऽहम् ब्राह्मणोऽ हम्" इसका सदा अनुसंधान न करोगे तो भूल जावोगे जैसे तुम अपनी जाति कूं नहीं भूलते वैसे हमने एक वेर वस्तुका निश्चय करलिया है वो हमारा ज्ञान कैसे जाता रहैगा और आपका निश्चयतो झूंठा है एक युक्ति से जाता रहता है योभी कहता है कि मेरा शरीर रहै और योभी कहता है कि मैं ब्राह्मण हूं कितना विरोध है ऐसा निश्चय तो आपका बिना अनुसंधान के बना रहेगा और हमारा जो निश्चय है कि सहस्रों श्रुति, स्मृति, युक्ति और अनुभव करके और तुम सदृश वादियों के मतोंकूं खंडन करके जो निश्चय किया है वो बिना अनुसंधान के जाता रहैगा। शंकाः-जिनकूं शाप अनुग्रह की सामर्थ्य होतीहै वे ज्ञानी हैं। उत्तरः-शाप अनुग्रह ज्ञान का फल नहीं तपका फलहै। शंकाः-ज्ञान बिना तपके कैसे हुआ। उत्तरः-तप दो प्रकार का है एक तप शाप अनुग्रह की सामर्थ्य करा देता है और एक तप ज्ञानकूं उत्पन्न करता है। शंकाः-व्यास वशिष्ठ, सनकादि भी तो ज्ञानीहैं। उत्तरः-उनके दोनों प्रकारका तप है हमारे एकही है दूसरा तप न होनेमें कुछ ज्ञानी की क्षति नहींहै जैसे जौहरी वस्त्रादिकी परीक्षा न कर सके तो उस जौहरी की क्या क्षतिहै ऐसेही ज्ञानी गंडा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तावीज़ प्रेतादिकों के मंत्रादि न जानता हो तो क्या ज्ञानी की क्षतिहै तात्पर्य ऐसी ऐसी तर्कोंका खंडन बहुत वेदान्त-शास्त्रमें लिख रहाहै मुक्ति की इच्छावाला ऐसे २ वादोंमें बुद्धिको न समाप्तकरे केवल वेदवाक्यमें विश्वास करे और जो पुराणादि में जड़भरतादि लिखेहैं कोई कहे कि ऐसे ज्ञानी होते हैं तो क्या उसके मुखमें मारने के लिये श्रुति-रूप वज्र नहींहै तात्पर्य वेद ऐसाभी कहते हैं जैसे जड़-भरतादि हुये हैं और ऐसा भी कहतेहैं ज्ञानी अपनी अवस्था-वालोंके साथ विहार करता हुआ और सवारियों में बैठा-हुआ स्त्रियोंके साथ रमता हुआ वो ज्ञानी अपनी दृष्टिमें कुछ नहीं करताहै,वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य से आदि लेकर बहुत प्रसिद्ध हैं और जनक चूड़ालादि बहुत स्त्रीतक ज्ञानी हुये हैं क्या सब जड़भरतवत् आचरण करते थे तात्पर्य यों है मूर्ख लोग वे शास्त्रके एक २ देशकूं सुनकर वेद-शास्त्रके तात्पर्यकूं न जानकर कुछ २ बक्तेहैं उनका निश्चय उनके रहो हमको क्या काम है। हम सिद्धान्त कहते हैं प्र-थम तो जड़भरतादि भी खाना सोना आदि त्यागकरके काष्ठपाषाणवत् नहीं रहे संगकी भांतिसे उदासीन रहतेथे क्योंकि संगीलोगों करके बाध होजाताहै और निःसंग सुख-कूं प्राप्त होताहै इसलिये सदा सुखकी इच्छावालों ने संग त्यागदेना। ज्ञानकी परीक्षाके लिखे वैराग्य उपरति बोध कूं हेतु १ स्वरूप २ कार्य ३ अवधि ४ इन चार चार भेद

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करके लिखते हैं वैराग्य के हेतु आदि ये हैं ॥ शब्दादि विषयोंमें दोषदृष्टिहोनी १ त्यागदेनार फिर भोगोंमें दीनता न होनी ३ ब्रह्मलोक कूं तृणवत् समझना ४ उपरति के हेतु आदि ये हैं ॥ यम नियमादि १ अन्तःकरणका निरोध२ व्यवहार का बहुत कम होजाना अर्थात् खाने सोनेमें भी संकोच ३ सुषुप्तिवत् जाग्रत् अवस्था रहनी ॥ बोधके हेतु आदिये हैं ॥ श्रवणादि १ तत्त्वमिथ्या का जानलेना २ फिर ग्रंथिका उदय न होना अर्थात् देहादिमें अहंबुद्धि न होनी ३ जैसे प्रथम देहादि में अहम्बुद्धि थी वैसीही स्वरूपमें दृढ़बुद्धि होजानी४ मुक्तिकी इच्छा वालोंके वैराग्यादि के हेतु आदि तारतम्यता करके रहते हैं क्योंकि सबके कर्म एक प्रकार के नहीं इन सब में कि जो वैराग्यादि के हेतु आदि लिखेहैं उनमें तत्त्वमिथ्याका जान लेना जो बोधका स्वरूप लिखाहै योही मुक्तिका कारणहै और सब ज्ञानियों के योही एक रस है जो वैराग्यादि के हेतु आदि ऊपर लिखेहैं वैसे जो किसीके हों तो बहुत पुण्य का फल है उससे सिवाय कोई पुण्य नहीं और जो किसी प्रति बन्धु करके तीनों एक जगे न देखने में आवें तो उनके फल ऐसे होंगे कि वैराग्य उपराति तो पूर्णहो बोध किसी प्रतिबन्धसे नहो तो मुक्ति नहीं होगी।तपके बलसे ब्रह्म साकार की प्राप्ति होगी और जो बोध है वैराग्य उपराति इस जन्ममें न देखने में आवै तो मुक्ति निश्चय होगी, परन्तु जबतक यो शरीर रहेगा हर्ष-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शोकादि आभास मात्र बने रहैंगे बोधका स्वरूप सब ज्ञानियों के एक रसहै वैराग्य उपरति में तारतम्यता है जैसे १०० गौ दूध सबका एकरंग एक रस और व्यक्ति दुर्बलापन मोटापन स्वभावादि पृथक् २ ऐसे १०० ज्ञानी ज्ञान सबका एकरस और व्यवहार चलनसा भावादि सत्त्वादि गुणोंकी उपाधिसे पृथक् पृथक् अर्थात् किसीके सत्त्वगुण बहुत किसीके रजतम बहुतहैं सत्त्वगुणी शुकदेव, बामदेव, जड़भरत, सनकादि, और रजोगुणी जनक, चुड़ालादि और तमोगुणी दुर्वासादि सत्त्व रज तमोगुणी बहुत वर्तने से सत्त्वगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी कहे जाते हैं, परंतु तीनोंगुण सबके तारतम्यता करके वर्त्तते हैं ॥ ज्ञानके होने और वैराग्य उपरति सिद्धि लक्ष्मी आदिके न होनेमें यो व्यवस्थाहै ज्ञान उपरति वैराग्य सिद्धि लक्ष्मी आदि पुण्यका फलहै जिसके पूर्ण पुण्य हुआ जैसे जलसे घट भरा रहता है उसके तो वैराग्य उपरति ज्ञान सिद्धि लक्ष्मी आदि सब होतेहैं और जो केवल ज्ञान हो वैराग्यादि न हो तो उससे भी थोड़े पुण्यका फलहै और जो ज्ञान न हो वैराग्य उपरतिहो उससेभी थोड़े पुण्य का फल है और जो वैराग्य ज्ञान तीनों न हों सिद्धि लक्ष्मी आदि हों उस से भी थोड़े पुण्यका फलहै और जो सिद्धि वैराग्यादि न हो केवल लक्ष्मी राज्यादि हो उससे भी थोड़े पुण्य का फल है राजासे लगाकर कंगालपर्यन्त पुण्यकी तारतम्यता कल्पना

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कर लेनी पुण्यकी तारतम्यसे ज्ञानियों के वैराग्यकी भी तारतम्यता कल्पना कर लेनी जो तीनों वैराग्यादि किसी ज्ञानीके देखनेमें आवें तो वो ज्ञानी ऐसाहै जैसा मनुष्योंमें चक्रवर्ति राजा जैसे जड़भरत शुकादि हैं ऐसा नहीं समझना कि जो ऐसेही हों वोही ज्ञानी हैं और ऐसोहीं की मुक्ति होती है। शंकाः—फिर ऐसे पुरुषों की शास्त्रमें बहुत प्रशंसा क्यों लिखी है। उत्तरः—ऐसे पुरुषों कूं जीवनमुक्ति का बहु आनन्द रहताहै जैसे चक्रवर्ती राजाकूं मनुष्यानन्द बहुत रहता है और जैसे राजासे जो कमलक्ष्मी आदि वालेहैं उनकूं भी तो आनंद तारतम्यता करके रहताहै और वेभी तो मनुष्यही कहे जाते हैं। ऐसे वैराग्य उपरतिमें कम जो ज्ञानीहैं वेभी ज्ञानीहैं अज्ञानी नहीं। शंकाः-ज्ञानीके लक्षण शास्त्रमें ऐसे ऐसे लिखेहैं क्रोध,शोक, भय न होना, जितेन्द्रिय, क्षमा, वैराग्य, दया, निर्लोभ, दाता, सबका प्यारा होना॥

टी०—दाता होना अर्थात् अभय दानदेना अभय दान दो प्रकारका है। एक यो अपने शरीर वाणी मनसे किसी कूं भय न देना; दूसरे ज्ञानका उपदेश करके संसारके दुःखोंसे अभय करदेना॥

मू०। ये ज्ञानके चिह्नहैं ऐसे २ वाक्यों की क्या गति होगी। उत्तरः- ऐसे २ वाक्य प्रथम तो ज्ञान होनेके लिये और ज्ञानके पीछे जीवन्मुक्ति की सिद्धिके लिये ताकी-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

दमें हैं एकादशी के व्रतवत् नियम नहीं जो एकदाना भी अन्नका मुखमें जापड़े व्रत टूट जावे ऐसेही जो कभी किसी पापके उदय होनेसे ज्ञानीकूं काम क्रोध आजावे तो ज्ञानही जाता रहता जिस कालमें सनकादि महाज्ञानी श्रीनारायणजी के मिलने के लिये वैकुण्ठकूं गयेथे नारायण के पार्षदों ने जब उनकूं भीतर जानेके लिये मने किया तब उनको क्रोध आगया फिर शाप देदिया अर्थ से योंभी प्रतीत होताहै कामके बिना क्रोध नहीं आता विचारो ज्ञान उनका नहीं जाता रहा और यो जो शंका करे कि वे ईश्वरथे समर्थथे अर्थात् वे ईश्वरकी टीकारक कोटी में हैं तो मनुष्य कोटीमें ऐसी २ अनेक कथा पुराणों में वेदोंमें दुर्वासादि की प्रसिद्धहैं और दूसरे यो कैमुनिकन्याय है जो समर्थ पुरुषोंकूं ईश्वरोंकूं काम क्रोध आये तो जीवका तो यो अनादि स्वभावहै जीवको काम क्रोधके आजानेमें क्या आश्चर्यहै । शंकाः- ज्ञानीका दूसरेकूं उपदेश करनेसे क्या कामहै । उत्तरः- ज्ञानीकूं जगत् में योंही एक करनेके योग्यहै कि जैसे बने अज्ञानीकूं ब्रह्मतत्त्वका उपदेशकरे। शंकाः-श्रीभगवान् तो यों कहतेहैं कि-कर्मसंगी पुरुषोंकूं कर्मसे न हटावें । उत्तरः- श्रीभगवान्ने कर्मसंगी पुरुषोंका उसी जगह विशेषण देरक्खाहै कि अज्ञानी कर्मसंगीकूं ब्रह्मतत्त्वका उपदेश नकरे। शंकाः-ज्ञानियोंकी व्यवस्था तो ऐसी २ सुनी जातीहै

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कि जब उनको ज्ञान हुआ फिर वे किसी से न मिले मौन होकर उत्तराखण्डको चलेगये। उत्तरः-यो लक्षण अवधिका है कोई ऐसाभी हुआहो, परन्तु सबका नियम नहीं और दूसरे सत्ययुगादि ऐसे समयथे कि अस्थि आदिमें प्राण-बने रहतेथे और कुछ कविपुरुषोंका नियमहै कि बढ़ाकर लिखतेहैं और जो यो न मानो तो ग्रथोंका बनना उपदेश करना यो बिना प्रवृत्तिक कैसे बने। विद्याका लोप हुआ चाहिये वेद श्रीकृष्णचन्द्र महाराज कहतेहैं कि ज्ञानके लिये गुरुजीके पास जावे हे अर्जुन।तुमको वे गुरू उपदेश करेंगे देखिये जो प्रवर्त होंगे तो उपदेश करेंगे और जो बोलें बत-लावेंगे नहीं दृष्टांत युक्ति न देंगे अथवा उनका पताही न लगेगा तो बोध कैसे होगा वेद कहतेहैं कि आचार्यवान पुरुष ब्रह्म कूं जानताहै तात्पर्य योहीहै कि मूर्ख वेदशास्त्र-के हृदयकूं न जानकर कुछका कुछ बक्ताहै ऐसे २ सिद्धा-न्त शारीरक भाष्य पंचदशी आदि ग्रंथोंमें श्रुति स्मृति प्रमाण देदेकर सिद्धकर रक्खे हैं जिस किसीके संदेह हो वहांसे निश्चय करे और जिसकी गुरु वेदांतमें श्रद्धाहै वो तो संशयविपर्ययरहित होकर निश्चय मुक्त होगा ॥

इति श्रीआनन्दाऽमृतवेदान्तशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

जो किसी पुरुषकूं किसी पापके प्रतिबंधसे महावाक्यका

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अर्थ मेंनकर अपरोक्षज्ञान न होवे तो वो फिर साधनकरै प्रथमअध्याय सु जो विवेकादि चार साधन कहेहैं मुख्य सार वेही हैं उनहीं चार कूं आचार्योंने नाना प्रकारसे लाखों श्लोकोंमें और भाषामें कहा है उनहीं चारोंका अर्थ स्फुट होनेके लिये उनहीं चार साधनोंकूं अब और प्रकारके लिखतेहैं ज्ञानके साधन दो प्रकारके हैं अंतरंग १ बहिरंग २ अंतरंग मुख्यहै बहिरंग गौणहै बहिरंग साधन ये कहलाते हैं शौच, स्नान, सन्ध्यावन्दन वेदशास्त्रोंका पढ़ना, पाठ करना, तर्पण, हवन करना, अतिथि अभ्यागतका पूजन करना, सेवा करनी, अन्नदेना ऐसे २ औरभी बहुत नित्य कर्म हैं उनके न करने में पापहै करनेसे पापकी निर्वृत्ति होतीहै; और पुत्रादिके जन्मादि में जातिकर्म श्रद्धादि करने पूर्णमासी संक्रांत्यादिमें तीर्थोंमें जाना, स्नान दान करना, निष्काम यज्ञकरने ऐसे २ औरभी बहुत नैमित्त कर्महैं और कोई अपनेसे खोटा काम शास्त्रसे विरुद्ध होजावे उसकी निवृत्तिके लिये चांद्रायणादि व्रत और श्रीगंगाजीमेंस्नानादि करने ऐसे २ और भी प्रायश्चित्त कर्म हैं और बद्रीनारायणादि के दर्शन करने, तीर्थोंका सेवन करना, पाषाणादि मूर्तियों कूं पूजना परिक्रमा करनी, झांझ घंटादि बजाने, चौके धोती से रोटीखानी, यो खाना, यो न खाना इस बरतनमें खाना इस बरतनमें नखाना इसके हाथ का खाना, इसके हाथका न खाना, यो ब्राह्मण यो क्षत्री वर्णादि, यो ब्रह्मचारी, यो गृहस्थी आदि आश्रमी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इस प्रकारके औरभी बहुत बहिरङ्ग साधन हैं।पुराणोंमें धर्म शास्त्रादिमें उनका बहुत विस्तार है वहांसे सुनकर संपादन करे परम प्रयोजन उनका अन्तःकरण की शुद्धिहै बहिरंग प्रथम मन्दबुद्धिके लिये है।अन्तरंग बुद्धिमानके लियेहै बहिरंगसाधन अन्तरंग साधनों की इच्छा रखतेहैं अन्तरंग बहिरंगसाधनोंकी इच्छा नहीं रखते और ऐसा जो कहते हैं कि कर्मकांड और उपासनाकांड ज्ञानके साधन हैं वहां जो व्यवस्था है जो उपासना इस प्रकारकी है कि पाषाणादि मूर्त्तियों का पूजन करना और झांझ घंटा बजाने, परिक्रमा करनी औरभी बहुत ऐसी ऐसी उपासना का बहिरंग साधनोंमें अन्तर्भावहै और परमेश्वरका ध्यान करना प्रेमकरना विषयोंसे एककर चित्तकूं परमेश्वरमें लगाना ऐसी ऐसी उपासना का अन्तरंग साधनों में अन्तर्भाव है। अन्तरंग साधन ये कहलाते हैं मनमें मान नहीं रखना कि ऐसे पण्डित जातिमें ब्राह्मण धनवाले और अपने गुणोंकी औरोंसे श्लाघा करानेकी इच्छा न रखनी इसका नाम अमानित्वहै १ धर्मध्वज न होना, जो अपनेमें थोड़े गुणहों तो औरोंके सामने बहुत नहीं प्रकट करने ऐसा हम जानतेहैं ऐसीपूजा करते हैं ऐसे ऐसे पाषण्डों का त्याग करना इसका नाम अदंभित्व है २ मन वाणी शरीर से किसीकूं दुःख न देना इसका नाम अहिंसाहै३ बे प्रयोजन किसी ने आपकूं बुरा बोला अथवा मारभी दिया समर्थ होकर उसकूं कुछ न

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कहना यो समझना कि प्रारब्धका भोगहै इसका कुछ दोष नहीं इसका नाम क्षमाहै४प्रसन्न चेष्टा रखनी नम्र होकर चलना अकड़ ऐंठ कर न चलना नम्र बोलना मन्दमुसकान पूर्वक ऐसा बोले मानोमुखसे फूल झड़तेहैं दूसरेका क्षोभित हृदयभी शान्त होजावे इसका नाम कोमलताहै५ गुरूकी मन वाणी शरीरकरके उपासना करनी ६ व्यवहार में छल न करना अंतःकरणगत जो दोष हैं उनकूं दूरकरना इसका नाम अन्तरशौचहै और बहिःशौच जलमृत्तिका करके ७ सन्मार्गमें स्थित रहना जैसे जो जगत् में कहानी हैं ॥धर्म किये जो होवे हानि । तोभी न छोड़ धर्मकी बानि ॥एक इतिहासभी लिखतेहैं एक ब्राह्मण बाल्य अवस्था से ठाकुरसेवा करता था कोई उससे पाप बुद्धिपूर्वक नहीं बनाथा एकदिन उसकूं रस्ते में चार आदमियों ने घेरलिया जो कुछ उस पै था छीन लिया और कहा कि तुमकूं मारेंगे ब्राह्मण ने विचारा कि मैंने बाल्यअवस्था से ठाकुर सेवाकरीहै कोई पाप नहीं किया ये मुझकूं वृथा मारते हैं सो मारो परन्तु जो ये कहें तो ठाकुर जीको तो तीर्थमें पधार दूं कोई वहां पास जलाशय था उनसे आज्ञा लेकर ठाकुरजीका सिंहासन हाथमें लेकर कहा हेपरमेश्वर बाल्य अवस्था से आपकी सेवा करीथी आज उसका या फल है कि विनापाप मारा जाताहूं।वहां आकाशवाणी हुई।कि तुमने पूर्व जन्ममें इन चारोंको एक २ बेर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

माराथा यो पूजा का फल है जो तुमकूं ये चारों एकबेर मारतेहैं यो सुनकर चारों आदमी वहां गये बूझाकि तुम किससे बात करतेथे उसने कहा तुमकूं क्या कामहै जो मुझकूं मारना है तो मार दो बहुत बेर जो उन्होंने बूझा फिर सब व्यवस्था ठाकुरसेवादिकी सुनादी चारोंने उसकूं छोड़ दिया और जोकुछ उससे छीनाथा दे दिया और कहा कि हम चारों तेरे पिछले किये का इसलोक परलोकमें बदला नहीं चाहते ८ देहका निग्रह करना रात्रिका जो बीच उसमें डेढ़पहर सोना उससे सिवाय आसन पर सीधा स्नानादि क्रियाके बिना बैठकर श्रवणादि करते रहना ९ शब्दादि विषयों से वैराग्य करना १० अहंकार न करना कि मैं ऐसा वैराग्य वाला हूं ११ जन्म मृत्यु जरा व्याधिमेंदुःख और दोषभीहैं बारम्बार उनका अनुसंधान करते रहना क्योंकि जबतक शरीरकूं किसी रोगने नहीं ग्रसा श्रोत्रादि इन्द्रिय भी बने रहते हैं जरा भी न होवे तबतकही कुछ पुरुषार्थ हो सकता है कोई कहै कि साहब जब प्यास लगैगी तबहीं कुँआ खोदलेंगे पीछेकी बात किसने देखी है जैसे प्यास समय वो त्राहि त्राहि करक मरजाता है ऐसेही जो बने काममें मोक्षका उपायनहीं करते पछि वही व्यवस्था होतीहै १२ पुत्र दारादि में आसक्ति न करनी अनित्य जानकर प्रीतिका त्याग करना १३ पुत्रादिके दुःख सुख में यो अध्यासन करना किमैं सुखी दुःखीहूं १४

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इष्ट अनिष्टकी प्राप्तिमें समचित्त रहना क्योंकि लाभ हानि दिन रात्रि ऋतु युगादिवत् बदलतेरहतेहैं अष्टावक्रजी कहतेहैं कौनसी वो अवस्था और कालहै कि जिसमें प्राणियों को द्वंद्व, हर्ष, शोक, हानि, लाभ, सुख, दुःखादि नहीं रहते जो परायेवश होनेवाले कार्यहैं उनको जो प्रतीकार होता तो बलराम युधिष्ठिरादि दुःखकरके क्यों दुःखी होते १५ परमेश्वर के विषय अनन्य योग करके भक्ति करनी अर्थात् परमेश्वरके विना नहींहै भजनेकेयोग जिसभक्तिमें ऐसी अव्यभिचारिणी भक्ति करनी तात्पर्य सर्वात्मदृष्टि होना १६ एकांतदेश शुद्धचित्त का प्रसन्न करनेवालाहो जिसजगह सिंह सर्प चौरादि की भीति नहो और आपकूं स्त्री आदिं करके विक्षेप न होवे उस देशका सेवन करना १७ प्राकृत जो जन कि जो स्त्रीकासंग और खाना सोनादि इसीकूं कहते हैं कि इस शरीरहुयेका योही फलहै ऐसोंके समीप नहीं बैठना १८ वेदान्त शास्त्रके श्रवणादि विचारने में सदा लगे रहना तत्त्वं पदार्थों की जो शुद्धि उसी में निष्ठा रखनी तीसरे अध्याय में भी लिख आयेहैं कि ज्ञानकेहेतु श्रवणादि हैं ज्ञानके होनेमें ये मुख्य साधनहैं इसी बात कूं प्रथम तो वेद भगवान् ने कहा है फिर व्यासजीने भी सूत्र में कहाहै किबारम्बार श्रवण करना एकही वेर न करना पंचदशी कारभी कहते हैं कि मन वाणी आदिकूं तक सावकाशनहीं देना मरने सोने पर्यन्त

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वेदान्त शास्त्रकी चिंता करके कालकूं विचारना तात्पर्य श्रीकृष्ण श्रीशंकराचार्य्य भगवान् से आदि लेकर सब आचार्य इसी बातकूं सिद्ध करते हैं कि मुक्ति की इच्छवाले वेदान्त शास्त्र बारम्बार श्रवण करना वेदान्त शास्त्रके बिना और पुराण शास्त्रोंका श्रवण न करना इसका भी नियम करदिया है क्योंकि बुद्धि एकहै विचल न जावे वसिष्ठजी भी कहतेहैं कर्म वो है जो बन्धन के लिये नहो विद्या वोहै जो मुक्तिके लिये हो निःकाम कर्मके बिना और कर्मके बल आयासके लिये हैं ब्रह्मविद्याके बिना और न्यायशास्त्रादि चित्रकारी आदिवत् विद्याहै १९सबसे सिवाय इस देहका फल मुक्तिकूं समझना मुक्तिके साधनोंमें ऐसे प्रलय करना जैसे किसीके शरीरमें अग्नि लगजावे वस्त्र बाल जलनेलगे जैसे वो गंगा जींकूं दौड़ता है जो कोई रस्ते में एक बात भी करले अथवा लोभ देकर खड़ा रक्खे तो नहीं खड़ाहोता ऐसे संसारके तापोंमें तापित हुआ यो पुरुष ब्रह्मविद्या गंगाजीकूं जल्दी प्रसन्न करके प्राप्तहो स्त्री धन वस्त्रादिजो रचे हुये मायाके झूंठे अनित्य दुःखदायीई पदार्थहैं उनमें भोगबुद्धिकरके पतंगवत् नष्ट नहो २० ये बीस साधन श्रीकृष्णचन्द्रने गीता शास्त्रमें कहेहैं और २६ साधन दैवी सम्पत्के कहेहैं उनकूं भी-सुनो अभय होना किसी से इसलोक परलोक में भय न करना तात्पर्य पापात्माकूं भयहुआ करताहै १अन्तः-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ष्करणकूं भलेप्रकार शुद्ध करना २ ब्रह्मज्ञानका जो उपाय उसमें लगे रहना ३ दान करना यथाशक्ति कुछ अपने पास न हो तो अभय दानदेना ४ इन्द्रियों कूं अपने अपने विषयों से रोकना ५ द्रव्ययज्ञ चान्द्रायणव्रतादि तपयज्ञ उपयज्ञ पढ़ना पाठकरना यो यज्ञचित्तवृत्तिनिरोंधयोग यज्ञ ऐसे ऐसे यज्ञसे लगाकर ज्ञानयज्ञ पर्यन्त जैसाअपने कूं अधिकारहो करते रहना ६वेदशास्त्रोंका नित्यपढ़ना पाठकरना ७ अपने धर्म का अनुष्ठान करना ८ कोमलता ९ अहिंसा १० सत्य बोलना जो प्रत्यक्षादि प्रमाण करके भले प्रकार सिद्धकर लियाहै ११ क्रोध न करना तत्काल पश्चात्काल केवल दुःख का हेतुहै जिस समय क्रोध आवे वो समय किसी प्रकार बितावे पीछे विचारे जो उस समय में ऐसा कहता करता तो क्याहोता १२ त्याग करना १३ चित्त कूं शान्त करना १४ पीछे किसीके अवगुण नहीं कहते लिखा है कि जो किया हुआ अवगुणकिसी का कहे तो बराबर का पापी होता है और जो कुछ भला कर बढ़ा कर कहे तो दूना पापी होता है जो अपने सामने किसीके अवगुण कहे प्रथम उसीकूं पापी जाने १५ दया अर्थात् किसी कूं दुःख न देना और जो बने तो दूसर का निवृत्तकर देना १६ लोलुप न होना अर्थात् कुछ पदार्थके लिये पामरोंके सामने दीनता न करनी १७ क्रूर कठोर चित्त न होना १८ खोटे कामों में

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

लोकलज्जा रखनी वहां यो न समझनाकि मेरे निन्दा स्तुति मान अपमान बराबरहैं १९ चपल न होना अर्थात् वृथा क्रिया न करनी २० तेजस्वी रहना राजा आदि के छायामें न दबना जैसे और आदमी हैं ऐसेवेभीहैं २१ क्षमा २२ धैर्य सत्वगुणी अर्थात् दुःख सुख भूंख प्यास लाभ हान्यादि में चित्त कूं स्थिर करना २३ शौच २४ किसीसे द्रोह न करना २५ चारगुण सम्पादन करने से चित्त प्रसन्न होजाता है चित्तके प्रसन्न होने से समस्त दुःख नाश होजाते हैं जो कि आपसे जाति विद्या में बड़ेहैं उन से द्वेष न करना १ बराबरकेसे मित्रता रखनी २ छोटों पर दया करुणा करनी ३ पापी चौर जारों की उपेक्षा करनी ४ आत्माके विषय पूजा को अभिमान न रखना कि हम पूजा के योग्य हैं जो दैवी सम्पत्को पुरुष है उसमें ये गुण स्वभाव करके रहते हैं जिसमें ये गुण होंगे वो निश्चय मुक्त होवेगा और आसुरी सम्पत् अवगुण दंभ दर्प काम क्रोध लोभादि बहुत हैं गीताशास्त्र में लिखेहैं कुछ थोड़े से इस ग्रन्थमें भी नवें अध्याय में लिखे हैं वे बंधकेलिये हैं जिसकूं मुक्त होना है वहां से निश्चय करके उनसे वर्जित रहै दैवीसम्पत् के अनुष्ठान करनेसे आसुरी सम्पत्का तिरस्कार होजाताहै आसुरी सम्पत्के वर्जने से दैवीसम्पत् के गुणोंका अनुष्ठान होजाताहै जो लक्षण स्वभाव से ज्ञानीके रहते हैं और साधककूं प्रयत्न करने

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

से सिद्ध होतेहैं उनकूं इस प्रश्नके उत्तरमें लिखते हैं । प्रश्नः- कैसे पुरुषकूं लोग ज्ञानी कहतेहैं १ और कैसे वो ज्ञानी बोलताहै २ बैठता है ३ चलता है ४। उत्तरः- जिस काल में यो पुरुष जितनी मनमें वासना है सबकूं त्याग करके निजानन्द करके तुष्ट रहताहै दुःखों में दुःख सुख में सुख नहीं मानता दूर होगये हैं भयाराम क्रोध जिसके उसकूं ज्ञानी कहते हैं १ शुभ अशुभ को प्राप्त होकर किसी जगह प्रीति नहीं करता प्रिय कूंप्राप्त होकर हर्ष नहीं करता अप्रियकूं प्राप्त होकर शोक नहीं करता साक्षी हुआ बोलता है २ मुक्तिमें यत्नकरनेवाले विचारवान् के मनकूंभी जो इन्द्रिय हरलेते हैं उन सब इन्द्रियोंकूं रोककर परमेश्वर परायण हुआ बैठा रहता है ३ सारी कामनाका त्याग करके निर्माण हुआ और जो कामना फिर प्राप्तहों उनमें ममताइच्छा नहीं करता हुआ निरहंकार हुआ विचरता रहता है ४ फिर भी ज्ञानी का लक्षण और प्रकार करके सुनो यो ज्ञानी का लक्षण स्वसंवेद और परवेदभी है उदासीनवत् स्थित हुआ ॥

टी०--उदासीनवत् लिखनेमें यो शंकाहै कि उदासीनही क्योंन कहा समाधान योहै दो मनुष्य झगड़ा करने वालोंमें कोई तीसरा भी उदासीन चला आवे वो देखता रहै चला जावे तो झगड़े करने वालोंकी कुछ हानि नहीं होती परंतु आत्मा उदासीनवत् तीन गुणोंके झगड़े का द्रष्टाहै जो चला जावे अर्थात् उनका अभिमान छोड़दें तौ झगडे करने वाले भी नहीं रहते इसालियेउदासीनवत् कहा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मू०—गुणों करके नहीं विचलता है यो विचारता रहता है कि गुणवर्त रहेहैं समान है पाषाण सोना निंदा स्तुति मित्र शत्रु मान अपमान जिसके सारे आरम्भोंके त्याग करने का स्वभावहै जिसका उसकूं ज्ञानी गुणातीत स्थितप्रज्ञ कहते हैं और जो ज्ञानी का केवल स्वसंवेद्य लक्षण है ॥ सत्वगुणका जो कार्य प्रकाशादि रजोगुणका जो कार्य प्रवृत्ति आदि तमोगुणका जो कार्य मोहादि जो अपने आप प्रारब्ध के बलसे प्राप्तहों तब कुछ हर्ष शोक नहीं करता जो निवृत्त होजावे तब कुछ हर्ष शोक नहीं करता मुक्तिकी इच्छावाले के तो सत्वगुणमें राग हर्ष और रज तमोगुण में द्वेष शोक होता है ऐसे २ साधन गीता शास्त्रादिमें बहुत लिखे हैं तात्पर्य योहै जैसे बने शरीर इन्द्रिय प्राण अंतःकरणकूं नित्य प्रतिदिन सिवाय २ अभ्यास करके निरोध करे बशिष्ठजी कहते हैं जैसे बने हाथसे हाथ दांतसे दांत मलकर हाहाकारादि शब्द करके मनकूं वशकरे विषयाकार अन्तःकरण की वृत्ति सूक्ष्म करने से जो अपना स्वरूप हुआ, हुआ नहीं प्रतीत होता सो स्वरूप ज्ञानद्वारा अपरोक्षहोजाताहै हुई वस्तु न प्रतीत होतीहो इसमें दृष्टान्त कहते हैं जैसे १० लड़कों में पढ़ता हुआ किसी का लड़का उस लड़के का शब्द बाहर से पृथक् भले प्रकार नहीं प्रतीत होता अर्थात् उसकूं उसका पिता दूसरेसे यो नहीं कह सक्ता कि यो मेरा लड़का पढ़ताहै

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ऐसेही जिसके इन्द्रियादि अपने अपने विषयोंमें प्रवर्त्त होरहे हों उसकूं ज्ञान होना कठिनहै जैसे जो वे ९ लड़के पढ़ने से चुप होजावें अथवा शनैः शनैः पढ़ैं और वो लड़का अपने स्वभावके अनुसार पढ़ता रहै तब लड़केका शब्द निश्चय होसक्ता है ऐसेही जो विषयाकार अन्तःकरण की वृत्ति सूक्ष्म होजावे तब अपना स्वरूप भलेप्रकार प्रतीत होसक्ता है इसलिये अवश्य अन्तःकरण की वृत्ति सूक्ष्म करदेनी योग्य है इन्द्रियोंके रोकने से अन्तःकरणकी वृत्ति सूक्ष्म होतीहै इसमें भी दृष्टांत कहतेहैं जैसे किसी तालाब में दश गूल लग रहीहो उसकूं जो सुखाना हो तो प्रथम गूल बन्दकरे फिर सूर्यके तपनेसे तालाब सूखजाताहै ऐसे प्रथम इन्द्रियों कूं निरोध करे फिर विचाररूप सूर्य तपावे इसप्रकार अन्तःकरणकी वृत्ति सूक्ष्म होसक्तीहै भला इसबातकी परीक्षाके लिये प्रथम महीना भरतो ऐसा अभ्यास कर देखो कितनाभेद पड़ताहै जिसके अभ्यास करनेसे नित्य प्रतिदिन उसका फल करामलकवत् प्रतीत होताहो फिर उसकूं न करो तो कहो उससे सिवाय और कौन पशुहै ॥ अन्तःकरणकी वृत्तियोंका सूक्ष्म होजाना इसीकूं मनोनाश कहतेहैं ऐसे २ साधनों करकेयुक्त जो पुरुष सो ज्ञानद्वारा अनायास निरतिशय आनन्दकूं प्राप्त होताहै ॥

इति श्रीआनन्दाऽमृतवर्षिण्यां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अथ पंचमोऽध्यायः ॥

सत्त्वगुणके बढ़ाने से रजोगुण तमोगुणके कम करने से ज्ञान द्वारा अपने स्वरूप की प्राप्ति होतीहै इसलिये सत्त्वगुणके बढ़ाने रज तमोगुण कम करने के लिये तीनों गुणों का लक्षण लिखतेहैं जिस प्रकार ये तीनों गुण देहके विषय आत्माकूं बन्धन करतेहैं सो सुनो सत्वगुण निर्मल होने से प्रकाशक शान्त रूपहै कोई उपद्रव उसमें नहीं शान्तरूप होने से जो अपना कार्य सुख उसके साथ बन्धन करताहै और प्रकाशक होनेसे प्रकाशकका कार्य जो ज्ञान उसके साथ आत्माकूं बन्धन करताहै मैं सुखी मैं ज्ञानी ये मनके धर्महैं आत्मामें जोड़ देता है रजोगुण का कार्य और बन्धन प्रकार लिखतेहैंः—रजोगुण रागात्मक अर्थात् रागहै आत्मा स्वरूप जिसका और तृष्णा संगकी उत्पत्ति है जिससे सो रजोगुण आत्माकूं कर्मोंमें संग आ० ॥

टी०—जो वस्तु प्राप्त नहीं उसमें अभिलाषारहनी तृष्णा प्राप्त वस्तु में विशेष आसक्ति होनी संग ॥

मू०—शक्ति करके बन्धन करता रहै तमोगुण तमरूप है सब प्राणियों कूं मोह करने वाला है सो तमोगुण प्रमाद निद्रा आलस्यादि करके बन्धन करता है सत्त्व आदि अपने २ आविर्भाव में जो करतेहैं उनकी शक्तिकूं दिखलाते हैं जिससमय रज तमोगुणकूं तिरोभाव करके सत्त्वगुण आ-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

विर्भाव होताहै सो सत्त्व दुःख शोकादिके कारणहुये सन्तेभी सुखके अभिमुखकरदेताहै रजोगुण सुखादिके कारणहुये सन्ते भी कामोंमें लगा देताहै तमोगुण शास्त्रजन्यज्ञानकूं ढक्करके सुखादिके कारणहुये सन्तेभी प्रमादादिमें जोड़ देताहै महत पुरुष पूर्व संस्कारसे मिले भी उन्होंने उपदेश भी किया उपदेश समय चित्त प्रमादमें लगा रहा जिस हेतुसे वोही तमोगुणहै महात्माने जो कहा उस अर्थकूं न धारण किया जिस हेतुसे वोही प्रमाद है यो नियमहै कि जब सत्त्वका आविर्भाव होताहै तब रज तम तिरोभाव होजातेहैं जब रजोगुणका आविर्भाव होताहै तब सत्त्वतम तिरोभाव होजातेहैं जब तमोगुणका आविर्भाव होताहै तब सत्त्व रज तिरोभाव होजाते हैं जिस कालमें सत्त्वादि देहमें बढ़रहतेहैं उनका स्वरूप लिखते हैं इस शरीरके सारे-द्वारों में जिस समय प्रकाश होता है और अन्तःकरण में सुखका आविर्भाव होताहै इस चिह्न से जानना कि अब सत्त्वगुण बढ़ाहुआ है ऐसेही लोभ प्रवृत्ति कर्मोंका आरम्भ अंश मस्पृहा ऐसे ऐसे चिह्न करके जाने कि अब रजोगुण बढ़रहाहै और प्रकाश अप्रवृत्तिप्रमाद मोहादिके आविर्भाव-में यो जानेकि अब तमोगुण बढ़रहाहै अन्तकाल में जो सत्त्व गुणादि का आविर्भाव हो तो क्या २ फल होता है सोई लिखते हैं जो अन्तकाल में सत्त्वगुण बढ़ाहोवे तो यो देहधारी जीव इसदेह कूं त्यागकरके जो कि पुण्यलोकहै

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जहां मल नहींहै सुख भोगनेके स्थानहैं उनकूं प्राप्तहोता-
है और रजोगुणमें मरकरके कर्मसंगी मनुष्यों में उत्पन्न
होताहै तमोगुणमें मरकरके पशु आदि मूढ़योनि में उत्पन्न
होताहै जिस हेतुसे इस शरीर में अपने आप सत्त्वादि गुण
आविर्भावहोते हैं उसका कारण कहते हैं निर्मल फल जो
ज्ञानसुख सो पिछले सत्त्वगुणी कर्मका फल है रजोगुणी
कर्मका फल दुःखादि है तमोगुणी कर्मका फल अज्ञाना-
दि है सत्त्वगुणसे ज्ञानादि होतेहैं रजोगुणसे लोभादि हो-
तेहैं प्रमाद मोहादि तमोगुणसे होते हैं सत्त्वगुणी आदि
पुरुषोंकूं देह के पीछे क्या फल होताहै प्रथमतो यो कहाथा
अन्तकाल में जो गुण बढ़ाहोवे उसका ऐसा फल होताहै
यहां तारतम्यता का विचार है जे सत्त्वगुणी हैं वे अपने
गुणकी तारतम्यता से ऊपरके लोकों कूं प्राप्त होंगे
जैसे इसलोक में ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्रादिकी और
राजा मंत्री आदिकी तारतम्यता है ऐसेही ऊपर भी
देवता गन्धर्व्वादि ब्रह्मलोकादि लोकों की तारतम्य-
ता है जितनी यहां मनुष्य लोकमें जिसके सत्त्वगुण की
वृत्ति सिवाय रहीहै वो उसी लेखेसे ऊपर के लोकोंकूं प्रा-
प्तहोगा इसीप्रकार जो गुणी मनुष्य लोकमें ब्राह्मण और
चक्रवर्त्ति राजासे लगाकर चांडाल कंगाल पर्यन्त उत्पन्न
होवेगा और तमोगुणी पशु आदि योनियों में अर्थात् कीट
आदि सर्पादिसे लेकर गोहंसादिपर्यन्त योनियों में उत्पन्न

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

होवेगा और जो ज्ञानीहैं वो गुणातीत हैं मुक्त होवेगा वो यों जानताहै कि मैं इन गुणोंसे पृथक्हूं गुणही कर्त्ता है मैं अकर्त्ताहूं गुणोंका द्रष्टा साक्षीहूं परमेश्वर कहतेहैं गुणातीत मेरे भावकूं प्राप्त होवेगा तात्पर्य्य मुक्त होवेगा॥ देवता की पूजा करने और यज्ञ आदि दान तपादि करनेसे अन्नके खानेसे ऐसी ऐसी बहुत बातें हैं सत्त्वादिकी परीक्षा होतीहै तात्पर्य जो सत्वगुणी देवता की पूजा करे तो जानना कि यो सत्त्वगुणी है ऐसेही रज तमोगुणी की कल्पना करलेनी और ऐसेही यज्ञदानादि में समझ लेना सत्त्वगुण पूजा दानादि करने से सत्वगुण बढताहै इसलिये रजो गुणी तमोगुणी सम्बन्धी पूजादि त्याग देने के लिये सत्त्वगुणी सम्बन्धी पूजादि सेवन करनेके लिये पूजादिकूं सत्त्व रज तमोगुण भेद करके लिखते हैं॥ ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य, शक्ति गणेशादिके यजन करनेवाले सत्त्वगुणी हैं यक्षादि के यजन करनेवाले रजोगुणी हैं भूत प्रेतादिके यजन करने वाले तमोगुणी हैं रजोगुणी तमोगुणी ऐसा ऐसा तप करते हैं कि शास्त्र में तो उसका विधान नहीं और प्राणियोंकूं भय का देनेवाला घोर शरीर कूं खेद करनेवाला मूर्ख वृथा पाषण्डकरके ऐसा तप करते हैं हेतु उसका यों है कि काम राग दम्भ अहङ्कारादि करके युक्त हैं जैसे कि नास्तिकादिके व्रतादि हैं इस समय में बहुत प्रसिद्ध हैं लक्षण उनके श्रीतुलसीदास जीने रामायण में लिखे हैं तात्पर्य्य जो

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शास्त्रने नहीं विधान किया सो पाषण्डहै शास्त्रकी विधिसे क-
रना तप आदि सत्वगुणी हैं भोजन का भेद कहते हैं:-रस-
वाला अन्न घृत शर्करा करके युक्त और भोजनके पीछे
शरीरमें अपने रसकरके चिरकाल स्थिररहे और स्निग्ध
कोमलतर और जिसके देखनेसे चित्तप्रसन्न होजावे देखते-
ही मन अंगीकार कर लेवे ऐसा अन्न अवस्था उत्साह श-
क्ति आरोग्य का बढ़ानेवाला सत्वगुणी कूं प्रियहै यज्ञ में
ऐसा अन्न देना योग्यहै १ अति कटु अम्ल लवण उष्ण तीक्ष्ण
रूक्ष और दाह करनेवाला ऐसा अन्न दुःख शोक रोगका बढ़ा
नेवाला है और भोजन के पीछे भी दुर्मन करने वाला रजो
गुणी कूं प्रियहै अति शब्द सबके साथ जोड़देना २ जिसकूं
बने हुये पहर बीत जावें और गत रस ठंढा होजावे और
जिसमें दुर्गन्ध आवे बासी जूंठा शास्त्रकरके निन्दित ऐसा
अन्न तमोगुणीहै ३ यज्ञका भेद कहतेहैं:-फलकी इच्छा
नहींहै जिन्होंके योंही विचार करके कि यज्ञ करना वेद-
विहित है हमकूं करना योग्य है इसप्रकार मनकूं समाधान
करके जो यज्ञकरतेहैं सो यज्ञ सत्वगुणी है १ फलका उद्देश
करके दंभ करके जो यज्ञ करते हैं सो रजोगुणी है २ शास्त्र
विधि करके हीन रजोगुणी तमोगुणी अन्न है जिस यज्ञमें मंत्र
दक्षिणा करके हीन श्रद्धा करके रहित जो यज्ञ सो तमोगुणी
है ३ तपकूं आगे सत्वादि भेद करके लिखेंगे प्रथम तपकूं मन-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वाणी शरीर भेद करके लिखते हैं:-देवता ब्राह्मण गुरु और कोई महात्मा उनका पूजन करना कोमलरहना हिंसा न करनि पवित्र ब्रह्मचर्य रहना इसकूं शारीरक तप कहते हैं १ मैथुन के आठअंग हैं सबसे वर्जित रहना इसका नाम ब्रह्मचर्य है रागबुद्धि करके स्त्रीका स्मरण करना १ कीर्तन करना २ हांसी चौहल करना ३ भले प्रकार दृष्टि जमाकर देखना ४ गुप्त एकान्तमें बात करनी ५ मनमें संकल्प करना कि यो कैसे प्राप्तहो ६ यो निश्चय करना कि हम इससे संग करैंगे ७ साक्षात् भ्रष्ट होजाना ८ राग पद सब के साथ जोड़ देना ऐसा वचन बोलना दूसरे कूं उद्वेग न करने सत्यहो उसकूं प्यारा लगे परिणाम में सुखका करनेवाला थोड़े अक्षरोंमें कहना वेद शास्त्रके पढ़ने पाठका अभ्यास रखना इसकूं वाणी का तप कहते हैं २ मनकी प्रसन्नता अक्रूरता मनन करना मनकूं विषयोंसे निरोध करना व्यवहार में माया न करनी इसकूं मानसतप कहते हैं ३ इस तीन प्रकार के तपकूं सात्विकादि भेदकरके तीन प्रकार का कहते हैं एकाग्रचित्त करके फल की इच्छा न करके परम श्रद्धा करके ऐसा जो तीनप्रकारका तप कियाहै इसकूं सात्त्विक कहतेहैं १ जिन्हों ने सत्कार के लिये किये साधु हैं मान और पूजाके लिये दंभ करके जो तप किया है सो अनित्य होनेसे रजोगुणीहै २ बिना विवेक के दुराग्रह करके आत्मा कूं पीड़ा करके अथवा दूसरे के नाशके लिये जो तप करतेहैं सो

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तमोगुणी है ३ दानका भेद कहते हैं हमकूं देना योग्यहै इस बुद्धि करके सुन्दर देश काल में अनुपकारी सुपात्रों कूं जो दान देना सो सत्त्वगुणी १ जो प्रत्युपकारी कूं वा फलका उद्देश करके वा चित्त में क्लेश करके जो दान देना सो रजोगुणी २ अपात्रोंकूं वा अदेश काल में देना और जो सुपुत्रों कूं भी देना तो असत्कार अवज्ञा करके देना यो दान तमोगुणी है ३ कर्मकाभेद कहते हैं फलकी इच्छा न करके यो विचार कर कि कर्मकरना वेदशास्त्र की आज्ञा है नित्य करना चाहिये राग द्वेषके विना अभिनिवेश न रखकर जोकर्म कियाहै सो सत्त्वगुणी १ फलकी इच्छा करके अहंकार करके बहुत आयास करके जो कर्म किया सो रजोगुणी २ पश्चात् भावी धनादि का व्यय हिंसा अपना बल इनकूं नहीं विचार करके केवल मोहसे जो कर्मका आरम्भ करना सो कर्म तमोगुणी ३ कर्त्ताका भेद कहते हैं त्यागदियाहै अभिनिवेश कर्ममें जिसने और गर्वकी जो बात बोलनी उससे रहित धैर्य उत्साह वाला कर्मकी सिद्धि असिद्धिमें निर्विकार ऐसा कर्मकर्त्ता सत्वगुणी १ रागी फलकी इच्छावाला लोभी हिंसात्मक अपवित्र हर्ष शोक करके युक्त ऐसा कर्मकर्त्ता रजोगुणी २ प्राकृत अनम्र अवगुणकी शक्तिकूं छिपानेवाला आलस्य स्वभाव वाला शोकशील दीर्घसूत्री अर्थात् घड़ीके कामकूं महीना लगावे ऐसा कर्मकर्त्ता तमोगुणी ३ सुखका भेद

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कहते हैं तम रजोगुणी वृत्तियों का निरोध करकर जो सत्त्वगण बढ़ता है कार्य उसका शांति संतोष निर्वैरता वेचाह कोमलतादि है उस कालमें जो अंतःकरण में सुख होताहै सो सत्त्वगुणी हैं प्रथम अन्तःकरण निरोध के समय तो यो विषकी सदृश प्रतीत होताहै परन्तु थोड़ेदिनोंतक पीछे तो सदा अमृतकी सदृशहै १ इन्द्रियोंका विषयों के साथ संबन्ध होनेसे अर्थात् खाने देखने मैथुनादिसे जो सुख होताहै सो रजोगुणी उस क्षणमें तो अमृतकी सदृश प्रतीत होताहै पीछे तो विषकी सदृशहै २ निद्रा आलस्य मनोराज्यादिसे जो सुख होताहै सो तमोगुणी वह इसलोक का न परलोक का केवल आत्माकूं मोहनेवालाहै तात्पर्य इसलोक स्वर्गादिमें व देवताओं में ऐसा कोई नहीं एक शुद्ध प्रत्यंगात्मा के विना कि जो इन गुणोंसे रहितहो त्याग ज्ञान बुद्धि धैर्य श्रद्धादि सत्त्वादि भेदसे गीताशास्त्रमें भले प्रकार लिखेहैं और जितना भेद ऊपर लिखा है उनकाभी अर्थ गीतादि के श्रवण से निश्चय होसक्ता है जितनी वेद-शास्त्रोंकि आज्ञा हैकी यो करना यो न करना सबका तात्पर्य यो है कि जिसके करनेसे रज तमोगण बढ़तेहैं वह काम न करना और जिसके करनेसे सत्त्वगुण बढ़ता है वह काम करना बुद्धिमानको विचारना चाहिये कि प्रातःकालादि स्नान ध्यानादि करनेसे रज तमोगुण का नाश होताहै वा नहीं जो जाने कि होता है तो सदा जैसे बने वैसेही

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शास्त्र विहित कर्मोंको करना योग्यहै जिस कालमें रजतमोगुणकी वृत्तियोंका तिरस्कार और सत्त्वगुण की वृत्तियों का आविर्भाव भले प्रकार होजावेगा उस कालमें यो मेरेकूं करना योग्यहै यो अयोग्य है यो रस्ता बन्धदुःखादिका है यो रस्ता सुख मुक्तिका है सब जान जावेगा और वशिष्ठ व्यासादि कूं जो यो समर्थहै सब भूत भविष्यत्काल की व्यवस्था कहदेनी यों सत्त्वगुणका प्रताप ह जिसके जितना सिवाय सत्त्वगुण होगा उसके उतनाहीं सिवाय प्रकाश होगा तात्पर्य सत्त्वगुणके बढ़ानेसे सिद्ध स्वर्ग लक्ष्मी आदि भी प्राप्ति होनी बहुत सहजहै और सत्त्वगुणके बढ़नेसे ज्ञानद्वारा मुक्तहोजाता है यों मुख्य फल है ॥

इति श्रीआनन्दामृतवर्षिण्यांपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

प्रथम साधन अवस्थामें कर्म उपासना करनी योग्य है ज्ञान में समुच्चय न करना अर्थात् कर्म उपासना ज्ञान तीनों मिलकर मुक्ति होतीहै ऐसा न विचारना श्रीशंकराचार्य महाराजने गीताभाष्यादि ग्रन्थों में सब समुच्चय का खण्डन भले प्रकार प्रमाणपूर्वक कियाहै तात्पर्य इस बात कूं सिद्ध किया है केवल ज्ञान से मुक्ति होतीहै ज्ञानकूं

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कर्मउपासनाकी इच्छा नहीं कर्म उपासना कूं ज्ञान की इच्छा है तात्पर्य विना ज्ञान कर्मउपासना से मुक्तिनहीं होती यहां भी इसी बात कूं सिद्ध करते हैं केवल ज्ञानसे मुक्ति होतीहै।शंका। तप योग यज्ञ स्नान व्रतादि का फल मुक्ति सुना जाताहै उनकी क्या गति होगी। उत्तर। तप योगादि परम्परा करके मुक्ति के साधन हैं ज्ञान तो साक्षात् स्वतंत्र मुक्ति का साधन है योही बात श्रीरामचन्द्रजीने भी लक्ष्मणजीके प्रति रामगीता में कही है वे जो कर्म उपासनावाले केवल कर्मउपासनासे मुक्ति कहतेहैं उनसे बूझनायोग्यहै कि वेदकी हजारों श्रुति द्वैतपर हैं उसकी क्या गतिहै कर्मउपासनावाले जो बूझे कर्मउपासनापर जो हजारों श्रुतिहैं उनकी क्या गतिहै इस प्रश्नके उत्तर में ब्रह्मवादी तो यों कहतेहैं कि कर्मकरने से अन्तष्करण शुद्ध होताहै उपासनासे चित्तकी एकाग्रता होती है यों उनका परम प्रयोजन है फिर ज्ञानद्वारा मुक्ति होती है। तदुक्तम्॥
धर्मसे विरति योगसे ज्ञाना। ज्ञानसे मोक्षपद वेदवखाना॥
यों शास्त्रार्थदिग्विजय शारीरकभाष्यादि ग्रन्थों में बहुत है जो बहुत चर्चा करे वह उन ग्रन्थों का श्रवण करे यहां सिद्धांत लिखते हैं केवल ज्ञान मुक्तिका साधना है उसमें यों दृष्टांत है जैसे पाकक्रियामें लकड़ी जल वर्तनादि परम्परा करके गौण साधन है ऐसेही कर्मउपासना मुक्ति को गौण साधनहै ज्ञान तो साक्षात् मुक्ति का साधन है जो ऐसी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शंका करे पाकक्रिया में अग्नि गौण रहो जल वर्तनादि मुख्य हैं दृष्टांत में यों आया कर्म मुख्य है ज्ञान गौणहै।उत्तर उसका यों है अविद्या और कर्मका विरोध नहीं कर्मभी जड अविद्याभी जड़ है अन्धकार कूं अन्धकार नहीं दूर कर सक्ता विद्या ज्ञानरूप है योही ज्ञान अज्ञानकूं दूरकर सक्ताहै जैसे प्रकाश अंधकारकूं इस हेतुसे ज्ञान गौण नहीं होसक्ता। तदुक्तम्॥ हुयेज्ञान वरु मिटे न मोहू। तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू। शंका। कर्मगौण रहो ज्ञान मुख्य रहो उपासना कहां गई। उत्तर। जो ऐसी उपासनाहै कि मैं ब्रह्म हूं अर्थात् अभेद उपासना का तो ज्ञानमें अन्तर्भाव है और दासोहम् अर्थात् भेद उपासना का कर्ममें अंतर्भाव है इस प्रक्रिया में ज्ञान कर्म दोही हैं। शंका। आत्मा तो सब शरीरों में परिच्छिन्न प्रतीत होताहै आत्माकूं पूर्णता कैसेहै। उत्तर। परिच्छिन्नवत् आत्मा अज्ञानसे प्रतीत होताहै अविद्याके नाश होनेसे आत्मा पूर्ण जैसाहै वैसाही प्रतीत होने लगता है जैसे सूर्यके आगे बादल होनेसे वा मंदिर आदिकी उपाधिसे धूप परिच्छिन्न प्रतीत होतीहै बादल मकानकी उपाधि दूर होनेसे पूर्ण प्रकाश होजाता है जो आत्माजीव अज्ञान का जो कार्य देहादि में अहंबुद्धि इस करके आपकूं कर्त्ता भोक्ता मानकर मैला होरहाहै ज्ञानके अभ्याससे निर्मल होजाताहै। शंका। जो ज्ञान बना रहा तो अद्वैत की असिद्धिहै। उत्तर। ज्ञानके

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अभ्याससे प्रगट होता है जो वृत्तिज्ञान सों अज्ञानकूं नाश करके और आत्माकूं निर्मल करके आपभी नाश होजाती है जैसे कतकरेणू जलके मलकूं दूर करके आपभी नाश होजातीहै।शंका।आत्मा ज्ञान रूपहै वहां अज्ञान कैसे रहा। उत्तर। ज्ञान स्वरूप आत्मा अज्ञानका विरोधी नहीं वृत्ति ज्ञान अज्ञान का विरोधीहै जैसे बांसमें अग्नि रहती है परंतु उस की विरोधी नहीं मथन करनेसे उत्पन्न होती है जो अग्नि सो विरोधी है।शंका।यो संसार प्रत्यक्ष दीखताहै इसकूं झूंठा कैसे कहतेहो। उत्तर। संसार स्वप्नकी तुल्यहै जैसे स्वप्न अपने कालमें सत्यवत् प्रतीत होताहै जाग्रत में असत्यवत् प्रतीत होताहै सत्य असत्यवत् प्रतीत होताहै परमार्थ में दोनों प्रकार नहीं और जैसे देखने मैथुनादिसे जाग्रतमें दुःख सुख होताहै वैसाही स्वप्नमें दुःख सुख होताहै और जैसे स्वप्नके पदार्थ अनित्य हैं वैसेही जाग्रतके पदार्थ अनित्यहैं तात्पर्य भ्रान्ति कालमें जबतक जगत् सच्चा सा प्रतीत होताहै कि जब तक अपना स्वरूप सच्चिदानन्द ब्रह्मसे अभिन्न सबका अधिष्ठान नहीं जाना जैसे रजतकी जबतक भ्रमसे प्रतीतहै तबतक शुक्तिके विशेष गुण नील पृष्ठ त्रिकोणादिनहीं निश्चयकिये सत् चित्रूप आत्मामें सब प्रपञ्च कल्पित है जैसे सोने में झूमके बाली आदि कल्पितहैं और जैसे घटमकानादिकी उपाधिसे महाकाश पृथक् २ घटाकाश मठाकाश बनीवाच्छिन्न वृक्षावच्छिन्नआ-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

काश कहा जाताहै ऐसेही आत्मदेहोंकी उपाधिसे परिच्छिन्न कहाजाताहै और जैसे जब घटमकानादिका नाश होजावे तो केवल महाकाश रहजाता है ऐसे देह समूह अविद्या के नाशहुये आत्माभी पूर्ण रहजाता है सत्त्व तम रजोगुणी-की नानाउपाधिसे जाति वर्ण आश्रमादि आत्मामें कल्प रक्खेहैं जैसे जल स्वभावसे मीठा श्वेतहै उपाधिसे खट्टे न-मके लाल पीलेकी उसमें कल्पना कीजातीहैं स्थूल सूक्ष्म कारण तीनों उपाधियों से आत्मा पृथक् जानना चाहिये जैसे शुद्ध स्फटिक रक्त पीत रंगके योग से वैसाही प्रतीत होता है जैसे धानों कूं मूसले से खोट पिछोड़ कर चावल पृथक् कर लेतेहैं ऐसे पंचकोशरूपी भूसीकूं दूरकरके वि-चाररूप जो पिछोड़ना इस युक्ति करिके आत्माको पंच-कोश तीनशरीरसे पृथक् शुद्ध जानना चाहिये। शंका। तुम आत्माकूं सर्वगत कहतेहो सारे तो नहीं दीखता। उ-त्तर। आत्मा सब कालमें सर्वगतहै परंतु शुद्ध बुद्धिकी वृत्तिमें प्रतीत होताहै जैसे प्रतिबिम्ब सारेहैं परन्तु स्वच्छ पदार्थ दर्पण जलादिमें प्रतीत होताहै देहइन्द्रिय मन बुद्धि प्रकृति इनसे आत्मा विलक्षणहै ये सब दृश्यहैं उनका जो द्रष्टा साक्षी सो आत्माहै। शंका। तुम आत्माकूं निर्विकार कहते हो आत्मा तो विकारवाला प्रतीतहोताहै क्योंकि मैं चलताहूं वो बोलताहूं ऐसे२ व्यापार से व्यापारी दीखताहै। उत्तर। पृथक्२ जो इन्द्रिय मन प्राणादि ये पृथक्२ अपने अप-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ने विषयोंमें अपनी अपनी क्रिया में जो प्रवर्त होतेहैं उनके साथ आत्माभी व्यापारीवत् विनाविवेक मूर्खोंकूं प्रतीत होताहै जैसे बादलके चलतेहुये बालक कहताहै कि चन्द्र चलताहै बालकके तो योंही निश्चयहै परन्तु विचारवानकूं भी भ्रान्ति से चन्द्रका चलना प्रतीत होता है और जैसे नाव में बैठेहुये गंगाके तीरके वृक्षादि चलते हुये प्रतीत होते हैं ऐसे आत्मा भी व्यापारीवत् प्रतीत होताहै देह इन्द्रिय प्राणमनादि सब जड़ पदार्थ हैं आत्मा चैतन्यकूं आश्रयकरके अपने अपने अर्थ में प्रवर्त होतेहैं जैसे सूर्यके निकलनेसे मनुष्यादि अपने २ काम में लगते हैं देह इन्द्रिय गुण कर्मादि अमल सत् चित् आत्मा में विवेकके विना अभ्यास कर रक्खेहैं जैसे आकाश में नीलता मनादि की उपाधि अर्थात् मैं कर्त्ता भोक्ताहूं ये अज्ञानसे आत्मा में कल्प रक्खे हैं जैसे जलका चलना चन्द्र में कल्प रक्खा है राग इच्छा सुख दुःखादि बुद्धि के हुये हुये प्रतीत होते हैं सुषुप्ति में बुद्धि लय होजाती है वहां नहीं प्रतीत होते इसलिये रागादि बुद्धिके धर्म हैं आत्मा के नहीं जैसे सूर्य का स्वभाव प्रकाश, अग्निका उष्ण स्वभाव, जलका शीत स्वभाव, है ऐसे नित्य निर्मल आत्मा का सच्चिदानन्द स्वभावहै। सत् चित् आनंद ये तीन पदहैं। शास्त्र में ये तीनों मिलकर एक सच्चिदानन्द ऐसा बोलने में आता है सत् जो तीनों काल भूत भविष्यत् वर्तमान में

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

एक रस बना रहता है भाषामें सत्तकूं है कहते हैं और घटपटादि में जो है यों शब्द प्रतीत होताहै सो आत्माही का अंश है यह बात दूसरे अध्याय में जहां अस्ति भाति प्रिय का प्रसंग है वहां भलेप्रकार सिद्ध कर आये हैं और चित् चैतन्यरूप,ज्ञानरूप प्रकाशरूप परन्तु ऐसा प्रकाश न समझना जैसा अग्नि सूर्यादिका है क्योंकि ये तो स्वप्नसुषुप्ति में एक भी नहीं ऐसे समझो जिसके प्रकाश से जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति के पदार्थों का भान होता है अर्थात् जिस प्रकाश करके रूपादि मनादि सुख अज्ञानादि जाने जाते हैं जाग्रत अवस्था में भी आत्मा के प्रकाश के बिना कुछ नहीं प्रतीत होसक्ता परन्तु सूर्यादिकाभी प्रकाश है और स्वप्न सुषुप्ति में तो केवल आत्माही का प्रकाश है इस हेतु से वहां भले प्रकार प्रतीत होताहै कि आत्माका यों प्रकाश है आत्मा स्वयंप्रकाश स्वप्नमें भलेप्रकार प्रतीत होसक्ता है और आनंदरूप जो कि सबसे सिवाय प्यारी वस्तुहै उपनिषद् में याज्ञवल्क्य मैत्रेयी का संवादहै। हे मैत्रेयि! । धन आत्मा के लिये प्यारा, पुत्र आत्माके लिये, स्त्री आत्माके लिये तात्पर्य सब पदार्थ आत्माके लिये प्यारे हैं, जो सब पर विपत्ति पड़े तो प्रथम अपने शरीर की रक्षा करता है और ब्रह्मानन्दके लिये शरीर इन्द्रिय प्राण का भी नाश करदेता है इसी हेतुसे प्यारा आत्माहै वोही आत्मा आनन्दरूपहै वह आनन्द रूप रजतमोगुण की वृत्तियों में दब रहाहै।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इस आनन्दरूप का पंचदशी ग्रन्थ में ब्रह्मानन्द के ५ अध्याय हैं योगानन्द, आत्मानन्द, अद्वैतानन्द, विद्यानन्द, विषयानन्द ये हैं नाम जिनके उनमें भले प्रकार निश्चय होसक्ता है । शंकाः- आत्मातो निर्विकारहै बुद्धि जड़है मैं जानता हूं यों किसका धर्म । उत्तरः- आत्मा का सत्‌चित्‌ अंश और बुद्धि की वृत्ति ये दोनों जुड़कर विवेक के विना यों व्यवहार होता है कि मैं जानता हूं आत्माकूं जीव जानकर भय कूं प्राप्त होता है और जब यों जाने कि मैं जीव नहीं परमात्माहूं तब निर्भय होजाताहै जैसे जबतक रज्जुमें सर्पजान्ता रहेगा तबतक निश्चय भय रहेगा । वेद वारम्बार कहते हैं जो जीव ब्रह्ममें किंचित्‌ भी भेद करेगा उसको बड़ा भय होगा विचारो जो जीव ब्रह्ममें भेदहै तो पूर्णब्रह्म कैसेहै जो एक से भेद हुआ तो अनेक जीव पशुपक्षी देवता यक्ष आकाशादि से सबसे भेद हुआ तो जैसे और है ऐसेही ब्रह्म भी एक देशी हुये और रामचन्द्र, कृष्णचन्द्र, विष्णु, शिवादि मूर्ति तो परमेश्वर की मायामयहैं वास्तव नहीं इस बात कूं परमेश्वरने अपने मुखसे कहा हैहे लक्ष्मी ! यों मेरा शरीर मायामय है सात्विक नहीं पद्मपुराण में गीताजीके माहात्म्यमें लक्ष्मीनारायणका सम्बादहै और गीताशास्त्र में परमेश्वर कहतेहैं मुझ अव्यक्त कूं जो व्यक्तिवाला जानते हैं वे मूर्ख है । जब कि परमेश्वर आप ऐसा कहते हैं कि विवाद की

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वातहै परन्तु मूर्ख अपनी मूर्खतासे सच्चिदानन्द एक रस पूर्ण ब्रह्मकूं परिच्छिन्न एक देशी कहैंगे अर्थात् वैकुण्ठ, कैलास, मथुरा, अयोध्यावासी कहैंगे और परमेश्वर के सद्भाव में ऐसी ऐसी चर्चा करैंगे कि कृष्णचन्द्र ने गोवर्द्धन उठा लिया इस हेतु से कृष्णचन्द्र परमेश्वरहैं और जो श्रुति, स्मृत्ति, युक्ति हजारों परमेश्वरके सद्भाव में प्रमाण हैं कि जिन युक्तियोंसे नास्तिकों के मत खण्डन किये जाते हैं जो नास्तिक वेदकूं न परमेश्वर कूं न परमेश्वर के वाक्यों कूं मानता है उसका मत केवल युक्ति करके खण्डन होताहै। मूर्ख उन युक्तियों कूं तो जानते नहीं ऐसी तुच्छ युक्ति देते हैं जिसकूं बालक भी खण्डन करदे गोवर्द्धनके सिवाय कैलास रावणने उठालिया है और हजारों राजा पुराणों में प्रसिद्ध हैं जिनके रथके पहियेके समुद्र बनेहुये हैं। क्या वे परमेश्वर थे और परमेश्वर ने रावणमारा, कंसमारा और अनेक जय करी यो परमेश्वर की क्या स्तुति है अर्थात् निन्दाहै क्योंकि जो परमेश्वर करने कूं न करने कूं औरका और करदेने कूं समर्थ हैं क्या वे ऐसी ऐसी उपाधि करके नाना प्रकार का अपने ऊपर दुःख उठाकर औरों से सहाय ले ले जय करते तदुक्तम्। दोहा। प्रीतिं विरोध समान सन, करिय नीति अस आहि। जो मृगपति वध मेडुकन, भलो कहै को ताहि ॥ चौपाई ॥ भवन अनेक रोम प्रति जासू। यह प्रभुता कछु बहुत न तासू ॥ सो महिमा समुझत प्रभु

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

केरी। जो वर्णत हीनता घनेरी॥और प्रसिद्ध है कि चक्रवर्ती राजा कूं एक देशका राजा कहना षट्शास्त्री कूं दो चार पोथी का पढ़ाहुआ कहना चार पुत्रवाले कूं एक पुत्रवाला कहना कितना अनर्थ है और जो यों कहो कि व्यासदेव वाल्मीकि जी आदिने क्यों परमेश्वर की ऐसी ऐसी स्तुति लिखी हैं सो सुनो जो परमेश्वर कूं सच्चिदानन्द पूर्ण ब्रह्म नित्यमुक्त एकरस असंग ऐसा विचारने कूं समर्थ नहीं योंहीं जानता है जैसे मैं उत्पन्न हुआ हूं मेरे माता पिता स्त्रियादि हैं ऐसेही परमेश्वर माता पिता स्त्रीवाले होंगे और जैसे इस लोक में शरीर मकान उपवनादि सुन्दर सुन्दर जिसके होते हैं और जो शत्रुओं कूं मार मार आप जय कूं प्राप्त होता है उसकूं मूर्ख लोग बड़ा कहते हैं इसलिये उन मूर्खोंके लिये व्यासादि जीने परमेश्वर की ऐसी ऐसी स्तुति लिख दी और विचारवानोंके लिये वेदान्तमें जो स्वरूप परमात्माका निश्चय कियाहै उसकी स्तुति लिखी है विचार देखो यो कुछ विरोध की बात नहीं जब मूर्ख भेदवादी वेदान्त की ऐसी ऐसी युक्तियों में दब जाते हैं उत्तर नहीं देसक्ते तब यो बकने लगते हैं। अजी ज्ञान बड़ा कठिन है। कलियुग में ज्ञान नहीं होता और जो ब्रह्मवादी ज्ञानी विशेष करके संन्यासी हैं उनकूं कहते हैं कि कलियुग में संन्यासवर्जित है उनसे बूझना चाहिये श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीशंकराचार्य महाराज शिवजी का

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अवतार पद्मपादपरमेश्वराचार्य्य हस्तामलक आनन्द गि-
रिजीसे आदि लेकर बहुत ग्रन्थोंमें प्रसिद्ध हैं और बहुतसे
इस समय में प्रत्यक्ष हैं और श्रीशंकराचार्य महाराजकूं भी
कोई दोहजार वर्षबीते हैं जब कलियुग था वा नहीं और
जो कलियुगमें शुचि ज्ञान नहीं होता तो व्यास जीने पुरा-
णोंमें इतिहासोंमें भलेप्रकार सूत्रोंमें और श्रीकृष्णचन्द्र
महाराज ने गीताशास्त्र में ज्ञान क्यों कहा और प्रथम अ-
ध्यायमें गीता भाष्यादि ग्रन्थों का नाम हम लिख आयेहैं
वे ग्रन्थ उन्होंने क्यों बनाये और जो यो शंका करे कि हरि
का नामहीं ३ मेरा जीवन है और अन्यथा कलियुग में
नहीं है३गति और जो केवल बोधके लिये प्रयत्न करते हैं
वे केवल तुष कूटते हैं ऐसे २ वाक्यों की क्या गति है। उत्त-
रः—ऐसे २ वाक्य कि कलियुग में ज्ञान नहीं होता ये वाक्य
जो किसी जगह नाम माहात्म्य की प्रशंसा वा भक्तिकी प्र-
शंसा वा कर्मादि की प्रशंसा में व्यासादिने जो कहेहैं क्यों-
कि व्यासादि कवियोंका यो नियम है जिस देवता वा
भक्ति आदिकी प्रशंसा करते हैं वहां योंहीं कहते हैं कि जोहैं
यों हीं है तो वो कहना उनका मूर्खोंके लियेहै और जो
योनमाने तो ऊपर जो हमने प्रश्न कियेहैं कि, उन्हों ने
ज्ञान क्यों कहा उसका उत्तरदो तात्पर्य प्रथमहीं हम
तीसरे अध्यायमें लिख आये हैं कि मूर्ख वेदशास्त्रके
एक २ देशकूं सुनकर वा अपने मतका हठ करके वृथा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वाद करते हैं बुद्धिमानको वेद शास्त्रोंका सिद्धान्त निश्चय करना यो सिद्धान्त है कोई महात्मा यह कहते हैं कि हम आधे श्लोकमें वो बात कहेंगे जो कोटि ग्रन्थोंने कही है सोई आधे श्लोक में कहते हैं ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या है जो यो सच्चिदानन्द लक्षणवाला जीवहै सोई ब्रह्म है अपर कोई ब्रह्म नहीं योही ज्ञान मुक्तिका हेतुहै॥

इति श्रीआनन्दाऽमृतवर्षिण्यांषष्ठोऽध्यायः॥ ६॥

अथ सप्तमोऽध्यायः॥

श्रीशंकराचार्य महाराजने हस्तामलकाचार्य्यसे प्रश्न किया कि तुम कौनहो इसका उत्तर श्री हस्तामलकाचार्य कहते हैं मैं मनुष्य, देव, यक्ष, ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, ब्रह्मचारी, गृहस्थी वानप्रस्थ, संन्यासी इनमें कोई नहीं निजबोध स्वरूपहूं फिर उन्होंने दृष्टान्त देदेकर कृपा करके जो औरोंकूंभी बोध होजावे इसी अर्थकूं सिद्ध किया हम भी उसी अर्थकूं संक्षेप करके इस अध्यायमें लिखेंगे औरभी दृष्टान्त युक्ति लिखेंगे जैसे मनुष्यादि का व्यवहारमें प्रवर्त्तहोना इसमें निमित्त सूर्य नारायणहैं ऐसे देह मन प्राण बुद्धि आदिकी प्रवृत्ति चेष्टा में जो निमित्त है और परमार्थत्व रूप करके तो कोई उपाधि द्रष्ट दृश्यादि जिसमें नहीं केवल आकाशवत्पूर्ण एकरसहै

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

सो नित्य प्राप्त स्वरूप आत्माहै स्थूल सूक्ष्म कारण शरीरों पंचकोशोंसे पृथक् अवस्थाका साक्षी सच्चिदानन्दरूप जो है सो आत्मा है। शंका। जैसे और पदार्थ आकाश पृथिवीआदि इन्द्रिय मन बुद्धि आदि करके निश्चय किये जाते हैं ऐसे आत्मा तो नहीं जाना जाता। उत्तर। इन्द्रिय मन बुद्धिं आदिकूं आत्मा प्रकाशताहै जैसे दीप घटादिकूं बुद्धिआदि जड़ पदार्थोंकरके आत्माका कैसे निश्चय होसक्ता है आत्मातो स्वयंप्रकाश है आत्माकूं अपने जाननेमें इन्द्रिय मन बुद्धिं आदिकी इच्छा नहीं जैसे दीपकके जाननेमें और दीपकी इच्छा नहीं चिदाभासके अर्थ जाननेके लिये प्रथम दृष्टान्त लिखतेहैं महाकाश १ घटाकाश २ घटमेंजल ३ जलाकाश ४ ये चार दृष्टान्त हैं अब दृष्टान्त में समझो शुद्धचैतन्य १ कूटस्थ २ अन्तःकरण ३ जीव ४ इसीका नाम चिदाभास है अर्थात् चैतन्यवत् प्रतीत हो परन्तु चेतन्य के लक्षण करके रहित हो जीवका जो अधिष्ठान अर्थात् जीव जिसमें कल्पित है और कूटवत् निर्विकार ठहरारहे सो कूटस्थ जीवका लक्षण यों है अधिष्ठान जो चैतन्य और सूक्ष्म शरीर और चैतन्य की जो छाया सूक्ष्मशरीर में इन सब का संग जीव कहा जाताहै और महाकाश १ घटाकाश२ अभ्राकाश ३ जलाकाश ४ ये चार दृष्टान्त हैं अब दार्ष्टान्तिक में समझो शुद्धचैतन्य १कूटस्थ २ ईश्वर ३ जीव ४

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

और वोही चैतन्य ऐसे ६ प्रकार का है शुद्धचैतन्य १ साक्षी २ प्रमातृ ३ प्रमाण ४ प्रमेय ५ फल ६ उपाधिरहित शुद्धचैतन्य १ अविद्योपहितसाक्षी २ अन्तष्करण विशिष्ट प्रमातृ ३ अन्तःकरणवृत्त्यवच्छिन्न प्रमाण ४ घटावच्छिन्न चैतन्य प्रमेय ५ अन्तःकरणवृत्त्याभिव्यक्त चैतन्य सो फल चैतन्य दृष्टान्त इसमें तालाब गूलकेदार का है यों विषय भाषा में भले प्रकार नहीं लिखा जाता जो विस्तार करके लिखें भी तो इसका समझना कठिन है और जो समझ सक्ताहै वो भाषा क्यों पढ़े सुन्दरशास्त्र पढ़े सुने प्रत्यक्ष प्रमाण में और परमात्मा बुद्धि आदि का किस प्रकार ते विषय है और किस प्रकार विषय नहीं इसबात के जानने में इस विषय का जानना अवश्य चाहता है इस लिये यों विषय वेदान्त शास्त्रार्थ के जाननेवालों से श्रवण करना योग्यहै जो इस ग्रन्थ कूं पढ़ावे सुनावेंगे वे अवश्य इस विषय कूं भी जानते होंगे हमने जो प्रसंस चिदाभास के अर्थ जाननेके लिये लिख दिया है जैसे मुखका आभासक मुखका जनानेवाला जो दर्पण में दीखता है वो मुखसे कुछ पृथक् वस्तु नहीं ऐसे बुद्धि में जो चिदाभास है वो चैतन्य से पृथक् कुछ वस्तु नहीं उसका जो अधिष्ठान कूटस्थ रूप सो नित्य प्राप्त आत्माहै जैसे दर्पण के अभाव में आभासकी हानि हुये सन्ते एक मुख प्रतीत होता है वहां कुछभी कल्पना आभास्य आभासक द्रष्टा दृश्य वि-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

म्न प्रतिबिम्बकी नहीं होती ऐसे ज्ञानके नाश हुये संते कार्य उसका बुद्धि है बुद्धिका नाश हुये सन्ते जो निराभासक त्रिपुटीरहित वस्तुहै सो आत्मा है ध्याता, ध्यान, धेय-प्रमाता, प्रमाण, प्रमेय--ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय, इसकूं त्रिपुटी कहतेहैं मन इंद्रिय आदिसे पृथक् मन इन्द्रिय आदिका आदि मन इंद्रिय आदि करके जो अगम्य सो आत्माहै सब जीवोंकी बुद्धि में जो एक चैतन्य अपने आप शुद्धरूप ऐसे भानहोताहै कि जैसे अनेक जलके घटों में एक सूर्य प्रतिबिम्ब करके भान होताहै सो आत्माहै ❀ जैसे एक सूर्य अनेक नेत्रोंकूं क्रम करके नहीं प्रकाशता ऐसेआत्मा ज्ञानस्वरूप अनेककूं क्रम करके नहीं बोध करता।शंका।जो एक चैतन्य सब शरीरों में है तो यज्ञदत्तादि के दुःख सुख देवदत्त क्यों नहीं अनुभव करता। उत्तर। अविद्याकी उपाधिसे जिस शरीर में जिस जगह विशेष अध्यास है वहींके दुःखादि अनुभव होसक्ते हैं और जगहके नहीं होसक्ते जैसे जिसकूं योही निश्चय है कि इस शरीरमें चेतन्य और है यज्ञदत्तादि के शरीरोंमें और चैतन्य है तो उसकूंभी एक काल में शरीर फूटने का दुःख और पलँगपर सोने का सुख और भी अनेक दुःख सुख अनुभव नहीं हो सक्ते जिस कालमें जहां अन्तःकरण की वृत्ति होगी उसीजगहका दुःख सुख प्रतीत होगा और जगह का नहीं होगा जो दूसरे शरीर में अध्यास होगा तो संदेह यज्ञदत्तादि के दुःख सुख प्रतीत

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

होंगे जैसे मित्र पुत्रादि में अध्यास होताहै तो उनके दुःख सुख में जो कहताहै कि मैं दुःखी सुखीहूं और यो विचारनाचाहिये कि जो प्रथम शरीर में चैतन्य था वोही इस शरीरमें है फिर पूर्वजन्मके दुःख सुख क्यों नहीं प्रतीत होते तात्पर्य जब एक शरीर में यो व्यवस्था है जो अन्तःकरणकी वृत्ति नेत्रके साथ लगीहुई है तो रूपही का ज्ञान होताहै समीप बैठे कुछ कहाकरो किंचित् नहीं सुनत इसी प्रकार सब जगह कल्पना करलेनी हजारवस्तु घरमें खाने पहरने देखने की रक्खीहों जिस जगह अन्तःकरणकीवृत्ति है वोही दुःख सुखकी हेतुहै जबकि एक शरीरके दुःख सुख एक समय होनेवाले उनका एक कालमें अनुभव नहीं होसक्ता फिर अनेक शरीरों का कैसे दुःख सुख अनुभव होसके। शंका। अष्टावधानी तो उत्तर देना चौसर खेलनी आदि ऐसे ऐसे ८ काम एक समय किया करताहै और दूसरे जो एक बालिश्त चौड़ा लम्बा खजला है उसकूं दांतों स कुतर २ जो खाता है तो शब्द स्पर्श रूपरस गन्ध उसकूं एक कालमें प्रतीत होताहै और तीसरे कोई कहता है कि मैं चन्द्र तारोंकूं एककाल में देखता हूं इसका उत्तर दो। उत्तर। मूर्ख यों बात कहता है मैं एक कालमें सबकूं अनुभव करताहूं उसकूं मनकी गतिकी खबर नहीं मन ऐसा चंचल है एक क्षण नहीं लगने पाता—प्रथमपदार्थ कूं अनुभव करके दूसरे पदार्थ में प्रवर्त्त

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

होजाता है इस बात कूं सूक्ष्म दर्शी जानते हैं और सुनो यो प्रसिद्ध है कि वाणी आदि इन्द्रिय विना अन्तःकरण विशिष्टचैतन्यके युक्तहुये किसी क्रिया में प्रवर्त्तन नहीं होसक्ते देखिये पुरुष पाठ जप भी करता है और अनेक मनोराज्य भी करता है विचारना चाहिये उसके मुखसे श्लोक मंत्र जो उच्चारण होताहै तो चैतन्यविशिष्ट मनका वाणी के साथ संयोगहै वा नहीं जो कहो कि संयोग है तो मनोराज्य कौन करताहै और जो कहो संयोग नहीं तो वाणीजड़है उसमें क्रिया कैसे होतीहै तात्पर्य व सन्देह प्रतीत होताहै मनकी गति बहुत चंचल है मनमनोराज्य भी किये जाता है और वाणी के साथ मिलकर उस विषय कूं भी अनुभव किये जाता है मूर्ख योंहीं जानता है कि मेरा मन पाठजपमें नहीं लगा जिनकू अपने मनकी भी खबर नहीं उनसे ऐसी ऐसी शंका रहती हैं इसउत्तर में तीनों प्रश्न का उत्तर है ॥

श्री शंकराचार्य भगवान् कहतेहैं कि यो जो जगत दीखता है योक्याहै क्या इसका रूपहै यो कैसे हुआहै इसका क्या हेतुहै यो बुद्धिमान को कभी नहीं चिन्तवन करना फिर क्या चिन्तवन करना चाहिये यों माया भ्रांति इन्द्रजाल है यों चिन्तवन करना चाहिये जैसे किसीके पैर में कांटा लगजावे तो वो यो न विचारे कि मेरे यो कांटा कौनसे मुहूर्त में लगाहै कौनसे पेड़का है यहां कैसे आया

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ऐसा२चिन्तवन न करै जैसे बने उसके निकालने का उपाय करै ऐसेही संसारकी निवृत्तिका उपाय करे जैसे एक सूर्य-का प्रतिविम्ब अनेक जलके घटों में है जो घटकूं लेकर चले तो सूर्य नतो उसके साथ जाताहै न कँपता है ऐसे आत्मा ज्ञानस्वरूप शरीर इन्द्रियादि की क्रियामें वो क्रि-यावाला नहीं जैसे ढक गईहै बादल से दृष्टि जिसकी वो यों मानता है किसूर्य छिप गये ऐसे अविद्याकी उपाधि से योंपुरुष आपकूं वृथा बँधाहुआ मानता है और जैसे किसी बन्दर ने घटमें हाथ डालकर दोनों हाथ में अन्न भरकर मूठी बन्द करली पीछे वृथा अज्ञान से चीचीं किल किल करे है विचारो उसकूंकिसने बन्धन कियाहै और सुनो को-ई तोते के पकड़ने के लिये मैदान में तो चुगा डालदेता है और दो बांस खड़े करके बीच में उसके नलकी जैसी पंखे में होती लगा देताहै नीचे उस नलकी के किसी पात्र में जलभर देताहै तोता चुगे के लालच आताहै प्रथम नलकी पर आनकर बैठता है उस नलकी का नियम है उसके ऊपर जानवर बैठा और वो फिरी और जानवर उ-लटा हुआ जो वो जानवर छोड़कर भाग जावे तो कुशल है नहीं तो यों हाल होताहै कि जब तोता उस नलकी पर आनकर बैठा और वो फिरी तोतेने जाना यों मेराआश्रय था जो इसको छोडदिया तो जाने कहां गिरूंगा उसकूं वो पकड़े रहा फिर उस तोते की नीचे कूं पीठ ऊपर कूं पैर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

होगये उस तोते ने जो जलकी तरफ कूं देखा तो अपना प्रतिबिम्ब जलमें प्रतीत हुआ उस तोते का अध्यासन प्रतिबिम्ब में लगगया फिर वो तोता यो जानता है कि मैं डूब रहा हूं जल में ऊपर का सबहाल भूलगया वृथा अज्ञान से चीची टीटीकरै है विचारो उसकूं किसने बंधनकिया है ऐसे यो कूटस्थ चैतन्यरूप अपने प्रतिबिम्ब चिदाभास से अध्यास करके बंधनवत् होरहाहै वास्तव बंध नहीं सबजगह जैसे आकाश अनुस्यूतहै ऐसे आत्मा बाहर भीतर स्वच्छरूप अनुस्यूत है किसी वस्तुकूं स्पर्श नहीं करता और जैसे श्वेत मणि रंगकी सन्निधि होने से लाल पीली प्रतीत होतीहै ऐसे आत्मा अविद्या की उपाधि से करता भोक्ता प्रतीत होता है समस्त स्थूल सूक्ष्म उपाधि कूं नेतिनेति इस वाक्य से निषेध करके जैसे दूसरे अध्याय में जीव ब्रह्मकी एकता महावाक्य करके करीहै सदा वोही चिन्तवन करना चाहिये प्रथमतत्व पदों का अर्थ लिख भी आयेहैं फिरभी और प्रकार करके सुनो कोई मुक्तिकी इच्छावाला तीनताप जो संसारमें हैं उन करके तपा हुआ और ॥

टी०। ज्वर क्रोधादि करके जो ताप सो आध्यात्मिक १ शत्रु चोर व्याघ्रादि करके जो ताप सो आधिभौतिक२ शीतोष्ण पवनादि करके जो ताप सो आधिदेव ॥ ३ ॥

मू०। संसार से उद्विग्न हुआ है मन जिसका शम दमा-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

दि साधनों करके युक्त सद्गुरु से बूझताहै हे भगवन् जिस साधन करकेअनायासपूर्वक संसाररूप बन्धनसे मैं छूटजाऊं सो महाराज मुझकूं संक्षेप करके केवल कृपा करके कहो। उत्तरः-हे साधो तुमने बहुत अच्छा बूझा सावधानमति होकर सुनो, तत्त्वमसि महावाक्यादिसे उत्पन्न हुआ जो जीव ब्रह्म का तादात्म्यविषय ज्ञान सो मुक्ति का कारण है। प्रश्न। महाराज कौन जीव कौन ब्रह्म है किस प्रकार करके उनकी तादात्म्यताहै और महावाक्य किस प्रकार करके उसको प्रतिपादन करते हैं?उत्तर। जीव कौन है तूही जीवहै और जो बूझताहै कि मैं कौन हूं तूहीं बेसन्देह ब्रह्म है। प्रश्न। हे भगवन् अबतक तो मैंने भलेप्रकार पदार्थ भी नहीं जाना मैं ब्रह्महूं यो जो महावाक्यार्थ इसकूं कैसे प्राप्त हूं। उत्तर। सत्य कहते हो वाक्यार्थके ज्ञान में प्रथम पदार्थ का ज्ञान हेतु है इसलिये प्रथम तत्त्वम् पदका अर्थ सुनो अन्तःकरण और उसकी वृत्तियों का जो साक्षीचैतन्य घन नित्य एकरस और देहादिमें जो अहंबुद्धि इसकूं त्यागकरके आत्मारूप करके जो चिन्तवन करनेमें आताहै सो आत्मा त्वम् पदका अर्थ।यो शरीररूपादिवाला होने से आत्मा नहीं जैसे पञ्चमहाभूतों के विकार घटादिहैं ऐसेही प्रत्यक्ष विकारवाला होने से देह भी है। प्रश्न।जो देह अनात्मा है तो हे भगवन् आत्माकूं करामलकवत् साक्षात् प्रतिपादन करो। उत्तर। जैसे घटका देखनेवाला

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

घटसे पृथक् होता ऐसे देहका देखने वाला देह कैसे होगा और जैसे मकान में बैठा हुआ कोई यो कहैं मैं मकान हूं तो विचारो कैसी मूर्खता की बात है ऐसे यो चैतन्यरूप असंग निरवयव है और कहै कि मैं देह हूं अर्थात् पुरुष स्त्री ब्राह्मणादि हूं विचारो इससे परे और क्या अज्ञान होगा देह तो उपलक्षण है प्राण इन्द्रिय मन बुद्धि आदि दृश्य होने से सब अनात्मा है सबका द्रष्टा सो आत्मा है देहसे परे इन्द्रिय इन्द्रियों से परे मन मनसे परे बुद्धि बुद्धि से परे जो बुद्धि का साक्षी सो आत्मा आत्मा से किंचित् नहीं और सब संघात् भी आत्मा नहीं होसक्ता क्योंकि दृष्टा द्रश्य विलक्षण होते हैं देह इन्द्रिय की जो चेष्टा क्रिया में सदा उपचय अपचय वाली हैं कभी किसी प्रकार का शरीर कभी किसी प्रकार की इन्द्रिय मनादि की चेष्टा देखने में आतीहै कभी किसी प्रकार की जिस की संनिधिमात्र से ये सब चेष्टा करते हैं एकरस जो इनका द्रष्टासो आत्मा है जड़ पदार्थ देहादि जिसकी संनिधि से चैतन्यवत् प्रतीत होते हैं जैसे चुम्बक की संनिधिसे लोहा सो आत्मा है मेरा मन इस समय कहीं गया अब मैंने स्थिर किया इस वृत्ति कूं जो जानताहै सो आत्मा है जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तिकाहोना न होना इसकूं निर्विकार हुआ जो जानता है सो आत्मा है जैसे घटका आभासक दीप घटसे पृथक् है ऐसे देहादिका आभासक देही पृथक् है देह स्त्री

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पुत्र मकानादिके नष्ट होते २ तो आपकूं परमप्रेमका आस्पद प्रतीत होता है सोई आत्मा है जैसे सूर्य पापपुण्यका साक्षी असंग सविकार है इसी प्रकार साक्षी चैतन्यरूप निराकार आत्मा है और ये ६ विकार देहकेहैं जायते अस्ति वर्द्धते विपरिणमते अपक्षीयते विनश्यति देह इन्द्रिय प्राण मन बुद्धि अज्ञान का लक्षी त्वम् पदका वाच्यार्थ है।अब तत्पद का अर्थ लिखते हैंः-परिपूर्ण एकरस नित्यानन्द ज्ञानस्वरूप परमात्मा सर्वज्ञ परमेश्वर संपूर्ण शक्तिवाला जिसकूं वेद ऐसा प्रतिपादन करतेहैं सो परमात्मा ब्रह्महै जो प्रपंचका कारण अन्तर्यामी कर्मों के फलका देनेवाला जगत्की सृष्टि स्थिति लय जिसके सकाश से होते हैं सोई तत्पद का वाच्यार्थ है और एक शुद्ध चैतन्य तत्त्वम् पदों का लक्ष्यार्थ है।तत्त्वम् पदों की एकता दूसरे अध्याय में जैसे लिख आयेहैं वो प्रकार यहां चिंतवनकर लेना। तात्पर्य जो तत्पद का लक्ष्यार्थ है सोई त्वम् पदका लक्ष्यार्थहै सो तू है ऐसा कहो वा तू सो है ऐसा कहो। इस प्रकार गुरूने शिष्यकूं बोधन किया और कहा किमैं ब्रह्महूं योवाक्यार्थ जतबक भलेप्रकार दृढ़ न हो तब तक शम दमादि साधनोंकरके युक्त हुआ श्रवण मनन निदिध्यासनका अभ्यास नित्य प्रतिदिन करता रहे श्रवण ऐसे करे सुना जाताहै जिससमय कोई ऐसा रागगाता है मृगके मुख में जो तृण होता है सोबाहरका बाहर और भीतर का भी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तर रहजाता है दृष्टान्त में आप समझ लेना दश उपनिषद् वृहदारण्यादि भाष्यसहित शारीरकभाष्य गीताभाष्य ये तीन प्रस्थान वेदान्तके कहलातेहैं उनकूंही ब्रह्मविद्या कहतेहैं आदित्यपुराण पंचदशी आदि ग्रन्थोंका उन्हींमें अन्तर्भाव है ऐसे ऐसे ग्रन्थोंका ब्रह्मनिष्ठोंसे श्रवण करना जबतक संशय विपर्यय भलेप्रकार न जावे तबतक बारम्बार आदिसे अन्ततक इन ग्रन्थों का श्रवण करना इसीका नाम श्रवणहै मनन ऐसे करना जैसे पटवा रेशमकूं सुलझताहै ऐसेही जो श्रवण किया उस कूं एकान्तमें बैठकर चिन्तवनकरे पूर्व पक्ष साधन फलादि कूं पृथक् करे युक्ति से सिद्धांत वस्तु को पुष्टकरे इसीका नाम मननहै निदिध्यासन ऐसे करना जैसे कोई बाजार में बैठा हुआ अपना काम कर रहा था राजा की सवारी आगे कूं चलीगई कुछ न मालूम हुआ ऐसे जो मनन करके सिद्धान्त वस्तुका निश्चय किया है कि मैं देह प्राण इन्द्रिय मन बुद्धि अज्ञान का साक्षी कूटस्थ हूं इसका सदा चिन्तवन करना इसकूं तो सजातीय प्रवाह कहते हैं और जैसे प्रथम देहमें अध्यासनथा किमैं ब्राह्मणादि हूं इस का सदा चिंतवन न करना इसकूं विजातीय तिरस्कार कहते हैं इस प्रकार सजातीय प्रवाह और विजातीय तिरस्कार सदा करते रहना इसी कूं निदिध्यासन कहतेहैं श्रवण से अज्ञान का नाश होताहै मनन करनेसे संशय का नाश होताहै निदिध्यासन करनेसे विपर्ययका नाश होताहै फिर

८

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

महावाक्यार्थ का ज्ञान भलेप्रकार दृढ़ होजाताहै सोई मुक्तिका हेतुहै ॥

इति श्रीआनन्दाऽमृतवर्षिण्यांसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथाष्टमोऽध्यायः ॥

नित्य यह विचार करता रहै कि यो शरीर इन्द्रियादि अविद्या का कार्य है बुद्बुदवत् नाशवान् है मैं तो इन से विलक्षण एकरस हूं मैं देह नहीं इसहेतु से मेरे जन्मादि नहीं मैं इन्द्रिय नहीं इस हेतु से शब्दादि विषयों करके मेरा संग नहीं मैं मन नहीं इस हेतुसे दुःख सुखादि मेरे धर्म नहीं मैं प्राण नहीं इस हेतुसे भूंख प्यास मेरे धर्म नहीं मैं निर्गुणतो निष्क्रिय नित्य निर्विकल्प निरंजन निराकार निर्विकार नित्यमुक्त निर्मल आकाशवत् सारे व्यापक वाहर भीतर वेसंग अचल नित्यशुद्ध नित्यबुद्ध अखण्डआनंद अद्वय अक्षर अजर अमर हूं श्रीशंकराचार्य भगवान् कहते हैं इस प्रकार जो अभ्यास निरन्तर करता रहै कि मैं इसप्रकार ब्रह्महूं तो यो अभ्यास अविद्या कार्य के सहित हरलेता है जैसे रोगकूं औषध अभ्यास करने के साधन लिखते हैं ये साधन गीताशास्त्र में लिखे हैं शुद्ध बुद्ध करके युक्त सत्त्वगुणी धैर्यसे उसी बुद्धि कूं निश्चय करके शब्दादि विषयों कूं त्याग करके राग द्वेष कूं दूर करके विविक्त देशमें बैठकर सदा इसप्रकार भोजनका अभ्यास

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करना योगशास्त्र में लिखा है दो भाग तो अन्न करके पूर्ण करे और एक जल करके और एक भाग पवन के प्रचार के लिये खाली रक्खे देह वाणी मनकूं निग्रह करे अर्थात् अपनी इच्छापूर्वक अपने२विषयमें प्रवर्त न हो ध्यान योग जो निदिध्यासन इसीकूं मुख्य समझकर नित्य प्रतिदिन इस ध्यानयोग का अभ्यास करते रहना वैराग्य कूं आश्रय रखना अहंकार न करना कि मैं ऐसा विरक्तहूं काम क्रोध दुराग्रह कूं त्याग करके प्रारब्ध के बलसे जो प्राप्त होजावे उसी में सन्तोष करना जो पदार्थ पराई इच्छासे आजावे उनमें ममता छोड़ कर सदा निदिध्यासन करना योगके बलसे खोटे मार्गमें प्रवृत्त न होना अर्थात् किसीकूं शाप देना किसीपर अनुग्रह करना यो न करना परमेश्वर कहते हैं इस प्रकार अभ्यास करनेवाला जो मेरा वास्तव तत्त्वस्वरूप है उस कूं प्राप्त होजाता है समस्त दृश्यकूं आत्मामें लयकरके जैसे प्रथम अपवाद लिख आये हैं एक आत्माकूं निर्मल आकाशवत् भावना करता रहै रूप वर्णादिकूं त्याग करके परमार्थ का जाननेवाला परिपूर्ण चिदानन्दरूपकरके स्थित रहै इस प्रकार अभ्यास करते करते वृत्तिज्ञान उदय होकर अन्तःकरण के सहित समस्त अज्ञान कूं भस्म कर देता है जैसे मथन करते करते बांसमें अग्नि उत्पन्न होकर समस्त बनकूं भस्म कर देती है जैसे सूर्यके निकलनेसे प्रथम चांदना होजाता है ऐसे प्रथम मूलाज्ञान का

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

नाश होता है फिर थोड़े दिनोंके पीछे सब कार्य उसके स्थूल देहसे लगाकर अविद्या पर्यन्त नष्ट होजाते हैं आत्मा तो सदा प्राप्त है अविद्या करके अप्राप्तवत् प्रतीत होता है जैसे अपने गलेकी माल भूल जावे फिर किसीके बतलाने से प्राप्तवत् प्रतीत होती है जैसे स्थाणु में पुरुष शुक्ति में रजत रज्जु में सर्प की भ्रान्ति ऐसे २ बहुत दृष्टान्तहैं इसी प्रकार ब्रह्मके विषय जीवता है जैसे दिक्का भ्रम सूर्य के उदय होनेसे दूरहोता है ऐसे यो वर्ण आश्रमादि की भ्रान्ति अविद्या के नष्ट होने से आत्मा के आविर्भाव होनेसे दूर होतीहै जैसे कारण से कार्य भिन्न नहीं ऐसे जगत ब्रह्मसे भिन्न नहीं कोई कीट भ्रमर का ध्यान करते करते भ्रमर होजाता है ऐसे जो जीव सच्चिदानन्द रूप ब्रह्म सच्चिदानन्द ब्रह्मका ध्यान करते करते ब्रह्म होजावे तो इसमें क्या कहना है जैसे किसी घटमें १० छिद्रहों भीतर उसके दीप होवे उसी दीपकी प्रभा दश तरफ कूं निकल कर परिच्छिन्न प्रतीत होतीहै ऐसे आत्मा दीपवत् शरीर घटवत् इन्द्रिय छिद्रवत् हैं जैसे उस दीपकूं छिद्र द्वारा पवन लग २ प्रभा उसकी मन्द रहतीहै ऐसे इन्द्रिय द्वारा विषय वासना रूपी पवन लगलग आत्मा का सच्चिदानन्द रूप मन्दसा प्रतीतहोता है इद्रियोंके रोकनेसे आत्मा सच्चिदनान्द साक्षात् प्रतीत होता है यावत् प्रारब्ध कर्म शेषहैं तावत् विद्वान् उपाधि में स्थित हुआ प्रतीत होताहै

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

परन्तु आकाशवत् लिपायमान नहीं होता ज्ञानवान प-
ण्डित भी हैं परंतु मूर्खवत् जानकर रहताहै किसी जगह
वायुवत् आसक्त नहीं होता जब अविद्या का नाश होजा-
ता है तब निर्विशेष ब्रह्म में लय होजाता है इस लाभसे परे
कोई और लाभ ब्रह्मलोकादिक नहीं इस सुखसे परे और कोई
सुख चक्रवर्त्ती राजा इन्द्र ब्रह्मादि का नहीं इस ज्ञानसे परे
कोई और ज्ञान भूत भविष्यत् आदिका नहीं इस प्रत्यय
कूं रूप आत्मा कूं देखकर मूर्त्तिमान् परमेश्वरके देखने
की इच्छा नहीं रहता यो रूप होकर फिर मनुष्य देवतादि
रूप नहीं होता यो जो आनंद रूपहै इस आनंदके
एक लेशमें ब्रह्माजी से लेकर चींटी पर्यन्त आनन्दीहै
जिसकी आभा करके सूर्य चन्द्रादि भासते हैं सूर्य
चन्द्रादि की आभा करके जो नहीं प्रतीत होता सोई
प्रत्यंगात्मा ब्रह्महै यो रूप ज्ञानचक्षु करके दीखता है
कर्मचक्षु करके नहीं दीखता जैसे अंधेकूं सूर्य उआ हुआ
नहीं प्रतीत होता तात्पर्य यो रूप अधिकारीकूं प्रतीत हो-
ता है जैसे स्त्रीसंग का आनंद तरुण अवस्था में आठ दश
वर्षकी अवस्था में लड़का लड़की जो उस आनंदकूं अनु-
भव कियाचाहे तो क्या होसक्ता है जिनके मैले अन्तष्क-
रण हैं उनकूं इस रूपका साक्षात् नहीं हो सक्ता अन्तःक-
रण मैले होने से देवता गुरु वेदान्त शास्त्र में श्रद्धा का अ-
भाव होता है श्रद्धाके विना गुरुकृपा नहीं करते गुरु की

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कृपा के विना कभी किसीकाल में ज्ञानहुआहै न होगा श्री शंकराचार्य भगवान् कहते हैं कि हजारों श्रुति अद्वैत ब्रह्म कूं प्रतिपादन करती हैं और यो आत्मा सच्चिदानन्द रूप भले प्रकार निरन्तर प्रकाश वालीभी है परन्तु बिना गुरूकी कृपा मैले अन्तःकरणवाले साक्षात् करने कूं समर्थ नहीं इसलिये चाहिये प्रथम अन्तष्करण की शुद्धिका उपाय करे क्योंकि श्रीभगवान् ने भी प्रथम अर्जुनकूं ज्ञान उपदेश किया फिर कहा हे अर्जुन हमने तुमकूं ज्ञान उपदेश किया जो तुमकूं यो ज्ञान अपरोक्ष न हुआहो तो अन्तःकरणकी शुद्धिके लिये निष्काम कर्मयोग सुनो जैसे सोना मैला होताहै उसकूं अग्निमें तायकर शुद्ध करलेते हैं ऐसे अन्तःकरणकूं निष्काम कर्म योग करके शुद्ध करना चाहिये ज्ञान की इच्छावालेकूं प्रथम निष्काम कर्म्म मुख्य है शुद्धान्तःकरण वालेकूं समाधिसाधन मुख्यहै प्रश्न– शुद्धान्तःकरणवालेकी क्या परीक्षा है । उत्तर– जब जाने यहांके जो देखे सुने स्त्री आदि पदार्थ हैं स्वर्गादिके अमृतादि पदार्थ जो सुनेहैं सबकूं चित्त न चाहै दुःखदायी जाने मुक्तिकी इच्छाहो तब निश्चय करे कि अन्तःकरण शुद्ध होगया फिर विवेक वैराग्यादि साधनों करके युक्त होकर यो विचार करे मैं कौनहूं यो जगत् कैसे हुआहै इसका कर्ता कौनहै उपादान क्या है इसीका नाम विचार है यो देहपंचभूतोंका विकार मैं नहीं इन्द्रिय मन

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

बुद्धि आदि मैं नहीं उनसे कोई विलक्षणहूं और जो कि-
सीने प्रथम न्यायशास्त्र पूर्व मीमांसा वा पुराणादि पढ़े सु-
नेहो वेदांत न शास्त्र सुनाहो इस हेतुसे उसके बहुत संशय
विपर्य्यय हों तो शारीरक भाष्य पढ़े सुने वहां भले प्र-
कार युक्ति पूर्वक निश्चय हो सक्ताहै भारत भागवतादिमें
तो जिस जगह जो ज्ञान का प्रसंग है तबतो योही प्रती-
त होताहै कि ज्ञान मुख्य है और जिस जगह कर्म उपा-
सनादिका प्रसंगहै वहां कर्मआदि मुख्य प्रतीत होतेहैं वै-
ष्णवादि अपने २ मतकूं मुख्य बताते हैं औरोंकी असू-
या करतेहैं भागवतादिमें स्पष्ट यो नहीं प्रतीत होता किस-
मस्त वेद भारत पुराणादिका कहां समन्वय है अर्थात्
मुख्य प्रयोजन किसमेंहै शारीरक भाष्यमें भले प्रकार
श्रुति स्मृति युक्ति दृष्टांत देदेकर और अनेक दोष भेद-
वादि आदियोंके मतोंमें दिखाकर और जिसलिये कर्म उ-
पासनादिका वेदोंमें प्रसंगहै उतने अंशकूं अंगीकार करके
यो सिद्ध कियाहै कि समस्त वेद शास्त्र पुराणादिका ब्रह्म-
में समन्वय है सब श्रुति स्मृति प्रवृत्ति निवृत्ति मार्गकी
कोई साक्षात् कोई परम्परा करके ब्रह्मकूं बोधन करतीहैं
और जो यो विरुद्ध प्रतीत होता है कि कोई श्रुति कहती
है ब्रह्म मनका विषय नहीं कोई कहती हैं ब्रह्म सूक्ष्म मन
बुद्धि करके जानाजाताहै कहीं ऐसा सुना जाता है जब
वैराग्य होवे उसी समय संन्यास करे कहीं ऐसा सुनाजाताहै

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

माता पिता स्त्री आदिके त्यागमें दोषहै ऐसे २ विरुद्ध वाक्य अनेकहैं विचारनेसे विरुद्धवास्तव नहीं क्योंकि जैसा अधिकारी देखा वैसाही उपदेश किया तात्पर्य्य सबका अविरुद्ध भले प्रकार शारीरक भाष्यमें निश्चय हो सक्ताहै और मुक्तिके साधन ऐसे ऐसे सुने जाते हैं कि अन्त मुक्तिका साधन है और तीर्थ श्रीगङ्गाजी से लेकर यावत् हैं उनमें स्नान करना बद्रीनारायणजीसे आदि लेकर दर्शन पाषाणादि मूर्तियोंका पूजन करना पाठ जप करना चतुर्भुजी आदिमूर्तियोंका ध्यान करना सगुण निर्गुण ब्रह्मकी उपासनासे लगाकर वेदान्त शास्त्रका श्रवण मनन निदिध्यासन तक योहीं सुना जाताहै ये सब मुक्तिके साधनहैं अर्थात् एक एकादशी के व्रत करनेसे मुक्तहोजाता है विष्णु चरणोदक पान करनेसे श्री गङ्गाजी में स्नान करने से मुक्त हो जाताहै तात्पर्य्य सबके माहात्म्य में योंही प्रतीत होता है कि ये सब मुक्तिके साधन हैं अब यो विचारना चाहिये मुख्य साधन कौनहै जिससे निश्चय मुक्ति हो जावे और जो किसीके यो विश्वास है कि एकादशी आदि व्रत करनेसे बद्रीनारायणादिके दर्शन करनेसे श्री गङ्गाजी में स्नान करने से निश्चय मुक्त होजाताहै फिर तृप्ति क्यों नहींहोती तात्पर्य्य मुख्य साधन मुक्तिका वेदान्त शास्त्र का श्रवण मनन निदिध्यासनहै और सब परम्परा करके गौण है इस बात कूं भी प्रमाणपूर्वक शारीरक भाष्यमें

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

सिद्ध किया है और जोकि पूर्व मीमांसावाले स्वर्गादि की प्राप्ति कूं मुक्ति कहतेहैं और कोई एक देशी उनके कहते हैं कि नित्य सुखका प्रकट रहना मुक्ति है सांख्यशास्त्र वाले कहते हैं देह बुद्धि आदि में अहङ्कारकी निवृत्ति हुये सन्ते औदासीन्य रहना मुक्तिहै पुराणवाले सालोक्य सामीप्य सारूप्य सायुज्यकूं मुक्तिकहतेहैं चारुवाक्य कहते हैं किसीके आधीन न होना मुक्तिहै न्यायशास्त्रवाले कहते हैं २१ दुःखोंका अत्यन्त नाश होजाना मुक्तिहै २१ दुःख न्याय शास्त्रमें प्रसिद्ध हैं अत्यन्त नाश अत्यन्ताभाव कूं कहते हैं अभाव चार प्रकार का है प्रागभाव जो घटसे प्रथम घटका अभाव प्रध्वंसाभाव जो घटके नाश होजाने में घटका अभाव अन्योन्या भाव जैसे घटमें घटका अभाव अत्यन्ताभाव जैसे शशे के सींग का अभाव और अनेक ब्रह्मलोक गौलोकादि की प्राप्तिकूं मुक्ति कहते हैं गरुड़वाले जो कहते हैं सो तो लोकमें बहुत प्रसिद्ध है और भी अनेकमतहैं अब बिचारना चाहिये मुक्तिका क्या अर्थहै इसका भी निश्चय शारीरक भाष्यमें कियाहै कि अविद्योपहित जीव नामा शुद्ध चैतन्य का प्रतिबिम्ब मिथ्याभ्रांतिसे आपकूं जीव मानताहै अविद्याकी उपाधिसे समस्त संसार मुक्ति पर्य्यन्त कल्प रक्खाहै ब्रह्मज्ञानसे अविद्याका नाश हुये सन्ते जीव रूप भ्रांति का दूर होना यो मुक्तिहै सर्व अनर्थों-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

की निवृत्ति परमानन्दकी प्राप्ति इसी मुक्तिका लक्षण है जैसे किसी घट गत जल में जो प्रतिविम्ब सो जलके दूर होनेसे नाश होजाता है फिर यो नहीं कहाजाता कि प्रतिविम्ब कहांगया और प्रतिविम्बके नाशहोने और न होने में सूर्य कुछ और प्रकारके नहीं होजाते दृष्टांत में समझो कि शुद्ध चैतन्य जैसे प्रथमथा वैसेही पीछे रहा जैसे स्वप्नके खुलते हुये स्वप्नमें जो पदार्थ कल्प रक्खे थे सब उसीसमय नाश होजाते हैं ऐसे पीछे विदेह मुक्तिके समस्त संसार नाश होजाताहै कोई ऐसा न विचार करै मैं तो मुक्त होजाऊंगा मेरे शत्रु मित्रादि और जगत् बना रहेगा उनके पीछेके लिये यत्न करना मूर्खता है स्वप्नके दृष्टांतकूं भले प्रकार विचारना चाहिये वेदांत शास्त्रवालों का जो कहना है वो तो अनुभवमें भी आताहै श्रुति स्मृति आदिप्रमाण करके सिद्ध होसक्ताहै और किसी शास्त्र पुराणादिका मत अनुभव में नहीं आता वेदों से विरुद्ध स्पष्ट प्रतीत होता है विचारो जैसे जीवका देहपात हुआ वा यमपुरीकूं वा स्वर्गकूं वा पितृलोक वैकुंठादिकूं गया वा उसका जन्म उसीसमय इसलोकमें होगया वा गरुड़ वाले जो कहते हैं या उसी की व्यवस्था हुई और जो बात कैसे अनुभवमें आवे कि सारी अवस्था में तो मूर्खताके काम करे अन्तकाल में काइयादि में मरनेसे नियम करके मुक्तहोजाता है जो ऐसे वाक्योंमें हठ

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करतेहैं तो मुक्तिके लिये ज्ञानादिमें क्यों माथा मारते हैं कहां तक लिखें हज़ारों ऐसी व्यवस्था हैं सब मतवाले अपने २ मतकूं युक्ति दे देकर सिद्ध करतेहैं परन्तु समस्त व्यवस्था कोई भले प्रकार नहीं कहते क्योंकि कोई स्वर्गकूं नित्य कोई अनित्य कहते हैं कोई । काश्यां मरणान्मुक्तिः । इसश्रुतिका अर्थ औरही प्रकार कहते हैं और यों भी भले प्रकार नहीं प्रतीत होता कि स्वर्ग वैकुंठ कैलाश ब्रह्मलोक गौलोकादिका कैसे भेदहै जैसे कि सातलोक भूर्भुवादिहैं उनमेंहीं उनका अन्तर्भाव है वा कुछ और प्रकार है अथवा जिसकूं ब्रह्मलोक कहते हैं उसीकूं वैकुण्ठ पितृलोकादि कहते हैं जैसे यो स्थितिकी व्यवस्था है इससे सिवाय सृष्टिकी व्यवस्थाहै क्योंकि जब प्रत्यक्ष की व्यवस्था नहीं बैठ सक्ती परोक्ष की कौन बैठा सके यद्यपि यो व्यवस्था न कहीं लिखीहो परन्तु मेरे श्रवण करनेमें नहीं आई जो किसीने सुनीहो प्रमाणपूर्वक अनुभवमें आवे तो हमकूंभी योहीं इष्टहै कि जैसे बने संशय दूरकरदेना चाहिये यथामति मैं कहताहूं किसी पक्षमें मेरी हठनहीं यो जो व्यवस्था तो मुझकूं शास्त्रमें प्रतीत होतीहै और लोकमें यमनादिवहिश्तादि कहतेहैं और इस बातमें तो किंचित्भी संदेह नहीं कि परमेश्वर सबका एकहै और योभी निश्चय होताहै यमनादि भी नरक स्वर्गादिके अधिकारीहैं यो नियम

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

नहीं कि सबनरकहीकूं जावें क्योंकि श्रीभगवान् कहतेहैं सत्वगुणी ऊपरके लोकोंकूं प्राप्तहोवेगा शम दम संतोष दया कोमलता क्षमा दानादि सत्वगुण की वृत्तिहै उनमें दीखतीहै इस हेतुसे निश्चय होताहै सत्वगुणकी तारतम्यतासे स्वर्गादिके अधिकारीहैं तात्पर्य्य इन सबके मतोंसे मेरी जानमें अविरोध व्यवस्था नहीं बैठसक्ती परंतु वेदान्तशास्त्र के मतसे बैठसक्तीहै सो सुनो वेदान्त शास्त्रवाले ऐसा कहतेहैं कियो जगत् अज्ञान करके कल्प रक्खा है स्वप्नवत् मिथ्याहै जैसे स्वप्नमें एक स्त्रीके साथ एकसमय १० पुरुष संगकरें दशोंका सच्चाहै विचारनेसे झूंठाहै तदुक्तम् ॥ चौपाई ॥ देखिय सुनिय गुणिय मनमाहीं । मोह मूल परममारथ नाहीं ॥ अर्थात् जगत्का कारण मूल अज्ञानहीहै परमार्थमें नहीं जैसे एकरज्जु पडीहै कोई उसकूं सर्प कोई मूत्रधारा कोई दण्ड कहतेहैं सबका कहना भ्रान्तिकाल में सच्चा परमार्थ में झूंठाहै ऐसे भ्रान्ति कालमें एक ब्रह्ममें कल्पित स्वर्ग वैकुण्ठादि सब सच्चे परमार्थसे झूठेहैं इस बातकी सिद्धिमें बहुत श्रुति स्मृति युक्ति दृष्टान्त इतिहासादि प्रमाण हैं वासिष्ठादि ग्रन्थोंमें अनेक इतिहास हैं वशिष्ठजी ने श्रीरामचन्द्रजीकूं अनेक इतिहास सुनाकर इसी बातकूं सिद्धकिया है कई पुरुषोंने तप करके यो बरमांगा कि हम सब इसी कालमें ब्रह्मा होजावें वे सब ब्रह्मा होगये और ये ब्रह्माजीभी बनेरहे और

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उनके ब्रह्माण्ड सबके पृथक् २ हुये और एकऋषिने तप-करके परमेश्वरसे बरमांगा हे परमेश्वर आपकी मायादेखूं परमेश्वरने कहा जो दृश्य पदार्थहैं सब माया है ऋषिकूं यों निश्चय रहा कि माया शब्दकरके कोई और पदार्थहै फिर परमेश्वर से प्रार्थना करी कि महाराज नहीं घटनेके योग्य यो पदार्थ उसके घटानेमें जो चतुर वो माया देखा चाहता हूं महाराजने बरदेदिया कि देखोगे एक दिन वे ऋषि हृषीकेश स्थानमें गंगाजीमें स्नान करतेथे गंगा जीके तीर आसन पूजादि रखदिये ऋषिने जलमें जो डुबकी मारी सो वे ऋषि अपना ऋषिपना तो भूलगये किसी धीवरकी लड़की होगये काल पाकर उसलड़कीका विवाह होगया ४० बर्षकी अवस्थामें कई लड़के व लड़की उसके उत्पन्नहुये और अपनेपति के संगमें जो आनन्द और संग करके दुःख और संसारके अनेक ताप और बालकों के खिलाने देखनेमें जो आनन्द और मल मूत्र धोनेमें जो दुःख सबकूं वे ऋषि स्त्री होकर अनुभव करते भये एकदिन वो स्त्री उसी जगह जहां ऋषिने डुबकी मारीथी जल भरनेके लिये गई घट कूं गंगाजी के तीरे रखकर गंगाजी में स्नान करने लगी जब नीचे कूं डुबकी मारी जबतो वो स्त्री थी जब ऊपरको मुख उघाड़ा तब अपने शरीरकूं देखे तो ऋषिका शरीर होगया और गंगा-जीके तीरे घटभीरक्खा दीखता है आसन पूजाभी रक्खी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हुई दीखती है यो भी स्मरण होताहै मैं अमुक ऋषि हूं नित्य यहां स्नान करनेके लिये आता हूं और योभी स्मरण होताहै मैं अमुक पुरुषकी स्त्रीहूं यहां जल भरने के लिये आई थी पहले घरकाभी व्यवहार स्मरण होताहै पिछले घरका भी व्यवहार स्मरण होताहैं दोनों घरोंमें प्रीतिहै स्पष्ट यो निश्चय नहीं होसक्ता है कि मैं ऋषि वा स्त्रीहूं उसकाल में उस स्त्री का पति अपने लड़के कूं गोद लिये हुये उसी जगह आया ऋषिने देखा कि निश्चय योही मेरा पतिहै फिर भलेप्रकार निश्चय होगया कि मैं गंगाजी में स्नान करनेसे ऋषि होगया उस पुरुष ने ऋषि से बूझा महाराज मेरी स्त्री यहां जल भरने आईथी घट उसका यो रक्खाहै वो कहां गई आपने भी उसकूं देखीहै जो उसका वाक्य सुनकर और बालक लड़केकूं देखकर मोह होगया ऋषि रोने लगा उस पुरुष ने प्रार्थना करके बूझा महाराज वो स्त्री गंगाजीमें डूबगई वा किसी सिंहादिने खालिया और तुम क्यों रोतेहो ऋषि कहते हैं वो स्त्री तो मैं हूं गंगाजी में स्नान करने से ऋषि होगया इस बातकी सिद्धिके लिये समस्त व्यवस्था पिछले घरकी और लड़के लड़कियोंके नामादि कहदिये उस पुरुष कूं निश्चय होगया कि बेसंदेह यो मेरी स्त्री है ऋषि उस पुरुष से कहते हैं इस लड़के कूं भले प्रकार पालना योंकरना वो करना उसने कहा कि तुम घरको चलो जो हुआ सो

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हुआ बालकों कूं खिलाते रहना और घरके काम करते रहना ऋषिजी उसके साथ हुये उसी समय वो परमेश्वर की माया दूर होगई यो व्यवस्था कोई एक पलमें बीती जितनी देर जल में डुबकी मारी जब ऋषिजीने ऊपरकूं शिर उभारा देखतेहैं वोही महीना वोही मुहूर्त्त न वो पुरुष न वो घट है ऋषिजी कूं निश्चय हुआ यो परमेश्वर की माया देखी स्कन्दपुराण में केदारखण्ड में यो कथा भलेप्रकार लिखरही है और वासिष्ठादि ग्रन्थों में ऐसी बहुत कथा हैं और बहुत प्राणियों कूं यो बात प्रत्यक्ष है कि स्वप्न तो घड़ी वा दोघड़ी रहा और राज्यादि १०० वर्ष किये भले प्रकार विचारो मायामें क्या नहीं बनसक्ता और यो जाग्रत् निश्चय स्वप्न की बराबर है क्योंकि जाग्रत् के पदार्थ दुःख सुख के हेतुहैं और अनित्य हैं ऐसेही स्वप्न के पदार्थ हैं और जैसे जाग्रत् में स्वप्न का निश्चयकर करते हैं ऐसे स्वप्न में भी स्वप्नका निश्चय किया करते हैं तात्पर्य्य यो जाग्रतमें जो प्रपंच दीखताहै समस्त स्वप्नकी बराबर है मायाहै इससे सिवाय और क्या माया होगी कि गर्भमें ठहरकर वीर्य्य चेष्टा करने लगताहै और बहनेवाला जो पदार्थ वीर्य्य है उसका कार्य कैसा कठिन होजाताहै फिर उसी वीर्य में देखो कैसे हाथ पैरादि बनजाते हैं फिर वोही ब्राह्मण साधु चोर जार कहाजाता है किसी काल में तो वो लाड़ करने के योग्य किसी काल में भोग करने के योग्य

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

किसी कालमें पूजन करने के योग्य होताहै किसी कालमें उसकूं देखकर प्राणी ग्लानि मानतेहैं किसीकालमें उसकेपुत्रादि चाहते हैं कि यो मरजावे तो सुन्दरहै किसी कालमें उन शरीरके स्पर्श करनेसे पातक लगताहै मकान वस्त्रादि अपवित्र होजातेहैं विचारो एक पदार्थमें कितनी २ अवस्था बीतती हैं जो एक रसपदार्थ नहीं सबकूं प्रकारका न दीखे सोईमायाहै चित्ततो बहुत चाहता कि ऐसी २ कथा लिखकर इस बातकूं करामलकवत् सिद्ध करदें परन्तु ग्रंथका विस्तार होताहै बुद्धिमान एक दृष्टान्तमें विचारलें अब विचारो कि वेदांत शास्त्रका मत कैसा सुन्दरहै परमेश्वर कूं तो परिपूर्ण नित्यमुक्त नित्यानंदादि रूप सिद्धि करना भक्ति ऐसी करनी अपना आप समस्त परमेश्वरमें झोक देना अपने अंशके नरखने से परमेश्वरकी पूर्णतासिद्ध होतीहै और सबके मतकूं अंगीकार करना सच्चा बताना यद्यपि स्वप्नके पदार्थ झूठे हैं परन्तु उस समयमें तो सच्चेहैं और सब मतवाले अपनेही मतकूं हठकरके सिद्ध करतेहैं औरों की असूया करतेहैं पूर्व मीमांसा वाले परमेश्वरकूं नहीं मानते जो भेद उपासना वाले मरमेश्वरकूं मानतेभी हैं तो परिच्छिन्न मानते हैं जब जीव ब्रह्मका भेद कहा स्पष्टप्रतीत होताहै परमेश्वर परिच्छिन्नहै और जो वे ऐसा कहैं कि परमेश्वर की मायामें क्या नहीं बन सक्ता तो परमेश्वर उनकूं आनन्दरक्खें क्योंकि योही हमारा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

सिद्धान्तहै जब भेदवादियोंका अपने मतमें ठिकाना नहीं पाता तब मायाकूं अंगीकार करतेहैं मायाकूं अंगीकार किया और वेदांत शास्त्र में प्रवेश हुवा क्योंकि वेदांत से सिवाय और कोई प्रमाण नहीं वेदान्तकूं त्याग करके वृथा और अनात्म शास्त्रोंमें माथा मारतेहैं १८ विद्याहैं मुक्तिके लिये मुख्य वेदान्त शास्त्र है १४ विद्यातो येहैं ऋग, यजुर, साम, अथर्वण ये चारवेद और ६ इनके अंग शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्यौतिष, छन्द, निरुक्त और मीमांसा शास्त्र, तर्कशास्त्र, पुराण, धर्मशास्त्र ये १४ विद्या हैं वेदान्त शास्त्र का मीमांसा में अन्तर्भाव है वैशेषिक शास्त्रका तर्कशास्त्र में और सांख्य पातांजल पाशुपत वैष्णव रामायण भारतादि का धर्मशास्त्रमें अन्तर्भावहै पुराण १८ हैं ब्राह्म पद्म स्कन्द मार्कण्डेय शैव वैष्णव गणेश सौर भगवत भविष्यत् ब्रह्मवैवर्त लिंग वामन वाराह कूर्म मत्स्य गरुड़ ब्रह्माण्ड और उपपुराण वाशिष्ठ लिंग नारसिंह नन्दीय नारदीय वामनीय हंस तत्वासार दौर्वास्य शिवधर्म कापिल वामन वरुण रेणुक वायवीय कालीय महेश्वर पाराशर मारीच भार्गवादि भेद से बहुत हैं मनु याज्ञवल्क्य विविष्णु यम आंगिरस वाशिष्ठ दक्ष संवर्त शातातप पाराशर गौतम शंखलखित हरित आपस्तंबी संस कात्यायन वात्स्यायन बृहस्पति देवल नारद पैठीनसी इनके और ओरों के भी किये हुये

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

बहुत धर्मशास्त्र हैं कोई १८ विद्या कहते हैं आयुर्वेद धनुर्वेद गांधर्ववेद अर्थशास्त्र ये चार मिलकर १८ होजाती हैं कामशास्त्र का आयुर्वेद में अन्तर्भाव है नीतिशास्त्र शिल्पशास्त्र अश्वशास्त्र गज शास्त्र सूपकारशास्त्र और ६४ कलाओं का अर्थशास्त्र में अन्तर्भाव है इस प्रकार १८ विद्या हैं वेदांत शास्त्र का यो सिद्धांत है कि यो संसार स्वप्नवत्है निष्प्रपंच ब्रह्म में भ्रान्ति करके नाना प्रकारकी कल्पना कर रक्खी है जैसे कोई बागड़भूमिमें दूरसे रेतीकूं देखकर कहै कि यह नदी है कोई कहता है इसमें गोड़े जल है कोई कमर जल कोई अगम्य जल कहता है तात्पर्य सबकी कल्पना झूठी है जो जगत् सच्चा होता तो बड़े बड़े बुद्धिमान मीमांसा सांख्य पातांजलि न्यायशास्त्रादिवालों का सबका एक मत होता सबका मत पृथक् २ होने से स्पष्ट प्रतीत होताहै कि निष्प्रपंच ब्रह्ममें भ्रान्तिसे जगत् कल्पितहै इस बात की सिद्धि में बहुत श्रुति स्मृति आदि प्रमाण हैं और अनुभव में भी आवैहै जैसी जैसी किसी की बुद्धिहै वैसा ही वैसा जगत्कूं कहते हैं और ईश्वर कूं भी यथा मति अंतर्यामी से लगाकर कुलदेवता माता शीतला पीपल वृक्षादि जड़ पदार्थ तक कहते हैं सो कुछ थोड़ा थोड़ा मत उनका भी प्रसंग से सुनो पूर्वमीमांसाशास्त्र वाले तो कहते हैं कर्म करने से मुक्तिहै स्वर्गादि प्राप्ति कूं मुक्ति कहते हैं

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कर्म फलदाता है और कोई ईश्वर नहीं स्वर्गादि नित्य है उनकी उत्पत्ति प्रलय नहीं कोई एक देशी उनके ईश्वर कूं भी मानते हैं सांख्यशास्त्र वाले यह कहतेहैं कि जैसे दूधका दधि परिणाम होजाताहै ऐसे प्रकृति जगत् रूप करके परिणाम होगईहै और पुरुष जलगत पद्म पत्रवत् असंगहै तात्पर्य परिणामवाद सांख्यशास्त्रवालों का है आरंभ वाद या शास्त्रवालोंका है न्यायशास्त्रवाले यों कहते हैं कि यो जगत् प्रलयके समय ईश्वर की इच्छा से परिणामरूप होजाता है अर्थात् पृथ्वी जल तेज वायु के परिमाणु होजाते हैं और सृष्टिके समय ईश्वर की इच्छा से परिमाणु मिलकर द्व्याणुक त्र्यणुक होकर फिर ऐसेही पृथ्वी आदि होजाते हैं और कहते हैं इस जगत् में सब सात पदार्थ हैं पृथ्वी जल तेज वायु आकाश काल दिक् आत्मा मन इन ९ पादार्थों कूं तो एकद्रव्य बोलतेहैं और रूप रस गन्ध स्पर्श संख्या परिमाणु पृथक् संयोग विभाग परत्व अपरत्व गुरुत्व द्रवत्व स्नेह शब्द बुद्धि सुख दुःख इच्छा द्वेष प्रयत्न धर्म अधर्म संस्कार इन २४ पदार्थों कूं एक गुण बोलते हैं ये गुण द्रव्यों में रहते हैं इसीप्रकार कर्म सामान्य विशेष समवाय अभाव ये पांच पदार्थ हैं और यावत् जगत् में पदार्थ हैं उनका इन्हीं सात पदार्थों में अन्तर्भाव है। जीव ईश्वर का भेद कहतेहैं जीव ईश्वर दोनों व्यापक

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हैं पृथिवी आदि चार द्रव्य कूं परमाणु रूप करके नित्य कहते हैं आकाशादि पांच द्रव्य कूं सदा नित्य कहते हैं। व्याकरण वाले कहते हैं शब्द ब्रह्म है सो नित्य है तात्पर्य वैयाकरण स्फोटवादी है पुराणवालों-का मत प्रसिद्ध है कोई विष्णु कोई शिव शक्ति गणेश सूर्यकूं ईश्वर कहते हैं अपने अपने मतक पृथक् पृथक् शास्त्र सात्वत तंत्र नारद पंचरात्र कवलार्णवादि बनार-क्खे हैं। तात्पय पुराणवालों का मत जैसा कि गरुड़वाले कहते हैं यो बहुत प्रसिद्धहै कहांतक लिखें बहुत मत हैं। सांख्य न्यायशास्त्रादि वालोंका मत उसी जगह निश्चय होसक्ता है। यहां तो एक नाममात्र उनका मत दिखा दि-या है और नास्तिक बौद्ध चारुवाक्यादि के १८ मत तो मुख्यहैं और भी बहुत भेद हैं वे ईश्वर वेद कूं नहीं मानते कोई शून्यवादी कोई कालवादी कोई स्वभाववादी कोई विज्ञानवादी हैं कोई कपाली मतके हैं नानामत नास्तिकों के हैं और कठिनहैं पुराण वालोंके मतसे उनका बहुत बारीक मत है ऐसे ऐसे मत न्याय वेदान्त के पूर्वपक्षोंमें बहुत लिख रहेहैं क्योंकि वेदान्त नैयायक उनके मतकूं खण्डन करसक्ते हैं। पुराणवालों से उनका मत खण्डन नहीं हो सक्ता उनकी युक्ति बहुत बारीक है और जो पाखण्ड अब कलियुग में प्रसिद्ध है उनका लिखना योग्य नहीं। ता-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

त्पर्य चारवर्ण चार आश्रम और अनुलोमज प्रतिलोमजादि जाति शास्त्रविहित हैं उनसे पृथक् जिसका वेद स्मृतियों में पता न लगे सब पाषण्ड मनुष्यों के रचे हुये हैं बुद्धिमान् को विचार लेना चाहिये अन्तर्यामी हिरण्यगर्भ विराट कूं वैदिक उपासनावाले ईश्वर कहते हैं। शिव विष्णु शक्ति सूर्य गणेशादि कूं पुराणवाले ईश्वर कहते हैं। भूम या भौपाल भूत पिशाच योगिनी श्रापा पीपल कुदालादि अनेक हैं उनकूं प्राकृत जीव ईश्वर कहते हैं। इसके पूजनेसे सृष्टिहोतीहै इस हेतुसे वे ईश्वर कहते हैं वेदोंमें और लोकमें अन्तर्य्यामी सूत्रात्मादि भेद करके विष्णु शिवादि भेद करके राम कृष्णादि भेद करके राधावल्लभ गोपालादि भेद करके हनूमान भैरवादि भेदकरके पाषाण मृत्तिकादि भेद करके हजारों भेद ईश्वरके प्रतीत होते हैं अब बुद्धिमान् विचारैं कौनसा ईश्वर सच्चाहै कौनसा मत सच्चाहै हम सत्य कहते हैं योंहीं विचारो कि यह सब माया है विवर्तवाद आभासवाद अजातवाद वेदांतशास्त्रवालों का है सोई सत्यहै और तत्त्वं पदों का जो एक लक्ष्यार्थ सच्चिदानन्द रूप है सोई परमेश्वर है इसीकूं ज्ञान कहते हैं योही ज्ञान मुक्ति का हेतु है॥

इति श्रीआनन्दाऽमृतवर्षिणीअष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अथ नवमोऽध्यायः ॥

मू० । देहादिके साथ तादात्म्य करके देहादि में जो अहंबुद्धि इसी कूं अज्ञान कहते हैं यो विचारो कि आत्मा तो शुद्ध १ परिपूर्ण २ सत्य ३ चैतन्य ४ आनन्द ५ अखण्ड ६ अज ७ अमर ८ एकरस ९ और भी बहुत विशेषणहैं और अशुद्ध देह १ परिछिन्न २ असत्य ३ जड़ ४ दुःखरूप ५ एकदेशी ६ जन्मवाला ७ नाशवाला ८ नित्य एकरस नहीं रहता ९ आत्माकी और देह की जो एकता देखते हैं इससे परे और क्या अज्ञान होगा इस अज्ञान का कारण आसुरी सम्पत् है सोई दिखलाते हैं । दम्भ दर्प अहंकार अपवित्र अभिमान् ईश्वरकूं न मानना क्रोध कठोरता मूर्खता धर्म्मकी प्रवृत्ति कूं न जानना अधर्म्म की निवृत्तिकूं न जानना असत्य बोलना जगत् कूं अनीश्वर कहना बड़ी बड़ी कामना मनमें रखनी जो कभी पूर्ण नहीं खोटे खोटे आग्रह करके सज्जनों से वर करना गुणवानों में दोष निकालना बुद्धि तमोगुणी होनी अथात् हमने कथा कही थी उससे हमारी क्षति हुई शास्त्रवालों कूं पाषण्डी कहना चिन्ता ऐसी ऐसी करनी जिसका प्रलयपर्यंत ठिकाना न लगे निश्चय यो रखना जो हम खा पहर जावेंगे स्त्रियोंके साथ आनन्द भोग जावेंगे यही मुख्य है देना नट बन्दरवालों कूं कभी किसी साधु ब्राह्म-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ण कूं जो देता तो दम्भ अहंकार करके और उनका ति-
रस्कार करके हजारों आशा रूपी फांसियोंमें बँधे रहना
अन्याय करके रुपयादि संचय करना यो मुझकूं प्राप्त है
जो प्राप्त करूंगा मेरी बराबर और कौन है धन हमारे ब-
हुत कुटुम्ब हमारे बहुत ऐसे २ अवगुण आसुरी सम्पत्-
वालों कूं श्री भगवान् ने कहे फिर कहा ऐसे पुरुषोंकी
मुक्ति तो दूर है मुक्ति का मार्ग भी उनकूं नहीं मिलेगा ये
पुरुष जगत् के भ्रष्ट करनेवाले हैं ऐसोंकूं हम पशुकी यो-
नियोंमें फेकेंगे वारम्वार सर्प विच्छू कीट शूकर कूकरा-
दि योनियोंमे जन्म लेते रहेंगे फिर कहा काम क्रोध लोभ
ये तीन नरकके द्वारे हैं आत्माकूं मूढ़ योनियोंमें प्राप्त क-
रनेवाले हैं उनकूं तो अवश्यही त्याग करना चाहिये प्रथम
उनकूं त्याग करके जो पीछे मुक्ति में प्रयत्न करेगा तब
सिद्ध होगा अर्जुनने श्रीकृष्ण महाराज से प्रश्न किया।
महाराज किस करके प्रेरा हुआ यो पुरुष पापकूं करता
है इच्छा नहीं भी करता परन्तु ऐसा प्रतीत होताहै जैसा
कोई बल करके पापमें जोड़ दे श्रीभगवान् ने कहा हे अ-
र्जुन जो तुमने बूझा पाप करने में क्या हेतु है सो सुनो
काम हेतुहै कामनाहोनेसे क्रोध होताहै रजोगुणसे इसकी
उत्पत्ति है रजोगुणके जय करने से इसका भी जय हो-
जाताहै अनन्त है भोजन जिसका बड़ा पापी मोक्षमार्ग
का वैरी काम कूं जानो जैसे धूपने अग्नि कूं मलने दर्प-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ण कूं जेरने गर्भकूं ढक रक्खा है ऐसे कामने विवेककूं ढक रक्खा है प्राकृतियों कूं तो यो काम भोग समय मित्र-सा प्रतीत होताहै ज्ञानी कूं तो भोगसमय भी दोषदृष्टि होने से वैरी दीखता है कितनाहीं भोग भोगो कभी तृप्ति न हो और दूनी अग्नि लगै इसकी जय का उपाय यों है यो काम इन्द्रिय मन बुद्धि में रहताहै क्योंकि विषय कूं देखा सुना संकल्प विकल्प किया निश्चय किया फिर कामका आविर्भाव होजाता है सो काम विवेक कूं आवर्ण करके आत्मा कूं मोहता है इसलिये यावत् इन्द्रिय का विषयके साथ सम्बन्ध नहीं हुआ प्रथम मोह से विषयमें दोषदृष्टि करके इन्द्रियों कूं रोकना फिर इन्द्रिय नहीं रुकसक्की देह इन्द्रिय मन बुद्धिसे परे जो आत्मा उसकूं आश्रय करके इस पापी काम कूं मारा जैसा यो परमेश्वर ने अर्जुन कूं उपदेश किया ऐसाही किसी गुरुने शिष्यकूं उपदेश किया कि हे शिष्य ये काम क्रोधादि प्रथम तो ज्ञानकी सिद्धिके लिये त्यागने योग्य हैं और ज्ञानहुये पीछे जीवन्मुक्ति के लिये त्यागने योग्यहैं शिष्य कहता है महाराज जीवन्मुक्ति मुझकूं मतहो देहपातके पीछेतो मैं विदेहमुक्त होजाऊंगा गुरू कहते हैं जो तुमने यहांके तुच्छ पदार्थों के भोगनेके लिये जीवन्मुक्ति का अंगीकार नहीं किया तो निश्चय होताहै स्वर्गादि पदार्थोंके भोगनेके लिये विदेहमुक्ति का भी अंगीकार नहीं करोगे

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इस हेतुसे प्रतीत होताहै तुम स्वर्गमात्र से आपकूं कृतार्थ जानोगे फिर निश्चय आपका जन्म होवेगा जो कभी तुमने अपने मनमें यो मानाहो कि स्वर्ग क्षय अतिशय साहस्य पतन इन तीन दोषों करके त्यागना योग्य है ॥

टी०–दिन दिन प्रति अपनाकिया हुआ पुण्यकाम होता रहताहै इसकूं तो क्षय दोष कहतेहैं और जैसे इस लोकमें चक्रवर्त्ती राजासे लगाकर कंगाल पर्यन्त तारतम्यताहै ऐसे स्वर्गमें विमान ऐश्वर्यादि की तारतम्यता है अपने से अधिक विमान वाले कूं देखकर मनमें अतिशय रहता यो दूसरो दोष है और जब समस्त पुण्य नाश होताहै तब उसके गलेकी माला सूख जाती है वो तो अपने आप वहांसे नीचे गिरना नहीं चाहता परन्तु वही स्त्री जिनके साथ विहार करताथा टांग पकड़ कर उलटा डाल दिया, करती हैं तीसरा यो साहस पतन दोषहै ॥

मू०–विचारो कि इन तुच्छ पदार्थों में जो अनेक दोषकरके युक्त हैं श्रीभगवान् भी कहतेहैं ये शब्द स्त्री आदि भोग निश्चय दुःख के कारण हैं उनके नाश अप्राप्ति में जो दुःखहैं सोतो प्रसिद्धहैं परन्तु प्राप्ति काल में भी स्पर्द्धा निन्दा भयादि दोषों करके युक्त दुःख रूप हैं फिर उनमें दोषदृष्टि करके क्यों नहीं त्यागते जब ये तुच्छ पदार्थ न त्यागे गये स्वर्गादि के पदार्थोंकूं कैसे त्यागोगे और यो तुम्हारा इच्छा पूर्वक आचरण अनिष्ट है इस बातमें श्री सुरेश्वराचार्य जीके वाक्य कूं प्रमाण देते हैं जानाहै ब्रह्म-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तत्त्व जिसने उसका जो इच्छापूर्वक आचरणहुआ तो कूकर पशु आदि और ज्ञानियों में क्या भेद हुआ जब धर्म कर्म शास्त्रकी आज्ञाकूं न मानकर इच्छा पूर्वक आचरण किया फिर अशुचि भोजन में किसप्रकार दोष प्रतीत होगा शिष्य कहताहै महाराज मुझकूं इतनेही मात्रसे अनिष्ट सूचन किया गुरु उपहास पूर्वक कहतेहैं ज्ञानसे प्रथम तो तुमकूं मनमात्रके दोषों करके क्लेश था अब समस्त लोगों की निन्दा सहनी अंगीकार करते हो आपके बोधकी क्या स्तुति होसके आपके बोधका जो वैभव है सो आश्चर्य है ऐसा बोध तो हमकूं भी नहीं हुआ यो बात लोकमें प्रसिद्धहै जो काले कम्बल पर और भी छीट-स्याही की पड़ जावे तो कुछनहीं प्रतीत होती परन्तु श्वेत चादरपर जो एक छीट भी और रंग की पड़जावे वो भी दूरसे चमकतीहै ऐसे ज्ञानीका जो किञ्चित् भी अन्यथा आचरण प्रतीत हो तोभी मूर्ख उस बातकूं बढ़ाकर कुछ कुछ बकने लगतेहैं यो तो उनकूं विचारही नहीं कि जो विधिनिषेध व्यवहारहै यो गुणों का कार्यहै द्रष्टा उनका असंग है और जो स्वसंवेद लक्षण ज्ञानीके हैं उनकूं मूर्ख क्या जानेंगे केवल जड़भरतादिके दृष्टान्त दे दे कर निन्दा करेंगे और जो उनकूं कहा बोधहै है कि ये तीनों गुण सदा विदेह मुक्त से प्रथम सबमें देवतासे लगाकर पशु पर्य्यन्त रहतेहैं किसीके थोड़े किसीके बहुत और यो सब देखना

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

सोना खाना पीना आदि अन्तःकरण का धर्महै अन्तः-
करण माया का कार्य होनेसे मिथ्या है कोई कोई तो ऐसा
जानतेहैं कि अन्तरंग साधन मुख्यहै बहुत तो बहिरंग
साधनोकूं प्रमाण देदेकर निन्दा स्तुति करते हैं शिष्य कह-
ताहै महाराज फिर क्या करना चाहिये गुरू कहते हैं
करना क्या चाहिये यो करना चाहिये जो शूकर कूकर
की बराबरता है इसकूं वमनवत् त्यागदो तुमतो विचार-
वान् हो जितने अन्तःकरण गत दोषहैं सबका संग त्याग
करके देवताकी बराबरता अंगीकार करो तुम इन मनुष्यों
करके देवताके सम पूजनेके योग्यहो काम क्रोधादि में
जो जो दोष दुःखहैं सब मोक्षशास्त्रमें प्रसिद्ध हैं वहांसे
तलाश करके दोषदृष्टि कर कर कामनादि का त्यागकरके
जीवन्मुक्तिं सम्पादन करो शिष्य कहताहै महाराज मैंने
अंगीकार किया कामादिका तो त्याग करूंगा परन्तु
मनोराज्य करने में तो मेरीक्षति नहीं गुरू कहते हैं मनो-
राज्य कूं समस्त दोषों का बीज होने से श्रीभगवान् ने क्षति
कहीहै उस अर्थकूं घटातेहैं बैठे बैठे मनोराज्य हुआ अमुक
पदार्थ में अर्थात् स्त्रियादि में यो गुणहै उस गुणको ध्यान
करते करते उस पदार्थ में सूक्ष्म संयोग होगया संग होने-
के पीछे फिर अधिक कामना होगई कामना रूपी जो अग्नि
उसकी शान्तिके लिये किसीके पासगये कहा हमकूं यो
वस्तु चाहती है उन्होंने न दी तब क्रोध उत्पन्न हुआ अब

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अपने दोषकूं तो विचारतेनहीं कि यो मेरे मनोराज्य ने अनर्थ किया है उसमें दोष निकालतेहैं कहते हैं देखो कैसे पापी अधर्मात्मा जीहैं साधु ब्राह्मण की आज्ञा नहीं करते क्या धन छाती पर धरके लेजावेंगे और अनेक कहने, न कहनेके योग्य शब्दों कूं कहते हैं और जो मनमें ताप होता है उसके तो आप साक्षीहैं फिर क्रोधसे सम्मोह अर्थात् कार्य अकार्य के विवेकका अभाव होगया फिर जो शास्त्र गुरूसे सुना सब भूल गये फिर चेतना रूपी बुद्धि का नाश होगया अर्थात् फिर भी होशियार होजावें यो बुद्धि न रही फिर अपने पुरुषार्थ से भ्रष्ट होगये विचारो मनोराज्य ने कैसा अनर्थ किया जो मनोराज्य होकर मनमें कामना आई थी तो उसमें प्रवर्त न होनाथा जो प्रवर्त भी हुये थे तो उनके न देने में जो अपमान हुआ था उसकूं सहजाना था उनकूं कुछ यद्वा तद्वा न कहनाथा जो उससमय इन्कार भी करदिया था अथवा दुर्वाक्य भी कहदिया था तो फिर सत्वगुणी वृत्तिमें काम आते जो कुछ वे दाता भी थे आगेकूं जो उनसे काम निकलता सो सब नष्टहोगया उनकूं तो क्रोधमें आकर यद्वा तद्वा कहबैठे फिर यो मुख न रहा कभी उनके समीपही जा बैठें और जो कभी उनके सत्वगुणी वृत्तिका विशेष उदयहो और बहुत दानकरें तो आप कूं कुछ नहीं मिलसक्ता सारी अवस्थाकूं तो उनसे मुरव्वत तोड़ बैठे और जिन्होंने सुना उन्होंने भी अपने आप-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

से मन फेर लिया वारम्वार विचारो मनोराज्यवड़ा अनर्थ करताहै इसलिये मनोराज्यकाभी जयकरो मनोराज्य कामनाका जय करनेसे ज्ञानद्वारामुक्त होजाताहै ॥

इति श्रीआनन्दाऽमृतवर्षिणीनवमोऽध्यायः ॥९॥

अथ दशमोऽध्यायः ॥

प्रथम थोड़ेसे साधन जीवन्मुक्तिके लिये लिखभी आयेहैं अब और भी सुनो जिनके अनुष्ठान करने से कामादि का जयहोजाता है साधक कूं तो अभ्यास करनेसे सिद्ध होते हैं सिद्धमें स्वभाव से रहते हैं जीवन्मुक्ति के ५ प्रयोजन हैं प्रथम उनकूं लिखते हैं ॥ ज्ञानरक्षा १ तप २ विस्मयादि का अभाव ३ दुःखों की निर्वृत्ति ४ सुखका आविर्भाव ५ अर्थ इनका योंहै जीवन्मुक्तिके अभ्यास करनेसे संशय विपर्य्ययका उदय नहीं होता शुक राघव अस्म दादिवत् अकृत उपासक कूं कदाचित् संशयादिके उदय होनेके भयसे अवश्य जीवन्मुक्तिं का अभ्यास करना योग्यहै श्रीभगवान् कहते हैं जिसके संशय हैं वो नाश होता है संशयादि का उदय न होना ज्ञान रक्षा १ चित्त की एकाग्रता तपहै सब धर्मों से श्रेष्ठहै ज्ञानी का तप लोकसंग्रहके अर्थ है श्रीभगवान् कहते हैं श्रेष्ठ पुरुष जो जो आचरण करता है सोई सो और भी आच-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

रण करते हैं संग्रह भले तीन प्रकार के हैं शिष्य १ भक्त २ तटस्थ ३ शिष्य तो गुरूके शास्त्र विहित आचरण कूं देख देख अधिक अधिक श्रद्धा होकर फिर उनके वाक्य में विश्वास करके मुक्त होता है १ और भक्त उनकी पूजादि करके वांछित फलकूं प्राप्त होता है ❀ विभूति की कामना वाला ज्ञानी का पूजन करे जिस जिस लोककी मनसे भावना करेगा और जो जो कामना चाहेगा उसी उस लोक और उसी उस कामना कूं प्राप्त होगा यो श्रुतिका अर्थ है. स्मृति का भी अर्थ सुनो जो एक ब्रह्म का जाननेवाला भोजन करे तो समस्त जगत् तृप्त होता है इसलिये जो कुछ देवे योग्य है सो ब्रह्मवित् कूं देना चाहिये तटस्थ दो प्रकार का है सन्मार्गी १ असन्मार्गी २ सन्मार्गी तो ज्ञानीके आचरणकूं देख देख अपने आप सदाचार करके मुक्त होगा, असन्मार्गी जीवन्मुक्ति की दृष्टि करके सारे पापोंसे मुक्त होगा यहां स्मृति प्रमाणहै जिसकी अनुभव पर्यंत बुद्धि तत्त्व के विषय प्रवर्तहै उसकी दृष्टिगोचर जो होगा अर्थात् कृपादृष्टि से जिसकूं वे देखेंगे वो सारे पापों से छूट जावेगा जो ज्ञानी कूं वाणी आदि करके दुःख देंगे मन करके द्वेष करैंगे वे ज्ञानीके पापकूं ग्रहण करैंगे यहां श्रुति प्रमाणहै सुहृद ज्ञानी के पुण्य द्वेषी ज्ञानी के पापकूं ग्रहण करेंगे यो श्रुतिका अर्थ है २ जिस समय ज्ञानी की बहिर्मुख वृत्तिहो उस समय उसकूं कोई

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

दुर्वाक्य बोले उसकूं सुनकर अथवा वृथा कोई मार भी दे चित्त की वृत्ति में रागद्वेष उदय न होना। इसका नाम विसम्वाद का अभाव है ३ संसारके व्यवहार में धनके सञ्चयादि में अनेक प्रकार के दुःख और मुक्तिके लिये श्रवणादि में अनेक दुःख हैं जीवन्मुक्तके सब दुःख नाश होजाते हैं यदि आत्माकूं जान्ता है कि मैं योहूं फिर किसकी इच्छा करता हुआ और किस कामनाके लिये शरीरकूं दुःख दे यों श्रुति का अर्थ है ४ समाधि करके दूर करदियेहैं चित्तके मल जिन्होंने और आत्मामें प्रवेश किया है चित्त जिन्होंने उनकूं जो सुख होताहै उसकूं वाणी नहीं कहसक्ती अपने अनुभव करके जाना जाताहै योश्रुतिका अर्थ है जैसे कोई १६ वर्षकी स्त्रीसे १०,११ वर्षकी लडकी बूझे कि तू सुसरालमें गई थी तुझकूं पतिके संगमें क्या आनन्द हुआ जैसे वो उस आनन्दकूं अनुभव करती हुई उनकूं कम समझ जान कर हँसकर चुपहो जातीहै ऐसे ज्ञानी ब्रह्मानन्द कूं अनुभव करते हुये औरों को कम समझ जानकर मौन रहतेहैं यो सुखाविर्भाव पांचवां प्रयोजन जीवन्मुक्ति का कहा ६ जीवन्मुक्तिके लिये जो अष्टांग योग कहते हैं उसकूं भी थोड़ासा सुनो योगके ८ अंगहैं यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान समाधि, अर्थ-इनका पातांजलशास्त्र में भले प्रकार निश्चय होसक्ता है यहां इसलिये नहीं लिखा कि इस योग

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करनेकी सम्प्रदाय लोप होरही है बिना गुरु वो योग सिद्ध नहीं होसक्ता जिसकूं ये योग करनाहो और कोई गुरु मिले तो वहांसे उनका अर्थ निश्चय करे परन्तु और प्रकार भी उनका अर्थ करतेहैं परिपक्क है चित्त जिनका वे इनका ऐसा अर्थ निश्चयकरें. देहादिमें विरक्ति यम १ स्वात्मतत्त्वमें अनुरक्ति नियम २ जैसे बैठे चलते लेटे सुखपूर्वक निरन्तर ब्रह्मका चिन्तवन होता रहै वही आसन है सुख पद्मादि आसन मन्दके लिये हैं ३ प्राणके चलते हुये अपने आप सदा यो जपतप होतारहै सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम् इसका जो अर्थ उसमें चित्तकूं स्थिर करना अर्थात् योही निश्चय रखना कि मैं ब्रह्महू ४ श्रोत्रादि इन्द्रियों कूं शब्दादि विषयोंसे रोकना प्रत्याहार५ बुद्धि कूं विषयोंसे विमुख करना धारणा ६ जहां जहां दृष्टि जावे वहीं वहीं ब्रह्म देखना दृष्टि कूं ब्रह्ममयी करके सब जगत् कूं ब्रह्ममय देखना सो दृष्टि श्रेष्ठ है अथवा दृष्टा दर्शन दृश्य इनका जहां विराम हो वहीं दृष्टि करनी नासाग्र दृष्टि बालकों के लिये है ७ मैं असंग सच्चिदानन्दपरिपूर्ण निरवयव एक रसहूं इस प्रकार चित्तका समाधान करना समाधि सो दो प्रकार की है सविकल्प १ निर्विकल्प २ त्रिपुटी सहित सविकल्प १ त्रिपुटी रहित निर्विकल्प २ निर्विकल्प समाधि करनेके समय चार विघ्न होते हैं लय १ निद्रा आजानी विक्षेप २ बारम्बार विषयों का अनुसन्धान होना कषाय ३ चित्त

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

का रागादिसे तो हट आना परन्तु स्वरूपमें नपहुँचना बीचकी वृत्तिका नाम कषाय है इसीकूं स्तब्धीभाव कहते हैं रसास्वाद ४ समाधि के आरम्भ समय सविकल्पका आनन्द होना कि मैं ऐसा आनन्दरूप परिपूर्णहूं यो चिन्तवन होना इस कूं रसास्वाद कहते हैं प्राणायाम आसन विषयोंमें दोष दृष्टयादि करके लय विक्षेपादि का जय करना चाहिये बसिष्ठ जी कहते हैं चित्तनाश करने के दो मार्ग हैं ज्ञान १ योग २ ये दोनोंमार्ग भगवान्नेभी गीताशास्त्रमें कहे हैं देहादि से परे आत्माकूं जानना अर्थात् असंग नित्य मुक्त अपने कूं निश्चय करना यो ज्ञान है और चित्तकी वृत्तिका निरोध करना इसका नाम योगहै. चित्तवृत्तिनिरोध का प्रकार चार प्रकार से वशिष्ठ जीने कहाहै सदा वेदान्त शास्त्र कूं पढ़ना सुनना विचारना १ जो ब्रह्मनिष्ठ साधु हैं उनका संग करना २ समस्त बासना का त्याग करना ३ अष्टांगयोग करना ४ प्रथम साधन उत्तम अधिकारीके लिये हैं जो वहां चित्तका निरोध न हो तो ये तीन उत्तरोत्तरहैं ❀ और जो चित्तके निरोधका प्रकार आत्मा संयम योग नाम करके श्रीभगवान्ने गीताशास्त्र में कहाहै उसकाभी अर्थ संक्षेप करके लिखते हैं-योगी मनकूं समाहित करे अकेला एकान्तमें बैठकर भलेप्रकार जीतेहैं वशकिये हैं मन इन्द्रियादि जिसने सो निराकांक्ष होकर शरीर यात्रा से सिवाय

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भोजन वस्त्रादि सामग्री कूं त्याग करके पवित्रदेश में शुद्ध भूमि में अपना आसन बिछाकर वो आसन बहुत नीचा ऊंचा न हो नीचे कुशाका आसन जापर उसके मृग चर्मादि फिर ऊपर वस्त्र बिछाकर मनकूं एकाग्र करके वशकरीहै चित्तइन्द्रियों की क्रिया जिसने सो उसपर बैठकर चित्तकी शांतिके लिये अभ्यास करै चित्तके एकाग्र करने में देहकी धारणा भी उपयोगी है उसका धारण प्रकार लिखते हैं-देहका जो मध्यभाग है उसकूं शिर और ग्रीवा कूं सम निश्चय करके नासाग्र दृष्टि होकर पूर्वादिकूं नहीं देखता हुआ दूर होगया है भय जिसका सो ब्रह्मचारी व्रतमें स्थित होकर आत्मा में है चित्त जिसका। आत्माही है परं पुरुषार्थ जिसके इस प्रकार युक्त होकर बैठे श्री भगवान् कहतेहैं जो इस प्रकार सदा मनकूं समाहित करताहुआ निरोध हुआहै अन्तःकरण जिसका सो पराशान्ति कूं प्राप्त होता है बहुत खानेवाले थोड़े खानेवाले कूं भी बहुत सोनेवाले बहुत जागने वालेकूं भी योग सिद्ध नहीं होता तात्पर्य्य शास्त्रविहित सोना जागना बोलना चलना भोजनादि क्रिया जो नियम करके करेगा उसकूं दुःखोंका नाश करनेवाला यो योग सिद्धहोता है किस कालमें योग सिद्ध होताहै इस अपेक्षा में कहतेहैं जिस कालमें वश किया हुआ चित्त आत्माही में निश्चय ठहरता है सब कामना जो इसलोक परलोक की हैं उनकी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इच्छा नहीं करता उस कालमें जानो कि योग सिद्ध हुआ जैसे दीवा बन्दमकान में एकरस प्रकाशता है हलता नहीं ऐसे जीताहै चित्त जिसने उसका चित्त प्रकाशता और निष्कंपता करके ठहरता है योग करके निरुद्ध हुआ चित्त जिस अवस्थामें संसारके विषयों से उपराम हो और जिस अवस्था में शुद्ध मन करके आत्माही को देखै आत्माही में तोष करै उस अवस्था में निरतिशयसुखकूं अनुभव करता है फिर उस अवस्था में स्थित हुआ तत्त्व-से नहीं चलता उस सुखकूं लाभ करके अपर जो ब्रह्म लो-कादि के सुख उनकूं अधिक नहीं जानता उस अवस्थामें स्थित हुआ बड़ेभारी दुःख करके भी नहीं विचलता दुः-ख का प्रथम किंचित् संयोग मात्र करके समस्त दुःख और विषय सम्बन्धी दुःखोंका वियोग है जिस में उसीकूं योग जानना सो योग आचार्य शास्त्रको निश्चय करके अ-वश्य अभ्यास करना चाहिये दुःख बुद्धि करके प्रयत्न की जो शिथिलता उसकूं त्यागना चाहिये टिट्टीके पुरुषार्थ कूं स्मरण करना योग है जैसे कोई यो संकल्प रखता है कि मैं कुशाके अग्र भाग में जितना जल ठहरता है कु-शासे इतनाही जल उठाकर समुद्रकूं सुखाऊंगा ऐसाही चि-त्तके निरोध करने का संकल्प रक्खे संकल्प से आविर्भा-व है जिनका ऐसे योग की प्रतिकूल जो कामना उनकूं स-बकूं त्याग करके और मन करके सब तरफ से इन्द्रिय ग्रा-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मकूं रोककर धैर्यकरकै शनैः शनैः अभ्यास क्रम करके उपराम हो सहसा एकबारही जो पूर्वावस्था में खाना सोना बोलना बैठनादि था उनका सबका त्यागन करे आत्मामें भले प्रकार मनकूं स्थित करके कुछ चिंतवन न करे पूर्वाभ्यास रजोगुण के वश में मन जो फिर चले तो प्रत्याहार करके अर्थात् जिस जिस विषयमें मन जावै वही वहींसे रोक कर मन कूं वश करे अर्थात् आत्माके विषय स्थिर करे इस प्रकार अभ्यास करते करते रजोगुण का क्षय होने से योगसुख प्राप्त होजाताहै शान्त होगयाहै रजोगुण जिसका इसी हेतुसे शान्त है मन जिसका प्राप्त हुआ है ब्रह्मतत्त्व जिसकूं उसकूं समाधिजन्य सुख अपने आप प्राप्त होताहै ऐसे सदा अभ्यास करते हुये योगी दूर होगये हैं पाप जिसके वो अनायास सुखपूर्वक ब्रह्मतत्त्वकूं प्राप्त होताहै फिर कृतार्थ होजाता है सो योगी सब भूतों में अपने आत्माकूं और सब भूतोंकूं अपने आत्माके विषय देखता है सारे सम दृष्टिहैं जिसके उनकूं श्री भगवान कहतेहैं कि जो मुझकूं सर्वत्र देखताहै उसकूं मैं सदा अपरोक्ष हूं वो मुझसे पृथक् नहीं जो मुझकूं इसप्रकार जान्ता है जैसे उसकी इच्छा हो कर्म त्यागकरके तो याज्ञवल्क्यवत् कर्म करता हुआ जनकवत् निषेधकर्म करताहुआ दत्तात्रेयवत् वर तो निश्चय मुक्तहोगा वो सर्व प्रकार मेरे विषय वर्तता है मुझसे पृथक्

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कुछ नहीं जान्ता जैसे आपकूं दुःख सुख होते हैं दूसरे के दुर्वाक्य बोलने में दुःख स्तुति करने में सुख ऐसेही अपनी उपमा करके सबकूं सम देखे किसी कूं दुःख न दे ऐसा पुरुष मझकूं परं सम्वत् है यो योगका लक्षण श्रीभगवान् ने अर्जुन कूं कहा अर्जुन इस योगकूं असम्भव मानते हुये बोलते भये हे परमेश्वर समताकरके अर्थात् मनकी दो गति लय विक्षेप उनकूं जयकरके केवल आत्माकार अवस्थान करके जो जो योग आपने कहा इस योग की दीर्घकाल जो स्थिति उसकूं नहीं देखता हूं किस हेतुसे मनकूं चंचल होनेसे हे कृष्णचन्द्र मन चंचलहै स्वभावहीसे चपलहै प्रमेथन शीलवाला इन्द्रियों कूं क्षोभकरने वाला बलवालहै विचारकरके भी जीतनेके योग्य नहीं प्रतीत होता विषय बासना करके अनादि का विषयों के साथ बँधाहुआ है इस हेतुसे दुर्भेदहै जैसे महाराज आकाशमें पवन चलताहै उसकूं घटादि में रोकना कठिनहै ऐसे मनका निग्रह कठिन जानताहूं वशिष्ठजी भी कहते हैं समुद्र का पान करजाना सुमेरुकूं उखाड़ लेना आदि जो बहुत कठिन प्रतीत होते हैं सो होजाते हैं पन्तु मनका निग्रह कठिनहै इस बातकूं अंगीकार करके मनके निग्रहका उपाय दिखाते हुये श्रीभगवान् बोलते भये हे अर्जुन जो तुमने कहा सो सत्यहै मन ऐसाही है परन्तु मनकी दो गतिहैं लय १ विक्षेप २ सो लयकूं तो अभ्यासकरके अर्थात्

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

आत्माकार प्रत्ययवृत्तिकरके जब करना और विक्षेप कूं वैराग्यकरकें अर्थात् विषयोंमें दोषदृष्टि करके जय करना इन दो उपायसे निश्चय मनका निग्रह होजाता है अन्तःकरण की वृत्तियों का सूक्ष्म होजाना इसीका नाम मनोनिग्रह है जिन्होंने देहादि नहीं वश किये हैं उनकूं तो यो योग कठिनहै जिन्होंने अभ्यास वैराग्य करके मनकूं वश करलिया है उनकूं यो योग इसी उपायकरके सहजहै अर्जुन बूझते हैं महाराज प्रथम तो कोई पुरुष इस योगमें श्रद्धा करके प्रवर्त हुआ परन्तु पीछे उसने भले प्रकार प्रयत्न न किया शिथिलाऽभ्यास रहा योग से चित्त चलकर विषय सें प्रवर्त होगया तात्पर्य मन्द वैराग्य होगया अथवा अभ्यास करते करते देहका बीचमें पात होगया वो पुरुष योगका फल जो ज्ञान उसकूं नहीं प्राप्त होकर किस गतिकूं प्राप्त होताहै क्योंकि कर्मोंके फलकूं परमेश्वर में अर्पण करने से अथवा कर्मोंका अनुष्ठान न करनेसे स्वर्गादिकी प्राप्ति जो फल सो तो उसकूं होंगे नहीं ज्ञानके न होनेसे मुक्त न होगा दोनों तरफ से भ्रष्ट हुआ महाराज कहीं छन्नाऽभ्रवत् यो वही में नाश होजाताहै हे परमेश्वर आप सर्वज्ञ हो इसका उत्तर देसक्त हो श्रीभगवान् बोलते भये हे अर्जुन इस लोकमें तो उसका जो दोनों मार्ग से भ्रष्ट होना है और परलोकमें जो नरक की प्राप्ति ये दोनों उसके नहीं क्योंकि अच्छा कर्म करनेवाला कोई भी दुर्गति कूं नहीं

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

प्राप्त होता और जो तो श्रद्धा करके योग में प्रवर्त होने से शुभकारी है फिर उसकी क्या गति होती है इस अपेक्षा में कहते हैं ब्रह्मलोकादि जो पुण्यकारी पुरुषों के भोग स्थान उनकूं प्राप्त होकर और बहुत दिन वहां के भले प्रकार भोग भोगकर जो इसलोक में पवित्र धनवाले पुरुष हैं उनके कुलमें वो योगभ्रष्ट जन्म लेताहै यह गति तो बड़े अभ्यास करनेवाले की है और जिसके ज्ञान होनेमें कुछ थोड़ीसी देररहीथी वह बुद्धिमान् ब्रह्मनिष्ठ योगियोंके कुलमें जन्म लेता है इस लोकमें मुक्तिका हेतु होनेसे ऐसा जन्म होना बड़ा दुर्लभ है वो जो पूर्वदेहमें ब्रह्मविषय बुद्धि करके योग करताथा फिर वो दोनों कुलमेंसे किसी कुलमें उसी योग कूं प्राप्त होजाता है फिर अधिक मुक्तिके लिये प्रयत्न करता है जो पराये वशभी हो तोभी पूर्वाभ्यास उसकूं विषयों से हटाकर ब्रह्मनिष्ठ कर देता है इस अर्थकूं कैमुतिकन्याय करके दृढ़ करते हैं ज्ञानकी इच्छावाला जो नर कुछ ज्ञान उसकूं प्राप्त नहीं हुआथा और पापके वशसे योगभ्रष्ट भी हुआ परन्तु फिर कालपाकर जिसकी योगति कि शब्दब्रह्मकूं उल्लंघ कर पर्तता है तात्पर्य वेदोंने प्रतिपादन किये जो स्वर्गादि फल उनका तिरस्कार करके उनसे अधिक फल जो ब्रह्मानन्द उसकूं अनुभव करता हुआ अपने आपकूं कृतकृत्य जान्ता है और जिन्होंने जन्म जन्ममें प्रयत्न करके दूर किये हैं पाप फिर पिछले

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जन्म में सिद्ध होकर वे उस गतिकूं अर्थात् ब्रह्मानन्दकूं प्राप्त होवें तो इसमें क्या कहना है ❁ अब और प्रकारके विषयों में दोषदृष्टि पूर्वक जीवन्मुक्ति के साधन सुनो संसारी लोक दो पदार्थोंकूं विशेष कहते हैं धन १ स्त्री २ प्रसिद्ध है कि चोरी, हिंसा, झूठ, दम्भ, काम, क्रोध, गर्व, मद, भेद, वैर, अविश्वास, स्पर्द्धा असूया, निन्दा, छलादि अनेक अनर्थ करके धन सिद्ध होता है और उसके कमानेमें परदेशमें रहना नीचोंकी टहल करनी पराधीन रहनादि और रक्षा करनेमें चोर राजादि का भय और व्यय करने में उसके कम होनेका दुःख और नाशहोने में जो दुःख उसका लिखना क्या चाहिये सब जानते हैं तात्पर्य जिसके आदि मध्य अन्तमें क्लेशही क्लेश है ऐसे दुःखों के कारण धनकूं धिक्कार है और जो प्राकृत जीव धनसे स्त्री मदिरा मांस द्यूत राग द्वेष अभिमान अहंकारादि ऐसे ऐसे यहां अनर्थ कर कर नरकका सामान करते हैं वो व्यवस्था कहांतक लिखें तात्पर्य जितने पाप हैं सब धनसे होते हैं यो धन पापी विद्वान् विचारवान् से भी अनर्थ करादेता है इस बातकी सिद्धिमें श्रुति स्मृति इतिहास युक्ति आदि बहुत प्रमाण हैं इसके त्यागका अधिक माहात्म्य शास्त्रमें लिखा है संसार समुद्र में कान्ता कांचन दो आवर्त हैं तीनों भवन इनमें भ्रम रहे हैं जो इन दोनोंसे विरक्त है वो मनुष्यादि नहीं परमेश्वर है स्त्रीकी स्तुति

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

सुनो चांडालके घरकी बराबर स्त्री हैं चांडालके घरमें मल मूत्र मांसादि पड़े रहते हैं द्वारेमें चिह्नके लिये अस्थि लगे रहते हैं अस्थिके खंभ चर्म्मकी रज्जुसे बँधे रहते हैं मकानके ऊपर चर्म पड़े रहते हैं जो उसके मकान की यो व्यवस्था है तो विचारो कि उस मकान की जो मोरी जहां कूं उस मकान का मल जाता है उसकी क्या उपमा देनी चाहिये विचारो स्त्री में ये सब वस्तु हैं वा नहीं स्त्रीका शरीर मकान बसू भीतर उसके मलमूत्रादिका होना प्रसिद्ध है मुख द्वारेवत् दांत अस्थिवत् पैर हस्तादि में अस्थि खम्भवत् नाड़ियोंसे बँधे हुये हैं शरीरके ऊपर चर्म है वा कुछ और है मोरीवत् उस शरीर में मलमूत्र त्याग करने के रस्ते हैं देखो उनकूं ऊपर से देख २ योजीव विना विचारके कैसा आनन्द होता है वृथा नरकवत् मोरी में डूबता है विचारो इससे सिवाय और क्या नरक होगा जो यो कहो कि हमकूं तो ये दोष नहीं फुरते बेशक हम भी जान्ते हैं कि ऐसे जीव जिनकूं विष्टा मुरदे के मांसमें दोष नहीं फुरते उनके लिये अनेक प्रयत्न करते हैं प्राप्ति के समय अपने कूं कृतकृत्य मानते हैं हमारी दृष्टिमें वेभी तो जीवहैं कुछ यो न समझना ऐसे शूकर कूकरही होते हैं मनुष्य भी बहुत ऐसे होते हैं अब विचारो मनुष्य शरीर में और पशु में क्या भेद हुआ हजारों जगह इन बातों का प्रसंग है इस प्रसंग कूं बहुत क्या लिखें बुद्धिमान् जीवन्मु-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

क्तिकी इच्छावाला इसी प्रकार सब पदार्थों में दोषदृष्टि कर कर उनका संग न करें और वोही चांडाल के घरका दृष्टान्त अपने शरीर में घटावे अर्थात् चाण्डाल भी उस घरमें यो अध्यास नहीं करता मैं घरहूं यो अध्यास है कि मेरा घरहै ऐसे अध्यास करने से तो वो चाण्डाल है और जो देह कूं ऐसा कहते हैं कि हम देह हैं अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री आदि वर्ण ब्रह्मचारी आदि आश्रमी पण्डित धनवाले हैं विचारो यो देह चाण्डाल के घर की बराबर है वा नहीं जब देह कूं यो कहा मैं देहहूं फिर वो कौन हुआ तात्पर्य ऐसे विचार देहमें से अध्यासका त्याग करे भ्रमसे और पदार्थमें प्रतीत होना इसकूं अध्यास कहते हैं बासना दो प्रकार की है शुद्ध १ मिलनी २ मुक्ति के लिये शास्त्र विहित अनुष्टान करने की और श्रवणादि की बासना शुद्धा १ भोगों की बासना और संसारमें प्रसिद्ध होनेकी बासना मिलना २ शुद्धबासना मुक्ति की हेतुहै मलिन बासना जन्मकी हेतु है देहयात्राके लिये भिक्षादि का जो प्रयत्न करना यो ज्ञानी का बासना बंधका हेतु नहीं श्रीभगवान् कहते हैं जिसमें शरीरका निर्वाह होवे वो कर्म करताहुआ पापकूं नहीं प्राप्तहोता ज्ञानीने शरीरयात्रासे सिवाय और बासना का त्याग करना तीन बासना बहुत दुःख करके त्यागी जाती हैं देह बासना १ लोकबासना २ शास्त्रबासना ३ शरीरकूं बहुत उपटने चंदनादि लगा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

लगाकर चिकना चांदना रखना और जो इच्छा रखनी कि यो शरीर सदा आरोग्य रहे यो देह बासना १ यो इच्छा रखनी कि, सब लोग मुझकूं भल्ल कहैं यो लोक बासना २ शास्त्र बासना दो प्रकार की हैं एक तो बहुत पढ़ने सुनने की इच्छा रखनी अर्थात् जाने इस शास्त्र में क्या क्याहै दूसरी जो कर्म जपादि करना शास्त्र विहित करना यों इच्छा रखनी यो शास्त्र बासना ३ इन करके युक्त जो पुरुष उसकूं ज्ञानी भी भले प्रकार नहीं होता तात्पर्य तीनों बासना किसीकी पूर्ण हुई न होंगी युक्तिसे विचार देखो वा गुरु शास्त्र से निश्चय करलो और ये जो दो प्रकार हैं एकतो मनोनाश, नाश बासना क्षय १ ओर दूसरा सदा वेदान्त का श्रवणादि करना२ इनका अविरोध सुनो जिसकूं संशय विपर्यय करके रहित भले प्रकार ज्ञान होगया है उसकूं तो मनोनाश बासना क्षय मुख्य है श्रवणादि गौण हैं और जिसकूं भले प्रकार ज्ञान नहीं हुआ संशय विपर्यय है उसकूं श्रवणादि मुख्य है मनोनाश बासना क्षय गौड़ है मनोनाश बासना क्षय के साधन सुनोवा शिष्टमें लिखा है जो जागता हुआ सुषुप्तिवत् रहै और जिसका जागना निर्वासन हो सो जीवन्मुक्तिहै श्रीभगवान् कहते हैं ज्ञानी सदा संतुष्टरहे मनादि कूं वश रक्खे मौनरहै मोनीके तात्पर्य कूं कोई नहीं पासक्ता बहुत लिखनेसे क्या प्रयोजन है मौनमें बहुत सुख और लाभ हैं और मैं असंग हूं योदृढ़ विश्वास रक्खे आत्मा में अर्पित

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करी है मन बुद्धि जिसने जिससे लोग उद्वेग न करें जो लोगोंसे उद्वेग न करे सोभक्त मुझकूं प्यारा है भक्त स्थित प्रज्ञ गुणातीत शब्द करके बहुत प्रकार श्रीभगवान् ने जीवन्मुक्त के लक्षण कहे हैं निस्पृही कोई नहीं आरम्भ जिसके किसीकूँ नमस्कार न करनी न लेनी न किसी की निन्दा स्तुति करनी समर्थ हुआ मिथ्या जानकर कर्मों का त्याग करदेना सर्पवत् बहुत पुरुषों से डरता रहे नरक वत् सन्मानसे डरता रहे मुरदेवत् स्त्रियों से डरता रहै किसी स्त्रीसे बात न करै पहली देखी हुई कूं स्मरण न करे स्त्रियों की कथा न कहै न सुनै काष्ठकी और लिखीहुई कूं भी न देखे उसकूं देवता ब्राह्मण कहते हैं तात्पर्य जीवन्मुक्त कहते हैं ऐसे ऐसे और भी वाक्य हैं हे युधिष्ठिर मुक्तिमें जाति कारण नहीं शम दमादि गुण कारण हैं ये शम दमादि गुण जो चाण्डालके भी होंगेतो देवता उसकूं ब्राह्मण कहते हैं जैसे स्वप्नमें प्रपंचप्रतीतहोताहै ऐसे जाग्रत प्रपञ्च का निश्चय करे जैसे बाजीगरके पदार्थों में वासना नहीं होती ऐसे इन पदार्थों कूं जानकर वासना न करै अपने कूं असंग जानने से और संसार की मिथ्याभाव निश्चय करने से शरीर कूं क्षणभंगुर जानने से वासना का उदय नहीं होता जिसका निर्वासन मन है उसकूं कर्म और कर्मके फल स्वर्गादि समाधान करना मनका जप करना आदि कुछ अपेक्षा नहीं आत्मानन्दसे

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पृथक् सब इन्द्रजालवत् हैं जब ऐसा निश्चय हुआ फिर मन की वासना कहां जावे जन्म जरा व्याधि मृत्युमें दुःखही दुःख है फिर भी कुछ एक बार नहीं बारम्बार दुःख उनका अनुसंधान करते हुये बासना का उदय नहीं होता कुसंगके त्यागनेसे भी बासना का उदय नहीं होता ज्ञानीने किसीका संग न करना योंहीं उनका मुक्तपदहै क्योंकि संगसे अशेष दोष होतेहैं योगरूढ़ भी कुसंग करनेसे प्रतीत होजाताहै थोड़ी सिद्धिवाला जो कुसंग से पतित होजावे तो इसमें क्या कहना है श्रीमद्भागवत में लिखाहै स्त्रीके संगी जो पुरुष हैं मुक्तिकी इच्छावाला उनका संग त्याग दे इन्द्रियों कूं शब्दादि विषयों में प्रवर्त्त न करे विचरे तो अकेला विचरे यदि एकान्त में बैठकर चित्तकूं अनन्त भगवान् में जोड़ै जो सर्वथा संग न त्यागा जावे तो साधुवों का संगकरे समस्त बासना का त्याग कर देना चाहिये जो सब न त्यागी जावें तो मुक्तिकी बासना रक्खे स्त्रियोंका और स्त्री संगी पुरुषों का संग विद्वान् दूर सेही त्याग दे एकान्त में बैठकर आलस्य कूं त्यागकरके स्वरूप का चिन्तवनकर स्त्रीका संग साक्षात् ऐसा अनर्थ नहीं करता जैसे स्त्रीके संगी का संग अनर्थ करता है दृष्टान्त यों है ज्येष्ठके महीनेमें दिनभर धूपमें चलाजावो वा खड़ारहो परन्तु मरतानहीं उस धूप करके तपाहुआ जो रत उसमें बैठे रहनेसे निश्चय होता है कि मरजावे इसी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

प्रकार सब पदार्थों की सन्निधि ऐसा अनर्थ नहीं करती जैसा भोगी का संग अनर्थ करता है महज्जनों का संग मुक्तिका हेतुहै कामियों का संग नरक का हेतु है ऐसे ऐसे साधन करके युक्त जीव अपरोक्ष ज्ञान द्वारा निश्चय मुक्त हो जाता है ॥

दश आदमी नदी उतरे, पार जाकर संख्या करी कि कोई हममें डूबा तो नहीं जिसने संख्या करी उसने आप कूं न गिना फिर यो निश्चय करलिया कि हम दश थे एक डूबगया व आपको भूलकर रोनेलगा उस समय कोई और पुरुष वहां आगया उसने बूझा कि तुम क्यों रोते हो कहा कि हम दश पारसे उतर थे अब नव हैं एक नदीमें डूबगया उसने जो अपने मनमें संख्या करी तो दश प्रत्यक्ष हैं उसने कहा तुम शोक मतकरो दशवां है यो वाक्य सुनकर उसको निश्चयहुआ कि दशवां डूबा-नहीं कहीं इसने देखाहै अपने आपकूं दशवां निश्चयनहीं किया इसकूं तो परोक्ष ज्ञान कहते हैं फिर उसने कहा कि तू मेरे सामने संख्या कर तब फिर उसने वैसेही आपसे पृथक् नवकूं गिना आपकूं न गिना उसने कहा दशवां तू है तब उसने जाना कि निःसंदेह दशवां मैं हूं इसकूं अ-परोक्ष ज्ञान कहते हैं ऐसेही जिसने गुरु शास्त्रसे सुनकर यो निश्चय कर रक्खाहै कि कोई ब्रह्महै आपकूं निश्चय नहीं किया कि मैं ब्रह्महूं इसकूं तो परोक्षज्ञान कहते हैं यो

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

परोक्षज्ञान गुरू शास्त्र पूर्वक जिसकूं है सो ज्ञान बुद्धि पूर्व्वक उसके किये हुये समस्त पापोंकूं अग्निवत् भस्म करदेताहै जब यो निश्चयहुआ कि मैंही ब्रह्महूं इसकूं अ-परोक्षज्ञान कहते हैं यो अपरोक्ष ज्ञान गुरू शास्त्र पूर्वक जिसकूं है सो ज्ञानमूलाज्ञान सहित समस्त संसारकूं दूर कर देताहै अर्थात् उसका जन्म नहीं होता वो निरतिशयानन्द कूं प्राप्त होताहै इस प्रकार परमात्मा का स्वरूप चिन्तवन करनेसे तृप्तितो नहीं होती परन्तु ग्रन्थके विस्तारके भयसे अलम् परिपूर्णम् परमेश्वरकूं वारम्वार नमस्कार है कैसे वे परमेश्वर हैं जिन्होंने गोपियों के वस्त्रहरेहैं ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र महाराज उनमें प्रथम दासोऽहम् यो मेरी बुद्धिथी सो महाराज ने अपने स्वभावके अनुसार मेरा भी दाकार हरलिया अब सोऽहम् यो शेषबुद्धि होगई वारम्वार महाराजकूं इस हेतु से नमस्कार करताहूं कि मुझकूं ऐसा निश्चय होताहै व्यतीत जन्मों में महाराज कूं कभी नम-स्कार नहीं किया क्योंकि जो ये जन्म हुआ और इस ज-न्म में जो नमस्कार किया तो आगेकूं जन्म नहीं होवेगा स्थूलादि शरीरोंके अभाव होने से नमस्कार कौन करेगा इसीलिये पिछले अपराधके क्षमाके लिये और आगेकूं नमस्कार न करना इस कृतघ्नता महादोष दूर होने के लि-ये इसी जन्ममें बारम्बार नमस्कार करताहूं श्रीकृष्णच

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

न्द्राय नमोनमः ३ जिसकी देवता में परमभक्ति और जैसी देवता में वैसेही गुरू में है उस आत्माकूं कहे हुये ये अर्थ प्रकाश होंगे अन्यकूं नहीं होंगे यो श्रुतिका अर्थहै श्रीमत्परम हंस परिब्राज स्वामी मलूक गिरि जी महाराज उनके चरण कमलों का पूजनेवाला अनुचर शिष्य आनन्दगिरि नामने यह ग्रन्थ आनन्दामृत वर्षिणी मुन्शी बंशीधर जी जिनके किञ्चित् गुण प्रथम अध्याय में लिखे हैं उनकूं सुखपूर्वक ब्रह्मतत्त्व जानने के लिये उनका श्रद्धा भक्ति पूर्वक प्रार्थना से अति सुगम अति पवित्र अति गुप्त सब विद्या धर्मोंमें श्रेष्ठ जो इसमें ब्रह्मतत्त्व सो सुख पूर्वक जानाजावे प्रत्यक्ष फलहै जिसमें सो आज द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वितीया रविवार सम्बत् उन्नीस सौ पन्द्रह १९१५ में विनिर्मित करके समाप्त किया पढ़ने सुनने वालोंकूं शान्तिहो शुभहो हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत् श्रीकृष्णचन्द्राय नमोनमः।

इति श्रीआनन्दाऽमृतवर्षिणीदशमोऽध्यायः॥ १०॥

समाप्तम्॥

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अपारसंसारसमुद्रमध्येनिमज्जतोमेशरणंकिमस्ति ॥ गु-
रोकृपालोकृपयावदैतद्विश्वेशपादाम्बुजदीर्घनौका १ बद्धो-
हिकोयोविषयानुरागः कोवाविमुक्तोविषयेविरक्तः ॥ को
वास्तिघोरोनरकःस्वदेहस्तृष्णाक्षयःस्वर्गपदंकिमस्ति २
संसारहृत्कस्तुनिजात्मबोधः कोमोक्षहेतुः प्रथितः सएव ॥
द्वारंकिमेकंनरकस्यनारीकास्वर्गदाप्राणभृतामहिंसा ३ शेते
सुखंकस्तुसमाधिनिष्ठो जागर्त्तिकोवासदसद्विवेकी ॥
केशत्रवःसन्तिनिजेंद्रियाणिकान्येवमित्राणिजितानितानि ४
कोवादरिद्रोहिविशालतृष्णःश्रीमांश्चकोयस्यसमस्ततोषः॥
जीवन्मृतः कस्तुनिरुद्यमोयः कावाऽमृतास्यात्सुखदाऽदुरा
शा५पाशोहिकोयोममताभिधानंसंमोहयत्येवसुरेवकास्त्री ॥
कोवामहांधोमदनातुरोयोमृत्युश्चकोवाऽपयशः स्वकीयम् ६
कोवागुरुर्योहिहितोपदेष्टाशिष्यस्तुकोयोगुरुभक्तएव ॥ को
दीर्घरोगोभवएवसाधोकिमौषधंतस्यविचारएव ७ किंभूष
णाद्भूषणमस्तिशीलंतीर्थंपरंकिंस्वमनोविशुद्धम् ॥ किमत्रहे
यंकनकञ्चकान्तासेव्यंसदाकिंगुरुवेदवाक्यम् ८ केहेतवो
ब्रह्मगतेस्तुसन्तिसत्सङ्गतिर्दानविचारतोषाः ॥ केसन्ति
सन्तोऽखिलवीतरागाअपास्तमोहाःशिवतत्त्वनिष्ठाः ९ को
वाज्वरःप्राणभृतांहिचिन्तामूर्खोऽस्तिकोयस्तुविवेकहीनः ॥
कार्याप्रियाकाशिवविष्णुभक्तिः किंजीवनंदोषविवर्जितंय
त् १० विद्याहिकाब्रह्मगतिप्रदायाबोधोऽस्तिकोयस्तुवि-
मुक्तिहेतुः ॥ कोलाभआत्मावगमोहियोवैजितंजगत्केनम

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

नोहियेन ११ शूरान्महाशूरतरोऽस्तिकोवामनोजबाणैर्व्य
थितोनयस्तु ॥ प्राज्ञोऽतिधीरश्चसमोऽस्तिकोवाप्राप्तोन
मोहंललनाकटाक्षैः १२ विषाद्विषंकिंविषयाःसमस्तादुः
खीसदाकोविषयानुरागी ॥ धन्योऽस्तिकोयस्तुपरोपका
रीकःपूजनीयोननुतत्त्वनिष्ठः १३ सर्वास्ववस्थास्वपिकिं
नकार्यंकिंवाविधेयंविदुषाप्रयत्नात् ॥ स्नेहंचपापंपठ-
नंचधर्मःसंसारमूलंहिकिमस्त्यविद्या १४ विज्ञान्महाविज्ञ-
तमोऽस्तिकोवानार्यापिशाच्यानचवंचितोयः ॥ काशृं
खलाप्राणभृताञ्चनारीदिव्यंव्रतंकिञ्चनिरस्तदैन्यम् १५ ज्ञा
तुंनशक्यंहिकिमास्तिशैवैर्योषिन्मनोयच्चरितंतदीयम् ॥ का
दुस्त्यजासर्वजनैर्दुराशाविद्याविहीनःपशुरास्तिकोवा १६
वासोनसंगः सहकैर्विधेयोमूर्खैश्चपापैश्चखलैश्चनीचैः ॥
मुमुक्षुणाकिंत्वरितंविधेयंसत्संगतिर्निर्ममतेषुभक्तिः १७
लघुत्वमूलंचकिमार्थितैवगुरुत्वबीजंवदयाचनंकिम् ॥ जा-
तोस्तिकोयस्यपुनर्नजन्मकोवामृतोयस्यपुनर्नमृत्युः १८
मूकस्तुकोवाबधिरश्चकोवा युक्तंनवक्तुंसमयेसमर्थः ॥ तथ्यं
सुपथ्यंनशृणोतिवाक्यंविश्वासपात्रंनाकिमस्तिनारी १९तत्त्वं
किमेकंशिवमाद्वितीयंकिमुत्तमंसच्चरितंवदन्ति ॥ किंकर्मकृ-
त्वानहिशोचनीयःकामारिकंसारिसमर्चनाख्यम् २०शत्रोर्म-
हाशत्रुतमोऽस्तिकोवाकामःसकोपानृतलोभतृष्णः ॥ नपू-
र्यतेकोविषयैःसएवकिंदुःखमूलंममताभिधानम् २१ किंम-
ण्डनंसाक्षरतामुखस्यसत्यंचकिंभूतहितंतदेव ॥ सत्यासुखं

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

किंस्त्रियमेवसम्यग्देयंपरंकिंत्वभयंसदैव २२ कस्यास्ति
नाशेमनसोहिमोक्षःक्वसर्वथानास्तिभयंविमुक्तौ ॥ शल्यंपरं
किंनिजमूर्खतैवकेकेह्युपास्यागुरवश्चवृद्धाः २३ उपस्थिते
प्राणहरेकृतांतेकिमाशुकार्यंसुधियाप्रयत्नात् ॥ वाक्काय-
चित्तैःसुखदंयमघ्नंमुरारिपादाम्बुजमेवचिंत्यम् २४ केदस्यवः
सन्तिकुवासनाख्याःकःशोभतेयःसदसिप्रविद्यः ॥ मातेवका
यासुखदासुविद्याकिमेधतेदानवशात्सुविद्या २५ कुतोहि
भीतिःसततंविधेयालोकापवादाद्भवकाननाच्च ॥ कोवास्ति
बंधुःपितरौचकौवाविपत्सहायौपरिपालकौयौ २६ बुद्ध्वा-
नबोद्धुंपरिशिष्यतेकिंशिवंप्रशांतंसुखबोधरूपम् ॥ ज्ञातेतुक-
स्मिन्विदितंजगत्स्यात्सर्वात्मकेब्रह्मणिपूर्णरूपे २७ किंदु-
र्लभंसद्गुरुरस्तिलोकेसत्संगतिर्ब्रह्मविचारणंच ॥ त्यागोहि
सर्वस्यशिवात्मबोधःकिंदुर्जयंसर्वजनैर्मनोजः २८ पशोः
पशुःकोनकरोतिधर्मंप्राधीतशास्त्रोपिनचात्मबोधः ॥ किंत-
द्विषंभातिसुधोपमंस्त्रीकेशत्रवोमित्रवदात्मजाद्याः २९ वि-
द्युच्चलंकिंधनयौवनायुर्दानंपरंकिंचसुपात्रदत्तम् ॥ कण्ठंगतै
रप्यसुभिर्नकार्य्यंकिंकिंविधेयंमलिनंशिवार्चा ३० किंकर्म
यत्प्रीतिकरंमुरारेःक्वास्थानकार्य्यासततंभवाब्धौ ॥ अहर्नि-
शंकिंपरिचिंतनीयंसंसारमिथ्यात्वशिवात्मतत्त्वम् ३१ कंठं-
गतावाश्रवणंगतावाप्रश्नोत्तराख्यामणिरत्नमाला ॥ तनो
तुमोदंविदुषांसुरम्यारमेशगौरीशकथेवसद्यः ॥ ३२ ॥

इत्यानन्दामृतवर्षिणी समाप्ता ॥

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पंचदशी ।

ऐहिकामुष्मिकव्रातासिद्ध्यैर्मुक्तैश्चासिद्धये ॥ बहुकृत्यंपुरा-
ण्याभूत्तत्सर्वमधुनाकृतम् ४० तदेतत्कृतकृत्यात्वंप्रतियोग
पुरस्सरम्॥अनुसंदधदेवायमेवंतृप्यातिनित्यशः ४१ दुःखिनो
ऽज्ञास्समरंन्तुकामंपुत्राद्यपेक्षया ॥ परमानन्दपूर्णोऽहंसंसरा-
मिकि मिच्छया४२अनुतिष्ठान्तिकर्माणिपरलोकयियासवः॥
सर्वलोकात्मकःकस्मादनुतिष्ठामिकिंकथम् ४३ वाचय-
न्त्वथशास्त्राणिवेदानध्यापयन्तुवा ॥ येत्राधिकारिणोमेतुना
धिकारोक्रियत्वतः ४४ निद्राभिक्षेस्नानशौचेनेच्छामिन-
करोमिच ॥ द्रष्टारश्चेत्कल्पयंतिकिंमेस्यादप्रकल्पनात्
४५ गुंजापुंजादिदह्येतनान्यारोपितवह्निना ॥ नान्यारो
पितसंसारधर्म्मानेवमहंभजे ४६ शृण्वंत्वज्ञाततत्वास्ते
जानन्कस्माच्छृणोम्यहम्॥मन्यन्तांसंशयापन्नानमन्येऽहम-
संशयः ४७ विपर्यस्तोनिदिध्यासेत्किंध्यानमविपर्यये॥दे-
हात्मत्वविपर्यासंनकदाचिद्भजाम्यहम् ४८अहंमनुष्यइत्या-
दिव्यवहारोविनाप्यमुम्॥विपर्यासंचिराभ्यस्तवासनातोऽव-
कल्पते४९प्रारब्धकर्म्मणिक्षीणेव्यवहारोनिवर्त्तते॥कर्म्माक्ष-
येत्व[illegible]नवशाम्येद्ध्यानसहस्रतः५०विरलत्वंव्यवहृतेरिष्टंचे
द्ध्यानमस्तुते॥अबाधिकाव्यवहृतिंपश्यन्ध्यायाम्यहंकुतः
५१ विक्षेपोनास्तियस्मान्मेनसमाधिस्ततोमम॥विक्षेपोवास
माधिर्वामनसःस्याद्विकारिणः५२ नित्यात्मभवरूपस्यकोमे

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वानुभवः पृथक् ॥ कृतंकृत्यंप्रापणीयंप्राप्तमित्येवनिश्चयः ५३
व्यवहारोलौकिकोवाशास्त्रीयोवान्यथापिवा ॥ ममकर्तुर
लेपस्ययथारब्धंप्रवर्त्तताम् ५४ अथवाकृतकृत्योऽपिलोका
नुग्रहकाम्यया ॥ शास्त्रीयेणैवमार्गेणवर्त्तेऽहंकाममक्षीतः ५५
देवार्चनस्नानशौचभिक्षादौवर्त्ततांवपुः ॥ तारंजपतुवाक्त-
द्वत्पठित्वाम्नायमस्तकम् ५६ विष्णुंध्यायतुधीर्यद्वाब्रह्मानन्दे
विलीयतां ॥ साक्ष्यहंकिंचिदप्यत्रनकुर्वेनापिकारये ५७ कृतकृ
त्यतयातृप्तः प्राप्तप्राप्यतयापुनः ॥ तृप्यन्नेवंस्वमनसामन्यते
सौनिरन्तरम् ५८ धन्योऽहंधन्योऽहंनित्यंस्वात्मानमंजसावे
द्मि ॥ धन्योऽहंधन्योऽहंब्रह्मानन्दोविभातिमेस्पष्टं ५९ धन्योऽहं
धन्योहंदुःखंसांसारिकंनवीक्ष्क्षेऽद्य ॥ धन्योऽहंधन्योऽहंस्वस्या
ज्ञानंपलायितंक्वापि ६० धन्योऽहंधन्योऽहंकर्त्तव्यंमेनविद्य
तेकिंचित् ॥ धन्योऽहंधन्योऽहंप्राप्तव्यंसर्वमद्यसम्पन्नम् ६१ ध
न्योऽहंधन्योऽहंतृप्तेर्मेकोपमाभवेल्लोके ॥ धन्योऽहंधन्योऽहंध
न्योधन्यः पुनः पुनर्धन्यः ६२ अहोपुण्यमहोपुण्यंफलितंफलि
तंदृढम् ॥ अस्यपुण्यस्यसम्पत्तेरहोवयमहोवयम् ६३ अहोशा
स्त्रमहोशास्त्रमहोगुरुरहोगुरुः ॥ अहोज्ञानमहोज्ञानमहोसुख
महोसुखम् ६४ ॥

इति ॥

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इति

आनन्दामृतवर्षिणी

समाप्ता ।

श्रीराम

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जाहिरात।

श्रीमद्भागवत संस्कृत तथा भाषा-टीका सहित।

श्रीवेदव्यासप्रणीत श्रीमद्भागवत सबसे कठिनहै और इसकाप्रचार भरतखण्डमें सबसे अधिक है यह ग्रंथ क्लिष्टताके कारण सर्व साधारण लोगोंको टीका होनेपर भी अच्छी रीतिसे समझना कठिन था कोई २ स्थलोंमें बड़े २ पण्डितोंकी भी बुद्धि चक्करमें पड़जाती थी, इसलिये विना संस्कृत पढ़े सर्व साधारण पण्डित व स्वल्प विद्याजाननेवाले भगवद्भक्तोंके लाभार्थ संस्कृत मूल व अतिप्रिय ब्रजभाषा टीकासहित जोकि हिन्दी भाषाओंमें शिरोमणि और माननीयहै उसी भाषामें टीका बनवाकर प्रथमावृत्ती छपायाथा वह बहुतही जल्दी हाथोंहाथ विकगई, फिर द्वितीयावृत्तिभी विकगई अब इस्की तृतीयावृत्ति द्वितीयावृत्तिकी अपेक्षा अच्छी तरह शुद्ध करवाके मोटे अक्षरमें छपायाहै और भक्ति ज्ञानमार्गी ५०अतीव मनोहर दृष्टांत दिये हैं. कागज विलायती बढ़िया लगायाहै, माहात्म्य षष्ठाध्यायी भाषाटीका सहित इस्के साथहीहै, प्रथमावृत्तिमें मूल्य १५ रुपया था इस आवृत्तिमें केवल १२बाराही रुपया रक्खा है.

पद्मपुराण समग्र सातो खंड ५५००० ग्रंथ छपतयार है मूल्य डाकव्यय सहित केवल १८ रु०मात्र अर्थात् १८ रु० भेजनेसे घर बैठे ग्रंथमिलजावेगा–

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण।

श्रीवाल्मीकीय रामायण२४०००ग्रंथका सरलसुबोध ब्रजभाषाटीका बनवाकर छापके तैयार किया है जिसके बीचमें मूल और नीचे ऊपर भाषाटीका है. और एक वाल्मीकीय रामायणका भाषावार्तिक छपा है. जिसमें

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जाहिरात ।

मूलके अनुसार यथावत् भाषा करके मूल श्लोकोंके अंक भी लगादिये गयेहैं. रामायणकी कथामूल पढ़नेवालोंको पुराण बांचनेमें बहुत उपयोगी होगा-जिन महाशयोंको लेना होवे २१ रु० भेजदेनेसे भाषाटीकासहित इस पुस्तकको अपने स्थानपर पासकेंगे और भाषावार्तिकको १० रु० भेजनेसे पासकेंगे. महाशयो! इस अलभ्य लाभको शीघ्रता करिये.

रघुवंश भाषाटीकासहित ।

पद योजना तात्पर्य्यार्थ सरलार्थ भाषानुवाद तथा गूढ़ाशयोंमें टिप्पणी समन्वितकर अतीव स्वच्छता पूर्वक छापाहै ऐसा विद्यार्थियों के उपयोगी ग्रंथ आजतक अन्यत्र नहीं छपा मूल्य केवल ३॥ रु. हैं।

भक्तमाल संस्कृत अत्युत्तम चारों युगोंके भक्तोंकी कथा हैं छपा तयार है.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना.

खेतवाड़ी न्यॉकरोड-मुम्बई.

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri